हिन्दी-शेक्सपियर

दूसरा भाग

Hindi Shakespeare
Vol. 2.

लेखक

गंगाप्रसाद, एम० ए०

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, प्रयाग

१९१२

[मूल्य ॥)

20

Soul of the age!
The applause, delight, the wonder of our stage!
My Shakespeare, rise! I will not lodge thee by
Chaucer or Spenser, or bid Beaumont lie
A little farther off, to make thee room:
Thou art a monument without a tomb,
And art alive still, while thy book doth live,
And we have wits to read, and praise to give.

—*Ben Jonson.*

विषयों की सूची

कवीन्द्रजीवन ।

हम पहले भाग में बतला चुके हैं कि शेक्सपियर की कविता का प्रचार संसार भर में किस प्रकार हो रहा है। यहाँ संक्षेपतः जीवन-वृत्तान्त लिखेंगे। यद्यपि आज तक बहुत बड़े बड़े ग्रन्थ इस विषय में अँगरेज़ी भाषा में लिखे जा चुके हैं परन्तु वे सब अटकल से लिखे गये हैं, और उनमें से एक भी ऐतिहासिक आधार पर नहीं रचा जा सका। इसका कारण क्या है? हमारे विचार में इस के दो कारण हैं, एक साधारण दूसरा विशेष ॥

साधारण कारण तो यह है कि किसी प्राचीन कवि का जीवन-चरित लिखना बहुत ही दुस्तर कार्य्य है। क्योंकि कवि जन्म-दिन से ही प्रसिद्ध नहीं होते। वे राजाओं, महाराजाओं की भाँति नहीं होते जिनकी उत्पत्ति से पूर्व ही उनके जीवन-चरित लिखने आरम्भ हो जाते हैं और उपाधियाँ नियत होने लगती हैं। कवि अपना जीवन-चरित स्वयं लिखते हैं और जो कुछ वे लिखते हैं वही उनका जीवन-चरित है। इसके अतिरिक्त किसी अन्य जीवन-चरित की न तो उनको इच्छा ही है और न आवश्यकता, उनके लेख न केवल उनके ही जीवन-चरित हैं किन्तु सहयोगी पुरुष तथा जातियों के भी। यही कारण है कि जब राजाओं का जीवन समाप्त होता है तब कवियों का आरम्भ होता है। अर्थात् कविजन भौतिक मृत्यु के साथ मर नहीं जाते किन्तु तत्पश्चात् उनका यश और भी फैलता है। कवियों के इस अमर जीवन

को लिखना आसान है। परन्तु उनके भौतिक जीवन का चरित लिखना, जबकि वह गुप्तरीति से वनस्पति के अङ्कुर के समान भूमि में उपज रहे थे, बहुत ही कठिन काम है।

विशेष कारण, जिसका सम्बन्ध केवल शेक्सपियर से ही है, यह है कि अन्य पुरुषों की भांति शेक्सपियर के विषय में सहकालीन लेख नहीं मिलते। शेक्सपियर से पुराने पुराने पुरुषों के जीवन-वृत्तान्त ज्यों के त्यों पाये जाते हैं। परन्तु बहुत अन्वेषण करने के पश्चात् भी आज तक शेक्सपियर के विषय में न तो कोई निज का पत्र-व्यवहार और न अन्य बातें पाई जा सकी हैं। अन्य कवि अपने काव्यों में कुछ न कुछ अपना वृत्तान्त संकेत मात्र छोड़ ही जाते हैं परन्तु शेक्सपियर "सब से कम अहङ्कारी मालूम होता है। जग-बीती लिखते हुए वह अपने को बिलकुल भूल गया है। और यदि कहीं अपने अमर यश के सम्बन्ध में लिखता है तो वह यह है कि

Not marble nor the gilded monuments
Of princes shall outlive this powerful rhyme.

अर्थात् महाराजाओं के पाषाणीय तथा स्वर्णीय स्मारक इस काव्य से अधिक जीवित नहीं रह सकते।

यदि हम उन बड़े बड़े ग्रन्थों में से जो शेक्सपियर का जीवन-चरित कहलाते हैं आटा और भूसी को अलग करना चाहें तो भूसी के आगे आटे का परिमाण बहुत ही न्यून मालूम होता है। स्टीविन्स (Steevens) साहब का कथन है कि शेक्सपियर का जीवन-चरित केवल इतना ही है, कि वह स्ट्रेटफोर्ड-औन-एवन में उत्पन्न हुआ, विवाह किया, बच्चे हुए, २३ या २४ वर्ष की आयु में लण्डन गया, नाटक रचे,

५० वर्ष की आयु में स्ट्रेटफोर्ड को गया और दो तीन वर्ष रह कर मर गया।

इनके अतिरिक्त शेक्सपियर के विषय में ऐतिहासिक सामग्री न मिलने का कारण यह भी है कि उसकी मृत्यु के ३ वर्ष पहले ग्लोब थियटर जिससे उसका सम्बन्ध था, जल गया और उसके गाँव में भी एक बार बड़ी आग लगी। थोड़े दिनों पीछे उसके परम मित्र बेन जौनसन का मकान भी जल गया और सम्भव है कि इस प्रकार यह सामग्री नष्ट हो गई हो। शेक्सपियर की मृत्यु के २६ वर्ष पीछे इँग्लैण्ड में एक घोर युद्ध हुआ और दोनों पक्ष के लोग नाटक तथा नाटक लिखने वालों से घृणा करते थे। इसलिए इस युद्ध ने भी बहुत से स्मारक चिह्नों को अवश्य नष्ट कर दिया होगा।

हमारे महाकवि के पिता जौन शेक्सपियर का निवास स्थान स्निटरफील्ड में था जहाँ उसके बाप दादे कई सौ वर्षों से रहते थे। सन् १५५१ ई० में जौन स्निटर फीलड से निकल कर एक निकटस्थ ग्राम में आ बसा जिसको स्टेटफोर्ड-ऑन-एवन कहते हैं। यह ग्राम एवन नदी के तीर एक रमणीय स्थान है। यहाँ उसने कुछ व्यापार करना शुरू किया जिसमें उसको बहुत कुछ सफलता प्राप्त हुई। सन् १५५७ ई० में इसकी शादी विल्मकोट ग्राम के एक किसान की लड़की मेरी आर्डेन से हुई अर्थात् हमारे महाकवि की पूज्यमाता का नाम मेरी था। विलियम शेक्सपियर (हमारे कवि। का पूरा नाम विलियम शेक्सपियर था) अपने मा बाप का सब से बड़ा पुत्र था। इस से बड़ी दो बहनें थीं। इनके अतिरिक्त दो बहनें और तीन भाई और थे।

विलियम शेक्सपियर की जन्म-तिथि के विषय में संदेह

है। हाँ इसका नाम-करण संस्कार २६ वीं अप्रेल सन् १५६४ ई० को हुआ था। इसी से बहुत से लोगों का विचार है कि जन्म २२ वीं या २३ वीं अप्रेल को हुआ होगा। कवि की क़बर पर लिखा हुआ है कि २३ वीं अप्रेल १६१६ ई० को मृत्यु समय वह ५३ वीं वर्ष में पड़ा था। इससे भी लोग अटकल लगाते हैं कि २३ वीं अप्रेल को ही जन्म हुआ होगा परन्तु यह कहना कि मृत्यु की तिथि वही थी जो जन्म की, बड़ी अनोखी बात है और इसका कोई प्रमाण नहीं। मालूम होता है कि लोगों ने २३ वीं अप्रेल इसलिए कल्पित करली कि सेंट जार्ज का त्योहार होने के कारण यह एक शुभ दिन समझा जाता है।

जिस वर्ष शेक्सपियर का जन्म हुआ समस्त इँग्लैण्ड में महामारी (प्लेग) फैली हुई थी और स्ट्रेटफोर्ड में इस का बहुत ज़ोर था। सैकड़ों आदमी इस के मारे मृत्यु को प्राप्त हो गये परन्तु ईश्वर को धन्यवाद है कि विलियम बच गया। उस समय इस छोटी सी लोहू की बूँद को कौन जानता था कि संसार में एक अपूर्व नाम पायेगी। वह मकान जिसमें इस महापुरुष ने जन्म लिया अब तक किसी न किसी अवस्था में उपस्थित है। अगर आप स्ट्रेटफोर्ड जाइए तो एक नीचे से पुराने कमरे में देशदेशान्तरों और भिन्न भिन्न जातियों के दर्शकों के नाम दीवारों पर अङ्कित मिलेंगे जिनके विषय में एक विद्वान् लिखता है कि लोगों ने इस महान कवि के लिए हार्दिक प्रेम और भक्ति दर्शाई है। शेक्सपियर के घर में बहुत कुछ परिवर्त्तन हो गया है। २०० वर्ष हुए एक मनुष्य इसमें रहा करता था फिर कुछ दिनों के लिए एक क़सार्इ ने यहाँ मांस की दूकान

करली। १९ वीं शताब्दी के मध्य में अँगरेज़ जाति की ओर से कवि के सन्मानार्थ इसको मोल लेलिया गया और जहां तक हो सका उसको पूर्ववत् दुरुस्त कर दिया गया है। अँगरेज़ लोग अपने महान् पुरुषों का इस प्रकार स्मरण करते हैं और यही कारण है कि वे उन्नति कर रहे हैं। हमारा हाल अन्यथा ही है। हमारे कालिदास का आज कोई चिह्न नहीं मिलता। यहाँ तक कि शेक्सपियर के सहयोगी सूर और तुलसीदास के विषय में भी हम को कुछ मालूम नहीं है।

शेक्सपियर के समय में स्ट्रेट-फोर्ड में एक उत्तम ग्रामर स्कूल (अर्थात् व्याकरण-शाला) था जो छटे हेनरी के समय में स्थापित हुआ था और जिसे चौथे एडवर्ड ने बहुत कुछ उन्नति दी थी। शेक्सपियर सात वर्ष की आयु में इसी शाला में पढ़ने बैठा और १६ वर्ष की अवस्था तक पढ़ता रहा। जहां तक अन्वेषण हो सका है यह मालूम होता है कि हमारा कवि अन्य किसी शाला या महाविद्यालय में नहीं पढ़ा। उसकी विद्या के विषय में मत-भेद है। कोई कहते हैं कि उसे अँगरेज़ी के सिवा और कुछ नहीं आता था परन्तु बहुत से उसे लैटिन, यूनानी और फ़रासीसी भाषाओं से भी अभिज्ञ बताते हैं। स्ट्रेट फोर्ड में उस समय ये सब भाषायें पढ़ाई जाती थीं और यद्यपि विलियम शेक्सपियर के किसी विशेष परीक्षा में उत्तीर्ण होने का पता नहीं लगता परन्तु उसके लेखों से पाया जाता है कि उसकी बुद्धि विलक्षण थी। ऐसी अवस्था में मालूम होता है कि आठ या नौ वर्ष पढ़कर उसको अवश्य कुछ न कुछ इन विद्याओं का भी ज्ञान हो गया। दूसरी सम्भावना इस बात की यह भी है कि उस समय में मातृभाषा की अपेक्षा लैटिन और यूनानी भाषाओं

पर अधिक बल दिया जाता था, फिर कोई कारण नहीं है कि शाला के अधिकारियों ने उसे इन भाषाओं के अध्ययन से क्षमा कर दिया हो। १२ वर्ष की अवस्था में उसने महारानी एलिज़बथ के दर्शन किये जब वे १५७५ में अपने मित्र लीसे-स्टर के महल कैनिलवर्थ को देखने गईं थीं। इस राज-यात्रा पर अवश्य बड़ा उत्सव हुआ होगा और शेक्सपियर अपने पिता के साथ कैनिलवर्थ में गया होगा जो वारिक-शायर में स्ट्रेटफोर्ड से थोड़ी सी दूरी पर है। इस महोत्सव का दृश्य कवि ने कई जगह खींचा है।

अभी विलियम शाला का विद्यार्थी ही था कि उस पर दरिद्रता ने कुछ आक्रमण किया। उसका बाप जो पहले एक प्रसिद्ध पुरुष था और जो अन्य पदवियों के अतिरिक्त चुंगी का कमिश्नर भी था, अब धनहीन हो गया। उसकी भूमि गिरो रखदी गई। ऋण बढ़ता गया और थोड़े दिनों में उसे चुंगी से भी अलग होना पड़ा। इस समय उसने अपने पुत्र विलियम को शाला से उठा लिया और घर के काम में सहायता लेने लगा। जौन शेक्सपियर भेड़ें पालता और ऊन का व्यवहार करता था। इस लिए बहुत बड़ी सम्भा-वना है कि इस कवि ने भी अपने पिता के साथ बालकपन में भारतवर्ष के महाकवि कालिदास के तुल्य गड़रिये का काम किया होगा।

सन् १५८२ ई० में उसने एक किसान की पुत्री एनीहाथवे से विवाह किया जो अपने पति से आठ वर्ष बड़ी थी। हम को यह नहीं मालूम कि एनी वास्तव में बहुत सुन्दरी थी या किसी अन्य कारण से कवि ने इतनी बड़ी स्त्री से विवाह किया, परन्तु शेक्सपियर की अर्धाङ्गिनी होने के कारण सब

वह सब के लिए स्मरणीय होगई। उसके तीन बच्चे हुए (१) सुसेना पुत्री (२) हेमनिट पुत्र (३) जूडिथ पुत्री। हेमनिट १५९६ ई० में ११ १/२ वर्ष का होकर मरगया परन्तु पुत्रियाँ शेक्सपियर की मृत्यु के पश्चात् भी कई वर्ष तक जीवित रहीं।

अपनी शादी के तीन चार वर्ष पीछे जब वह २२ वर्ष से अधिक नहीं था उसे स्ट्रेफोर्ड छोड़ना पड़ा और यहीं से उसकी कविता का आरम्भ होता है। यह एक विलक्षण बात है कि ऐसे महान् जीवन का आरम्भ इस दुर्घटना से हो। यह कथा इस प्रकार से है :—

उस समय इँग्लेण्ड में बड़े जङ्गल न होने के कारण बड़े बड़े लोग बाग़ रक्खा करते थे जिनमें उनके शिकार करने के लिए ख़रगोश पले रहते थे और सिवा उन बाग़ों अर्थात् कृत्रिम वनों के स्वामियों के अन्य किसी को शिकार करने का अधिकार न था। कहते हैं कि शेक्सपियर कुसंगति में पड़ गया और रात्रि के समय ख़रगोश को सर टोमस लूसी के बाग़ में से पकड़ने लगा। सरलूसी स्ट्रेटफोर्ड के निकट रहता था। कहा जाता है कि लूसी ने शेक्सपियर को ख़र-गोश चुराने के अपराध में कई बार पिटवाया क्योंकि उस समय इस प्रकार के अपराधियों को ख़रगोश का तिगुना मूल्य और तीन महीने की क़ैद का दण्ड दिया जाता था। लूसी या लाऊस अँगरेज़ी भाषा में जूँ का भी नाम है। इसलिए इस कष्ट से तंग आकर शेक्सपियर ने लूसी के अपमानार्थ एक गीत लिखा जिसमें सरटोमस लूसी के लिए 'जूँ' का अनादर-सूचक शब्द प्रयुक्त किया है। इससे पहले शेक्सपियर ने कभी कविता नहीं की

थी । इस महान् कवि की यह सब से पहली कविता थी। लूसी इस धृष्टता पर विलियम से इतना अप्रसन्न हो गया कि इस बेचारे को अपनी जान बचा कर लण्डन भाग जाना पड़ा।

हमारा कवि अब तक बहुत ही साधारण पुरुष था जिसे गाँव के चार छः पुरुषों के सिवा कोई जानता भी न था। लूसी ने जब उसे अनेक प्रकार के दण्ड दिये और अधिक दण्ड देने के लिए धमकाया उस समय बिचारा लूसी क्या जानता था कि जिस महान् पुरुष को वह आज इस प्रकार पीड़ा दे रहा है वही पुरुष किसी दिन समस्त इँग्लिश जाति पर अपना राज बिठा देगा। शेक्सपियर वस्तुतः आज इँग्लिश-जाति पर राज कर रहा है और जब तक अँगरेज़ी भाषा का प्रचार रहेगा शेक्सपियर के गुण अवश्य गाये जाते रहेंगे। सच पूछो तो शेक्सपियर के साथ लूसी का नाम भी अमर हो गया।

जब शेक्सपियर लण्डन पहुँचा तब वहाँ पर उसका कोई भी मित्र न था जो उसे ऐसे अवसर पर सहायता देता। उस समय इस नगर में दो बड़ी बड़ी थियट्रीकल (नाटक खेलने वाली) कम्पनियाँ अर्थात् सभायें थीं। जिन में लोग नाटक देखने के प्रयोजन से घोड़ों पर सवार हो कर आया करते थे। कुछ दिनों शेक्सपियर इन दर्शकों के घोड़े थाम लिया करता था।

होते होते उसे इन कम्पनियों के नीच भृत्यों में जगह मिल गई परन्तु उस समय तक भी किसी को यह आशा न थी कि शेक्सपियर गुदड़ी का लाल है।

कुछ दिनों पीछे वह नाटकों में खेलने लगा। यहाँ उसकी प्रतिष्ठा बहुत होने लगी। सन् १५९२ ई० में चेटिल ने लिखा था

कि शेक्सपियर नाट्य करने में बहुत दक्ष है। इसी प्रकार अन्य लोगों ने भी उसकी बहुत ही प्रशंसा की है।

जब शेक्सपियर ने रङ्गभूमि में काम करना आरम्भ किया उस समय अच्छे अच्छे नाटक उपस्थित न थे। इसलिए पहले पहल शेक्सपियर दूसरों के नाटकों को काट छाँट कर ठीक कर लिया करता था। फिर वह स्वयं भी काव्य रचने लगा। सन् १५९३ ई० में उसका पहला ग्रन्थ Venus and Adonis (वेनिस ग्रैार अडोनिस) निकला जिसमें उसने एक प्राचीन प्रेम कहानी को छन्दोबद्ध किया था। इसके पश्चात् Lucrece लुक्रेसी की बारी आई, ये दोनों ग्रन्थ यद्यपि प्रारम्भिक दशा के हैं ग्रैार इसलिए सर्वोपरि उत्तम नहीं परन्तु कवि की योग्यता की झलक इनमें भी स्पष्टतया दिखाई पड़ती है।

इन ग्रन्थों के रचने पर कवि की प्रशंसा इतनी हुई कि थोड़े दिनों में उसका सम्बन्ध कई नाटक-सभाओं से हो गया। उसने इन में हिस्से ले लिये ग्रैार कुछ सम्पत्ति भी इकट्ठी करली।

इस समय से अन्त तक वह नाटक लिखने में लगा रहा। हर साल दो एक नाटक लिख लिये जाते थे। १५८६ से १५९६ तक वह प्रायः लण्डन में ही रहता था। सन् १५९६ में वह अपने गाँव स्ट्रेटफोर्ड को चला गया। शेक्सपियर की अनुपस्थिति में उसकी स्त्री ग्रैार उसका पिता जौन, दोनों बड़े कष्ट से जीवन व्यतीत करते रहे। कहते हैं कि उसकी स्त्री ने अपने गड़रिये विटिङ्गटन से १५९५ में चालीस शिलिङ्ग उधार लिये थे जो सन् १६०१ तक अदा नहीं हो सके।

विटिङ्गटन उसी साल मर गया। इसलिए कवि ने यह ऋण चुका कर स्ट्रेटफोर्ड के दरिद्रों में बाँट दिया।

जब शेक्सपियर घर आया तब बहुत कुछ धन अपने साथ लाया था जिस से उसके घर की दशा सुधर गई। सन् १५९७ ई० में उसने ६० पौंड देकर विलियम अण्डरहिल से एक मकान मोल लिया जो उस गाँव में सब से बड़ा मकान था। इसके साथ दो खेत और बाग़ भी थे। इस समय उसने लण्डन में रहना छोड़ दिया था यद्यपि कभी कभी वहाँ जाया करता था।

सन् १६११ के पीछे वह लण्डन में बहुत कम गया और अपने ही गाँव में रहा किया। सन् १६१६, २३ अप्रेल मङ्गलवार को उसने प्राण त्याग दिये। स्ट्रेटफोर्ड चर्च में उसकी समाधि (क़बर) बनी हुई है जिस पर यह छन्द अङ्कित किया गया था।

Good frend for Jesus' sake forbeare
To digg the dust enclosed here.
Blest be y men y spares the stones,
And curst be he who moves my bones.

विलियम नामी एक और मनुष्य लिखता है कि यह छन्द शवालय के अनुचरों के लिए बनाया गया था। इसकी ग्रामीणता का प्रयोजन यही है कि वे मूर्ख लोग भी समझ सकें। शाप देने का तात्पर्य यह है कि उस समय यह अनुचर मुर्दों की हड्डियों को खोद कर एक जगह से दूसरी जगह गाड़ देते थे। शेक्सपियर ने इसके रोकने के लिए ही यह शाप दे दिया है।

शेक्सपियर की स्त्री का देहान्त ६ अगस्त सन् १६२३ को हुआ और पति के पास ही उसकी भी समाधि बनाई गई।

उसका लड़का हैमनिट तो दस ग्यारह बरस का हो कर ही मर गया था। उसकी बड़ी बेटी सुसेना ने जौनहाल से विवाह किया और १६४९ ई० में ६६ बरस की हो कर मर गई। सुसेना की लड़की एलीज़ेबिथ के दो विवाह हुए थे। पहला टामसनाश के साथ और दूसरा जान बरनार्ड के साथ। परन्तु किसी से भी सन्तान नहीं हुई और वह १६७० में मर गई। शेक्सपियर के वंश की यह अन्तिम स्त्री थी।

शेक्सपियर की छोटी बेटी जूडिथ ने टामस किनी से विवाह किया। उसके कई बच्चे हुए परन्तु वे सब उसी के सामने मर गये। जूडिथ की मृत्यु १६६२ में हुई।

नोट-इस भाग में हमने कवि का जीवन संक्षेप से दिया है। उसकी कविता का इसमें कुछ भी वर्णन नहीं है। दूसरे भागों में उसके विचार, काव्य, तथा अन्य बातों की आलोचना की जायगी और वास्तविक जीवन वही होगा।

लेखक।

हिन्दी-शेक्सपियर ।

दूसरा भाग ।

सिंबेलिन ।

(CYMBELINE)

स समय रोम में आगस्टस सीज़र का राज था उस समय ब्रतानिया अर्थात् इङ्गलैण्ड में सिंबेलिन नामक राजा राज करता था।

सिंबेलिन की पहिली धर्मपत्नी तीन बालकों को छोड़ थोड़ी सी ही अवस्था में परलोक सिधार गई। इन बालकों में सबसे बड़ी एक कन्या थी जिसका नाम इमोजिन था। छोटे दो लड़के थे। एक तीन वर्ष का था और दूसरा अभी दूध ही पीता था कि अकस्मात् दुर्भाग्यवश इन दोनों पुत्रों को कोई महल में से चुरा ले गया। यद्यपि बहुत कुछ ढूँढा-ढाँढ़ी और खोज की गई परन्तु हतभागी सिंबेलिन को कुछ भी पता न चला कि उन दो बच्चों का क्या हुआ, कौन ले गया और कहाँ ले गया।

पहिली भार्य्या की मृत्यु के पश्चात् सिंबेलिन ने पुनर्विवाह किया। परन्तु यह दूसरी स्त्री कठोर, दुष्ट और कपटी थी। और इमोजिन को जो सिंबेलिन की पहिली स्त्री से उत्पन्न हुई थी बहुत दुःख दिया करती थी।

रानी पहले तो बहुत दिनों तक इमोजिन से बहुत ही घृणा करती रही और अपनी निज माता के प्राणान्त पर उसे अपनी विमाता के हाथ से कुछ भी सुख नहीं मिला। परन्तु अब इस दुष्ट विमाता के मन में और एक शूल उत्पन्न होने लगा। इस रानी का भी सिंबेलिन से पुनर्विवाह हुआ था। इस के पहले पति से इस के एक लड़का था जिस का नाम क्लोटन था। रानी चाहती थी कि सिंबेलिन के मरने पर देश का राज उसके पुत्र क्लोटन को मिले। जब तक इमोजिन जीवित थी नियमानुसार राज की अधिकारिणी वही थी क्योंकि उसके दोनों भाइयों के पाये जाने की कुछ भी सम्भावना नहीं रही थी। क्लोटन सिंबेलिन का पुत्र न होने से उस की गद्दी पर नहीं बैठ सकता था। अतएव इस दुष्ट रानी ने यह विचार किया कि जिस तरह होसके इमोजिन का विवाह क्लोटन से करना चाहिए। जिससे क्लोटन को राज मिल सके। इस प्रकार का सम्बन्ध पाश्चात्य देशों में निन्दनीय नहीं समझा जाता। अर्थात् एक स्त्री की सन्तान उसके दूसरे पति की अन्य स्त्री की सन्तान से विवाह कर सकती है, परन्तु यह विचार इसलिए दुष्ट था कि इमोजिन क्लोटन से विवाह करना नहीं चाहती थी। इमोजिन रूपवती, विदुषी और शीलवती थी परन्तु क्लोटन मूर्ख, कुरूप और असभ्य था। इसलिए इमोजिन का प्रेम इस पुरुष पर नहीं जम सका। और उसने अपने पिता तथा विमाता के विचार अपने विरुद्ध देख कर उनकी बिना आज्ञा और बिना सूचना के गुप्त रीति से एक अन्य पुरुष के साथ विवाह कर लिया।

इस पुरुष अर्थात् इमोजिन के सुयोग्य पति का नाम पोस्टूमस था। यह मनुष्य बड़ा विद्वान्, सभ्य और सुशील

था। उस समय कोई मनुष्य विद्या तथा बुद्धि में उसकी बराबरी नहीं कर सकता था। पोस्टूमस वीर पुरुष भी था। उसका पिता सिंबेलिन की सेना में एक पद पर नियत था और अपने देश तथा राज के लिए एक युद्ध में हत हुआ था।

इसकी माता भी इसके उत्पन्न होने पर ही मर गई थी। इसीलिए इसको पोस्टूमस कहते थे। क्योंकि अँग्रेज़ी भाषा में पोस्टूमस उस पुत्र को कहते हैं जो अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् उत्पन्न हुआ हो।

सिंबेलिन ने इस बालक को अनाथ और होनहार देख कर अपनी शरण में ले लिया। राजा के दरबार में रहकर उसने बहुत शीघ्र राज-सभा के योग्य गुण ग्रहण कर लिए। इस प्रकार यह भद्रपुरुष प्रत्येक अंश में रूपवती इमोजिन के लिए एक योग्य वर था।

इमोजिन का पोस्टूमस से स्वाभाविक प्रेम था। ये दोनों बचपन से साथ रहते, एक ही गुरु से पढ़ते और परस्पर स्नेह रखते थे। बड़े होने पर यह प्रीति इतनी बढ़ गई कि आयुपर्य्यन्त के लिए उन दोनों में सम्बन्ध हो गया।

हताश-रानी को थोड़े दिनों में जब इस विवाह का पता लगा तब उसने झट यह समस्त कथा सिंबेलिन को कह सुनाई।

सिंबेलिन इसके सुनते ही आगबबूला हो गया। उसके क्रोध की कोई सीमा न रही। वह कहने लगा कि प्रथम तो उसकी पुत्री ने बिना आज्ञा के विवाह करके उसका अनादर किया। द्वितीय उसने अपने राज-वंश को छोड़कर एक ऐसे साधारण मनुष्य से विवाह कर लिया जो उसकी प्रजा गिना

जाता था । अपने से नीच मनुष्य के साथ विवाह करके उस ने कुल का नाम डुबो दिया। इन्हीं कारणों से सिंबेलिन अपनी पुत्री से क्रुद्ध हो गया और पोस्टूमस को आयुपर्य्यन्त के लिए देश से निकाल दिया ।

पोस्टूमस को राजा के इस अकस्मात् और अकथनीय दगड देने पर बड़ा शोक हुआ परन्तु राजहठ, बालहठ और त्रियाहठ बड़े प्रबल होते हैं। राजा की आज्ञा के सम्मुख किसी की क्या चल सकती है ? बिचारा दुखी पोस्टूमस रानी की कुटिलता का ग्रास बन कर इँग्लैण्ड से चल दिया और मन में ठान लिया कि किसी प्रकार रोम में जाकर जीवन व्यतीत करे ।

इमोजिन की विमाता ने उसे छलने की एक नई विधि निकाली अर्थात् उसने पहले तो इमोजिन का मन अपनी ओर प्रेम दिखाकर आकर्षित करना चाहा और फिर उसका विचार यह था कि जब पोस्टूमस रोम चला जावे तब इमोजिन को यह निश्चय कराया जावे कि पोस्टूमस के साथ जो तुम्हारा विवाह हुआ है वह नियमानुसार नहीं हुआ। क्योंकि तुमने अपने पिता की आज्ञा नहीं ली । इसलिए यह विवाह धर्म-विरुद्ध होने से त्यक्तव्य है ।ऐसा दिखलाकर वह यह चाहती थी कि एकबार और इमोजिन का क्लोटन से सम्बन्ध कराने का यत्न करे ।

ऐसे कपटयुक्त प्रेम का पहला प्रकाश जो उसने इमोजिन के साथ किया यह था कि जब पोस्टूमस रोम को चलने लगा तब इमोजिन की विमाता ने गुप्त रीति से ऐसा प्रबन्ध कर दिया कि चलते समय इमोजिन और पोस्टूमस की भेंट हो जाय ।

इमोजिन और पोस्टूमस दोनों स्त्री-पुरुष बड़े प्रेम के साथ एक दूसरे से पृथक् हुए। इमोजिन ने अपनी उँगुली में से अँगूठी उतार कर दी जिसको कि उसने अपनी मृत माता से पाया था। पोस्टूमस न अपनी प्राण प्यारी से यह स्मृति चिह्न लेकर शपथ खाई कि मरण पर्य्यन्त कभी इस प्यारी अँगूठी को पृथक् न करूँगा। इसके साथ ही उसने अपनी कलाई से एक कङ्कण लेकर अपनी प्रियतमा के हाथ में पहना दिया और प्रार्थना की कि मेरी स्मृति के लिए कभी इसे अपने हाथ से न उतारना। इस प्रकार नित्य प्रेम के लिए अनेकानेक शपथ खाकर यह प्रेमीजन एक दूसरे से पृथक् हुए।

इसके पश्चात् इमोजिन अपने पिता के दरबार में बड़े कष्ट के साथ रहने लगी और पोस्टूमस रोम पहुँच गया।

एक समय ऐसा हुआ कि जब पोस्टूमस रोम नगर में अपने मित्रों के साथ वार्तालाप कर रहा था उस समूह में भिन्न भिन्न देशों और भिन्न भिन्न जातियों के लोग थे। बात चीत का विषय स्त्रियाँ थी। और वे लोग अपनी अपनी जाति की स्त्रियों की बुद्धिमत्ता, पातिव्रत तथा सौन्दर्य की प्रशंसा कर रहे थे और अपनी अपनी स्त्रियों को अन्य स्त्री जाति से सर्वोपरि बतलाते थे। पोस्टूमस का अपनी प्रिया इमोजिन से इतना दृढ़ प्रेम था कि उसका चित्र सर्वदा उसके चित्त में विराजमान रहता था और उसे इमोजिन के सम्मुख कोई स्त्री भली न प्रतीत होती थी। इसलिए वह कहने लगा कि मेरी भार्य्या अति बुद्धिमती, सर्वगुणसम्पन्ना और पतिव्रता है।

इन युवकों में से एक जिसका नाम आइकीमो था इस बात को सुनकर चिढ़ गया कि इँग्लैण्ड की स्त्रियाँ उसकी सजातीय रोमन स्त्रियों से अधिक गुणवती हैं और पोस्टू-

मस की बात पर शंका करने लगा। पोस्टूमस को अपनी पत्नी की दृढ़ता पर इतना विश्वास था कि वह आइकीमो की इस शंका पर बड़ा उत्तेजित हो गया। अन्त में यह निश्चय हुआ कि आइकीमो यदि पोस्टूमस की बात नहीं मानता तो वह स्वयं इँग्लैण्ड जाकर इमोजिन से प्रीति प्रकट करे। यदि इमोजिन उससे प्रीति करने लगे और पोस्टूमसदत्त कंकण को उसे देदे तो पोस्टूमस उसे अँगूठी देदेगा जो उसे इमोजिन से मिली थी और यदि आइकीमो अपने प्रयत्न में सफल न हो तो वह बहुत सा रुपया पोस्टूमस को दे दे। पोस्टूमस को अपनी स्त्री पर इतना विश्वास था कि उसे ऐसी भारी शर्त बाँधते हुए कुछ भी सँकोच नहीं हुआ।

आइकीमो इँग्लैण्ड आया और सिंबेलिन के दरबार में रहने लगा। वहाँ इसने अपने को पोस्टूमस का मित्र प्रकट किया और इमोजिन से भी उसका परिचय हो गया। इमोजिन इसको अपने प्रिय पति का मित्र जान कर इसका बड़ा मान और सत्कार किया करती थी और इसकी सेवा के योग्य जो कार्य्य होता कर देती। उसे कदापि यह ज्ञात न था कि आइकीमो के मन में दुष्ट विचार काम कर रहे हैं। थोड़े दिनों में जब आइकीमो इमोजिन को भली प्रकार जान गया तब उसने उससे अपना अनुराग प्रकट करना आरम्भ किया। परन्तु साध्वी इमोजिन वस्तुतः एक पतिपूजिका स्त्री थी। उसे स्वप्न में भी अपने पति के सिवाय किसी अन्य पुरुष से प्रीति नहीं हो सकती थी। जब उसने देखा कि आइकीमो अपने मित्र की स्त्री के लिए दुष्ट विचार रखता है तब उसे उससे महती घृणा होगई। और इसके पश्चात् उसने आइकीमो से बातचीत तक करना त्याग दिया।

जब आईकीमो किसी प्रकार इमोजिन को फुसलाने में कृतकार्य्य न हुआ तब अब उसने एक कपट करने का इरादा किया! और इमोजिन के नौकरों को लालच देकर एक सन्दूक में बैठ कर इमोजिन के सोने के कमरे में चला गया! जब इमोजिन सोगई तब वह सन्दूक से निकला और उसके कमरे में जितनी चीज़ें थीं उन सब को सूक्ष्म रीति से अवलोकन करके एक एक को कागज़ पर लिख लिया। और इमोजिन की गर्दन पर एक तिल था उसको भी देख लिया! तत्पश्चात् चुपके से इमोजिन के हाथ से कंकण खोल कर फिर सन्दूक में बैठ गया।

दूसरे दिन कंकण को लेकर आइकीमो अपने देश को चल दिया और रोम में आकर पोस्टूमस से कहने लगा कि देखो इमोजिन ने अपने अनुराग को प्रकट करके मुझे यह कंकण भेंट किया है और एक रात मैं उसके शयनागार में भी रहा हूँ।

पोस्टूमस—आइकीमो, मैं तुम्हारा विश्वास नहीं करता।

आइकीमो—वाह वाह! 'विश्वास क्यों नहीं करते। इतने सबूत देख कर भी विश्वास नहीं करते? देखो मैं तुमको यह बात सिद्ध किये देता हूँ।

पोस्टू०—अच्छा देखें तुम्हारे पास इस बात का क्या प्रमाण है।

आइकीमो—अच्छा लो, एक प्रमाण नहीं अनेक प्रमाण। सच्ची बात में प्रमाणों की क्या कमी? सुनो, मैंने इमोजिन के कमरे में देखा कि अनेक प्रकार के उत्तम चित्र लिखे हुए हैं। एक चित्रपट तो बहुत ही उत्तम और अद्वितीय था। उस पर उस समय का दृश्य बना हुआ है

जब मानिनी क्लियोपाटरा * अपने प्रिय एएटनी के साथ भेंट कर रही थी । यह चित्र ऐसा अपूर्व था कि शायद ही कभी किसी चित्रकार ने ऐसा चित्र बनाया हो ।

पोस्टूम०—यह बात तो ठीक है परन्तु इससे तुम्हारा वहाँ पर जाना सिद्ध नहीं होता । इस बात को तो तुम किसी से सुन सकते हो । सब जानते हैं कि इमोजिन के कमरे में ऐसा चित्रपट है । इससे क्या होता है ।

आइकीमो—अच्छा और लीजिये । घबराइए नहीं । देखिए कमरे की दक्षिण दिशा में धूआँ निकलने के लिए एक चिमनी (धुआँकश) है या नहीं ।

पोस्टू०—हाँ है ।

आइकीमो—अच्छा उस पर एक अतिसुन्दर चित्र स्नान करती हुई डाइना † देवी का बना है कि नहीं ? ऐसा सुन्दर चित्र मैंने तो कहीं नहीं देखा ।

पोस्टूम०—हाँ, यह बात भी बहुत मशहूर है । तुमने इसको भी किसीसे सुन लिया होगा । यह बात कौन मुश्किल है ।

---

* क्लियोपाटरा मिश्र देश की महारानी बड़ी ही रूपवती थी । एएटनी रोम का एक वीर सेनापति था । जब एएटनी ने मिश्र पर चढ़ाई की तब क्लियोपाटरा सब शृङ्गार करके उससे मिलने चली आई । एएटनी उसपर ऐसा आसक्त होगया की फिर वहीं रहने लगा और रोम को वापिस न गया ।

† यूनानियों की देवमाला में डाइना एक देवी का नाम था ।

आइकीमो—अच्छा और सही ! कमरे में अँगीठी के कुलावे बड़े ही विचित्र हैं । उनपर कामदेव की दो मूर्त्तियाँ बहुत ही सुन्दरता से बनी हुई हैं और उनके अर्धोन्मीलित नेत्र कैसे सुहावने मालूम होते हैं । वे मूर्त्तियाँ पैर पर पैर दिये खड़ी हुई हैं ।

पोस्टूमस—क्या यह बात तुम नहीं सुन सकते । भला यह कौन प्रत्यक्ष प्रमाण है ?

आइकीमो (जेब से कङ्कण निकाल कर) पोस्टूमस, तुम मुझसे अधिक क्यों कहलवाते हो । मैं तो चाहता था कि सम्पूर्ण वृत्तान्त न कह कर तुम्हारा चित्त न दुखाऊँ । मगर आप मुझे मिथ्यावादी ही कह रहे हैं । अच्छा लो, तैयार हो । देखो घबराना नहीं, लो यह कङ्कण देखो । क्या यह तुम्हारा ही कङ्कण है ?

पोस्टूमस कङ्कण को देख कर काँप उठा आँखों में आँसू भर आये । कण्ठ से आवाज़ न निकली । यह देख कर कि उसकी प्रियतमा ने जिसे वह ऐसी दृढ़-प्रेमा जानता था उसका स्मारक चिह्न दूसरे को दे दिया । उसका हृदय विदीर्ण हो गया ।

आइकीमो—सुनो सुनो, यह कङ्कण प्रेमभरी इमोजिन ने मुझे अपने ही हाथ से दिया है । आहा ! कैसे सुन्दर हाथ थे जिनकी शोभा इस कङ्कण को देते समय और भी अधिक बढ़ गई थी । प्रतीत होता है कि मानों अभी प्यारी इमोजिन मेरे सम्मुख खड़ी है । किस प्रकार हँस हँस कर वह मुझसे बातचीत करती थी । क्यों पोस्टूमस, इमोजिन की गर्दन पर तिल भी तो है ?

अब पोस्टूमस के क्रोध का कुछ ठिकाना न रहा। वह कोपाग्नि में जलने लगा। दुष्ट आइकीमो का छल उसकी समझ में नहीं आया। वह इमोजिन को बुरा भला कहने लगा और प्रतिज्ञानुसार अपनी उँगुली में से इमोजिन प्रदत्त अँगूठी उतार कर आइकीमो को देदी।

पोस्टूमस का क्रोध यहीं संमाप्त नहीं हुआ किन्तु उसने इमोजिन के प्राण लेने की ठान ली। हाय! छली कपटी लोग किस प्रकार सच्चे प्रेमीजनों में भी वैर का बीज बो देते हैं। इस काम के पूरा करने के लिए पोस्टूमस ने पिसानियो नामी एक भद्र पुरुष को जो इमोजिन का सेवक था और जिसको पोस्टूमस से बड़ी प्रीति थी एक पत्र लिखा, जिसमें उसने इमोजिन के अनुचित व्यवहार का सब हाल प्रमाणों सहित लिख दिया और प्रार्थना की कि तुम इस कुटिल स्त्री को वेल्स देश के मिलफ़ोर्ड बन्दर पर किसी प्रकार ले जाकर मार डालो। एक दूसरा पत्र उसने इमोजिन को लिखा जिसका विषय यह था कि तुमको बिना देखे हुए बहुत दिन व्यतीत हो चुके, इस लिए मैं तुमको देखने के लिए आरहा हूँ। क्योंकि इँग्लैण्ड में आने की मुझे आज्ञा नहीं है इस लिए तुम मिल्फोर्ड बन्दर पर चली आओ। वहाँ हम तुम दोनों एक दूसरे से भेंट कर सकेंगे।

बिचारी भोलीभाली इमोजिन अपने पति को प्राणों से भी अधिक प्यार करती थी। उसे क्या मालूम था कि मेरे पति के दुग्धरूपी हृदय में किसी दुष्ट ने विष भर दिया है। इस लिए इस पतिव्रता स्त्री ने पत्र पाते ही पिसानियो के साथ मिल्फोर्ड बन्दर की ओर प्रस्थान कर दिया।

जब वे दोनों बन्दर के निकट पहुँचे तब पिसानियों से न रहा गया। यद्यपि उसे पोस्टूमस से बड़ा प्रेम था परन्तु उसे यह सहन न हो सका कि उसका मित्र ऐसा दुष्ट कार्य्य कर रहा है और इसलिए उसने इमोजिन से सब समाचार ज्यों का त्यों कह दिया।

इमोजिन को जब यह मालूम हुआ कि बजाय प्रियतम से मिलने के उसका मिलाप मृत्युदेव से होने वाला है तो उसे बड़ा ही कष्ट हुआ। उसने इरादा किया कि अब इस घोर विपत्ति के अवसर पर मैं अपने पिता के घर न जाऊँगी।

पिसानियो ने इमोजिन को ढारस दिया और कहा कि बहुत जल्दी पोस्टूमस को अपनी भूल मालूम हो जायगी और वह अपने किये पर पछतावेगा। इमोजिन ने पिसानियों की सहायता से पुरुषों के से वस्त्र बनवाये और मार्ग में सुरक्षित रहने के प्रयोजन से लड़के का भेस रख कर रोम को चल दी। क्योंकि यद्यपि उसके पति ने उसके साथ बड़ा कठोर व्यवहार किया था परन्तु वह उससे इतना प्रेम करती थी कि बिना उसको देखे उसे कल न पड़ी।

पिसानियो वस्त्र आदि से इमोजिन को ढारस बँधा कर राजदर्बार को चल दिया परन्तु चलते समय उसने इमोजिन को एक औषध दी और कहा कि जब कभी तुमको किसी प्रकार की अशान्ति हो तो इसे पी लेना क्योंकि इसके प्रयोग से मनुष्य का चित्त शीघ्र ही प्रसन्न हो जाता है।

इस औषध का हाल इस प्रकार है कि एक समय दुष्ट रानी ने पिसानियों के मारने के लिए यह औषध मँगाई थी और जिस वैद्य से यह दवा मँगाई गई थी उससे रानी ने यह बहाना किया कि मुझे विष का प्रभाव जीवजन्तुओं पर

आज़माना है। परन्तु वह वैद्य इस रानी की कुटिलता को जानता था। उसे झट यह शङ्का हो गई कि हो न हो किसी मनुष्य का प्राण लेना ही रानी का उद्देश हो। इसलिए उसने मनुष्य-हत्या के पाप से बचने के लिए एक विष समान वस्तु देदी जो कि वास्तव में विष न था किन्तु उसके पीने से मनुष्य थोड़ी देर तक मृतवत् बेहोश रहने के पश्चात् भला चंगा हो सकता था।

इस औषध को रानी ने पिसानियो को दिया और कहा कि मार्ग की थकावट से जब तुम को कष्ट हो तो इसे पीलेना और तुम चंगे हो जाओगे। पिसानियो ने रानी का विश्वास कर लिया। वह यह न समझा कि रानी अपने प्रयोजन की पूर्त्ति के लिए उसे मारना चाहती है क्योंकि पिसानियो के कारण वह इमोजिन को क्लोटन से विवाह करने पर राज़ी नहीं कर सकती थी।

भाग्यवश चलते चलते इमोजिन लड़के के भेस में एक पर्वत की गुफा में पहुँची। यहाँ उसके दोनों भाई जो बचपन में खोगये थे और जिनका किसीको पता न था रहते थे। इनका हाल यह है कि राजदर्बार के एक भद्रपुरुष बिलारियस पर राजा सिंबेलिन ने झूट मूट विद्रोह का दोष लगाया और दरबार से निकाल दिया। बिलारियस को इस बात से इतना कष्ट हुआ कि वह सिंबेलिन का शत्रु हो गया और बदला लेने के प्रयोजन से राजा के दोनों बालकों को चुरा ले गया। परन्तु यह राजकुमार ऐसे सुन्दर थे कि बिलारियस को उन पर दया आगई और पुत्रवत् उनका पालन-पोषण किया। यह दोनों लड़के थोड़े दिनों में ऐसे सुशिक्षित और वीर पुरुष होगये कि वे अपने इस कल्पित पिता से सदैव यह

आग्रह किया करते कि आप हमको किसी युद्ध में जाने और अपनी वीरता दिखाने की आज्ञा दीजिए। बिलारियस इन दोनों सहित वन में पर्वत की एक गुफा में रहता था और वे सब वनवासी जीवों को मारकर अपना पेट पालन किया करते थे। यही कारण था कि वे इतने वीर होगये थे।

इमोजिन अकेली मिल्फोर्ड बन्दर को जारही थी (कि वहाँ से रोम को जाने वाले जहाज़ पर बैठे) परन्तु जङ्गल में रास्ता भूल गई और इधर उधर भटकती भटकती उसी गुफा में पहुँच गई जहाँ उसके भाई रहते थे। भूक के मारे उसकी ऐसी बुरी दशा थी कि वह झट गुफा में घुसगई। उस समय वहाँ पर कोई न था क्योंकि गुफावासी भोजन की तलाश में बाहर गये हुए थे। परन्तु एक कोने में कुछ थोड़ा सा मांस रक्खा था। बिना किसी शिष्टाचार के उसने मांस खालिया और मन में कहने लगी "देखो मनुष्यजीवन कितना कठिन है। मैं कैसी थक गई हूँ। दो रात भूमि पर सोते हो गये। जब पिसानियों ने पहाड़ की चोटी से मुझे मिलफोर्ड बन्दर दिखाया था तब वह अतीव निकट दिखाई पड़ता था" फिर अपने पति की क्रूरता का हाल सोच कर कहने लगी:—

"प्रियतम पोस्टूमस, तुम विश्वासघातक निकले!"

अब इमोजिन के दोनों भाई भी आ गये और इनके संग बिलारियस भी था। इन दोनों के वास्तविक नाम गडीरियस और अर्वीरेगस थे, परन्तु बिलारियस ने उनका नाम पोलीडर और कडवाल रख लिया था और वे बिलारियस को अपना पिता समझते थे।

बिलारियस सबसे पहिले गुफा में घुसा और इमोजिन

को मांस खाते देखकर कहने लगा "अरे यह तो खाता पीना है! मैंने तो इसको परी देव समझा था।"

राजकुमार बोले—"महाशय, क्या है?"

बिलारियस—भगवान की सौगन्ध गुफा में कोई देव बैठा है।

इमोजिन गुफा से निकल कर कहने लगी।

"श्रीमन्! आप जो कोई हो? दया करके मुझे न मारिये। जब मैं आपकी गुफा में घुसा था मेरा यह विचार था कि या तो भोजन माँग लूँगा या आपसे मोल ले लूँगा मैंने आपकी चोरी नहीं की और न मेरा स्वभाव है चाहे भूमि पर स्वर्ण ही क्यों न पड़ा हो। लीजिये अपने भोजन के यह दाम! मैंने निश्चय कर लिया था कि जाते समय गुफा में यह दाम छोड़ जाऊंगा।

उन्होंने रुपया लेने से इनकार किया तब इमोजिन भयभीत हो कर कहने लगी।

"आप मुझपर क्रोध कर रहे हैं। यदि आप मुझे मार डालेंगे तो क्या? मैं तो बिना भोजन खाये हुए भी मर ही जाता।"

बिलारियस—"तुम कौन हो और कहाँ जाते हो?"

इमोजिन—"मेरा नाम फिडली है। मेरा एक मित्र इटली जा रहा है। उसके साथ मैं भी जाऊँगा। मिलफोर्ड बन्दर को जाते समय मैं इतना थक गया था और भूख के मारे मुझे इतना कष्ट हो रहा था कि मुझ से ऐसी दशा में यह पाप हो गया।"

बिलारियस—"सभ्य पुरुष! हमको वन में रहता देखकर क्रूर और असभ्य मत समझ। हम ऐसे दुष्ट नहीं हैं कि

किसी पाहुन को मार डालें। अब रात हो गई है और तुम्हें मिल्फोर्ड का मार्ग ढूँढने में बड़ी कठिनाई होगी। आज यहीं रहो और जो कुछ रूखा सूखा हमारे पास है स्वीकार करो। लड़को! इस अतिथि का स्वागत करो।"

इमोजिन के भाइयों ने उसका बड़ा आदर और सत्कार किया और कहने लगे कि भाई, तुम यहीं रहो और हम तीनों भाई भाई होकर रहा करेंगे। उस दिन जो मृग मार कर लाये थे उसको इमोजिन ने बड़ी योग्यता से बनाया। क्योंकि यद्यपि आजकल राजकुमार या और बड़े घेरों की लड़कियाँ खान पकाना नहीं सीखतीं परन्तु प्राचीन काल में यह बात नहीं थी और इमोजिन पाकशाला के कामों में बड़ी निपुण थी। उन युवकों ने उसकी बड़ी ही प्रशंसा की। इसके पश्चात् इमोजिन ने गान आरम्भ किया। यह राजकुमारी संगीत विद्या में भी ऐसी दक्ष थी कि गीत की प्रतिध्वनि आकाश भर में फैल गई। और पोलीडर कहने लगा "देखो कैसा मिष्ट कण्ठ है। आहा! कैसा मधुर स्वर है, मानो कोई स्वर्ग का देव गा रहा है।"

कडवाल कहने लगा, देखो "फ़िडली की सब बातें ही सुन्दर हैं। इसकी हँसी कैसी भली मालूम होती है परन्तु देखो दुःख ने इसकी समस्त आकृति बिगाड़ दी है।"

फ़िडली के इन गुणों के कारण (अथवा उस स्वाभाविक भ्रातृत्व के कारण जिससे वे सब अनभिज्ञ थे) ये दोनों भाई फ़िडली को बहुत प्यार करने लगे और फ़िडली भी उनसे बड़ा प्रेम मानता था। यदि उसे अपने प्यारे पोस्टूमस का प्रेम न होता तो वह बड़े हर्षपूर्वक मृत्यु पर्य्यन्त वहाँ रहने को राज़ी हो जाता। परन्तु इन दोनों कुमारों के आग्रह

पर उसने यह निश्चय कर लिया कि जब तक मार्ग की थकावट दूर न हो जाय मैं यहीं रहूँगा।

कई दिन पीछे जब भोजन समाप्त होगया तब वे दोनों विलारियस सहित आखेट को चल दिये। फ़िडलो न आसका। क्योंकि उसने कहा कि मेरा चित्त अच्छा नहीं है। परन्तु वस्तुतः अपने पति के कठोर अत्याचारों के सोच से उसकी यह दशा हो रही थी। जब इमोजिन (फ़िडली) अकेली रह गई तब उसे याद आया कि मेरे पास पिसानियो-प्रदत्त एक औषध है जिसको पान करना चाहिए। पीते ही मृत्युसम नींद आ गई और वह बेहोश होकर वहाँ पड़ी रही।

विलारियस और दोनों लड़के फ़िडली को अकेला छोड़ कर शिकार को चल दिये और रास्ते में फ़िडली के गुणों का ही वर्णन करते जाते थे। जब जँगल से लौट कर वे आये तो पोलीडीर ने उस को सोता पाया। इमोजिन के नम्र भाव के कारण उसके गुण भी ऐसे नम्र हो गये थे कि उसने अपने जूते उतार डाले और नंगे पाँव गुफ़ा में गया जिससे पैर की आहट पाकर कहीं फ़िडली न जग जाय। परन्तु थोड़ी देर पीछे उन सबको ज्ञात होगया कि फ़िडली वास्तव में सोती नहीं है किन्तु किसी अकस्मात् कारण से वह मृत्यु-ग्रसित होगया है। यह जानकर तो वे तीनों अत्यन्त खेद करने लगे। और पोलीडर और कडवाल तो ऐसे बिलख बिलख कर रोते थे मानो इनका और फ़िडली का कोई अति निकट और सदा का सम्बन्ध है।

बिलारियस की यह सम्मति हुई कि जंगल में ले जा कर बड़े आदर और सम्मान से भजन आदि गाकर इसकी अन्त्येष्टि करनी चाहिए। तदनुसार दोनों राजकुमारों ने इमोजिन का

मृत देह गुफ़ा में से निकाल कर एक वृक्ष की छाया तले रक्खा और वे दोनों विलाप करने लगे, फ़िर उस पर पुष्पवर्षा करके पोलीडर कहने लगा,

"प्रिय फ़िडली, इस वसन्त ऋतु में नित्यप्रति मैं तुम्हारे मृत-देह पर फूलों की वर्षा किया करूँगा।"

इमोजिन को इस प्रकार मृत पड़े हुये बहुत देर नहीं हुई थी कि औषध का प्रभाव जाता रहा और वह नींद से जाग उठी। अपने आपको इस दशा में फूलों के नीचे पड़ी देख-कर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ और गुफ़ा, बिलारियस तथा दो राजकुमारों की याद करके सोचने लगी कि कहीं मैंने स्वप्न तो नहीं देखा। वहाँ से उठकर वह गुफ़ा की खोज में इधर उधर फिरती रही परन्तु मार्ग न मिलने के कारण उसने निश्चय कर लिया कि मिल्फ़ोर्ड बन्दर पर चल कर रोम को प्रस्थान करना चाहिए। क्योंकि साध्वी इमोजिन का चित्त तो अपने पति में ही लगा हुआ था।

इतने समय में ऐसी विचित्र घटनायें होगईं जिनकी इमो-जिन को कुछ भी ख़बर नहीं थी। जिस समय इमोजिन अकेली वन में फिर रही थी रोम के महाराजा आगस्टस सीज़र और इँगलैण्ड के अधिपति सिंबेलिन में एक घोर युद्ध छिड़ गया और रोम की सेना इस समरानल को और प्रज्वलित करने के लिए मिल्फ़ोर्ड बन्दर से उतरकर इसी वन में आ पहुँची। इस सेना में दैवगति से इमोजिन का प्रिय पति पोस्टूमस भी था।

यद्यपि पोस्टूमस रोमन सेना में सम्मिलित होकर आया था परन्तु उसका आन्तरिक विचार यह नहीं था कि अपने देश के विरुद्ध हथियार चलावे। इँगलैण्ड वास्तव में उसकी

मातृभूमि थी और यद्यपि आज उसको इँग्लैण्ड से भाग जाना पड़ा था परन्तु कौन ऐसा हतभागा मनुष्य है जो चाहे कुछ भी क्यों न हो अपनी मातृभूमि से स्नेह न करता हो और जो अवसर पाकर उसीके विरुद्ध लड़ने को उद्यत हो! इस समय पोस्टूमस का यही निश्चय था कि किसी न किसी प्रकार देश में पहुँचकर अपने राजा की सहायता करनी चाहिए।

इँग्लैण्ड लौटने में पोस्टूमस का एक प्रयोजन और भी था। यद्यपि उसे अब तक यही विश्वास था कि इमोजिन साध्वी नहीं थी अर्थात् उसे यह पूरा निश्चय था कि जो कुछ आइकीमो ने कहा था वह सच था। परन्तु उसका प्रेम अपनी प्रियतमा के लिए कुछ न्यून नहीं था। यद्यपि उसने क्रोध में आकर उसे मरवा डालने की आज्ञा देदी थी परन्तु वह अब अपने किये पर पश्चात्ताप कर रहा था। उसके पत्र के उत्तर में पिसानियो ने उसे यह लिख दिया था कि तुम्हारी आज्ञानुसार इमोजिन को प्राण-दण्ड दे दिया गया, परन्तु अब उसे संसार इमोजिन रहित देखकर अपना जीवन व्यर्थ और निष्फल दिखाई पड़ता था। अब उसकी इच्छा यह थी कि या तो रोम की सेना के साथ लड़कर मर जाऊँ या बिना आज्ञा के इँग्लैण्ड पहुँचने पर राजा सिंबेलिन ही प्राण दण्ड देदे।

जिस समय इमोजिन लड़के के भेस में मिल्फोर्ड बन्दर को जा रही थी रोम की सेना वहाँ होकर गुजरी और कुछ लोगों ने इसको पकड़ लिया। इसके रूप तथा योग्यता को देखकर रोम का सेनापति लूशियस ऐसा प्रसन्न हुआ कि झट उसने इसे अपना नौकर कर लिया।

सिंवेलिन की सेना शत्रु के मुक़ाबिले के लिए आगे बढ़ी और इसमें पोलीडर और कडवाल दोनों राजकुमार भी विलारियस सहित शामिल हो गये। क्योंकि इन दोनों राजकुमारों की बहुत दिनों से यही अभिलाषा थी कि किसी युद्ध में अपने वीर-चरित्र दिखाने चाहिएँ। विलारियस अपनी युवा अवस्था में बड़ा वीर पुरुष था। उसने कई युद्धों में शत्रु को पराजित किया था। अब वह सिंवेलिन से पूरा बदला ले चुका था। इस लिए अवसर पाकर वह अपने राजा की सहायता को खड़ा होगया।

महा घोर युद्ध हुआ और दोनों ओर के सहस्रों मनुष्य खेत रहे। जिस समय रोम के सिपाहियों की जय हो रही थी और सिंवेलिन पकड़े जाने के निकट ही था, कडवाल, पोलीडर, विलारियस तथा पोस्टूमस वहाँ पहुँच गये और न केवल राजा ही अरिदल से मुक्त हो गया किन्तु समस्त विरोधी सेना तितर बितर होकर नष्ट हो गई। इंग्लैण्ड वालों की जय हुई और रोम की पराजय।

पोस्टूमस ने अपने को सिंवेलिन के चाकरों के हवाले कर दिया क्योंकि उसकी इच्छा मरने की थी। यह मृत्यु उसे युद्ध में प्राप्त न हो सकी इसलिए। उसे विश्वास था कि जब सिंवेलिन मुझे अपनी आज्ञा बिना अपने देश की सीमा में देखेगा तब अवश्य ही मैं मारा जाऊँगा।

जिस समय पोस्टूमस को प्राण-दण्ड देने के लिए राजा सिंवेलिन के पास ले गये उसी समय विलारियस भी वीरता का इनाम लेने के लिए वहीं लाया गया। लड़के के भेस में इमोजिन भी लूशियस नामक रोमन सेनापति सहित क़ैद होकर वहाँ आई। इनमें आइकीमो भी था जो युद्ध के लिए

रोमन सेना के साथ आया हुआ था। भाग्यवश पिसानियो भी वहीं खड़ा था।

इस प्रकार भिन्न भिन्न मनुष्य भिन्न भिन्न प्रयोजनों से राजा के सम्मुख खड़े हुए थे। पोस्टूमस, और लड़के के भेस में इमोजिन अपने रोमन स्वामी लूशियस सहित, सच्चा मित्र पिसानियो, और कुटिल आइकीमो, और इन सबके साथ विलारियस और दो राजकुमार जो बचपने में चोरी गये थे। इन सबके दिल धड़क रहे थे क्योंकि इन बिचारों को भावी का कुछ भी पता न था। इमोजिन ने पोस्टूमस को पहचान लिया यद्यपि उसके वस्त्र एक किसान के से थे। परन्तु पोस्टूमस इमोजिन को नहीं पहिचान सका क्योंकि इमोजिन पुरुष के से वस्त्र पहने हुए थी। इमोजिन ने आइकीमो को भी पहचान लिया; उसके हाथ में वही अँगूठी थी जिसे इमोजिन ने चलते समय अपने प्राणपति पोस्टूमस को दिया था। परन्तु अभी तक इमोजिन को यह बात ज्ञात न थी कि उस की सब विपत्तियों का कारण यही आइकीमो है।

पिसानियो ने भी इमोजिन को पहिचान लिया क्योंकि यह वस्त्र उसी के बनवाये हुए थे। इमोजिन को देखकर उस का चित्त हर्ष-पूर्ण हो गया। वह मन में कहने लगा कि "जब इमोजिन जीवित है तब चाहे कुछ भी क्यों न हो एक समय फिर भाग्य उदय होंगे।"

विलारियस ने भी इमोजिन को पहचान लिया और कडवाल से कहा—"अरे! क्या यह लड़का क़बर में से निकल आया है?"

कडवाल ने उत्तर दिया। "हाँ, प्रतीत तो ऐसा ही होता है कि यह फ़िडली ही है"।

पोलीडर—"अरे! वही फ़िडली जिसकी लाश को हम दफ़न कर आये थे!"

कडवाल—"हाँ! हाँ! वही।"

बिलारियस—"चुप! चुप! यदि यह फ़िडली होता तो हमसे अवश्य बोलता।"

पोलीडर—"अरे हमने तो इसे मरा हुआ देखा था"।

बिलारियस—"अरे चुप रहो! यह समय ऐसी बातें करने का नहीं है।"

पोस्थूमस इस समय चुपचाप खड़ा हुआ मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा था। उसने किसी पर इस बात को भी प्रकट नहीं किया था कि मैंने राजा की जान बचाई है। क्योंकि यदि राजा इस बात को सुन लेता कि पोस्थूमस उसीकी ओर लड़ा है तो बहुत सम्भव था कि वह उसका पुराना अपराध क्षमा कर देता और पोस्थूमस की मनचाही मौत उसे न मिलती।

इस अवसर पर अन्य किसी को तो बोलने का साहस नहीं हुआ किन्तु रोम का सेनापति लूशियस बोला, "मैंने सुना है कि आप अपने क़ैदियों को धन लेकर नहीं छोड़ते किन्तु सबको प्राण-दण्ड देते हैं। मैं रोमवासी हूँ। और जिस तेज, साहस तथा निर्भयता के लिए रोमवाले प्रसिद्ध हैं वह मुझमें भी है। मैं मौत से नहीं डरता। यदि आप मेरे लिए मरना ही निश्चित करते हैं तो मुझे मर जाने में कुछ भी संकोच नहीं है। परन्तु मैं आपसे एक बात माँगना चाहता हूँ"।

यह कह कर उसने इमोजिन को राजा के सम्मुख लाकर फिर कहना आरम्भ किया, "मुझ रोमन के साथ आप जैसा

चाहें व्यवहार करें । परन्तु मेरा यह चाकर आपका ही सजातीय है । जिस प्रकार इसने मेरी सेवा की है उसका वर्णन नहीं हो सकता । सच तो यह है कि कभी किसी नौकर ने अपने स्वामी की इतनी सेवा नहीं की । यद्यपि इसने एक रोमन की सेवा की है परन्तु इस विचारे ने किसी इँगलैंगड वाले को हानि नहीं पहुँचाई । यदि आप और किसीको बचाना नहीं चाहते तो इसको अवश्य बचा दीजिए ।"

सिंबेलिन ने बड़े ध्यान से इमोजिन की ओर देखा, उसने उसे पुरुष के वस्त्रों में पहचाना नहीं परन्तु स्वाभाविक संबन्ध ने इस समय पर अपनी प्रबलता दिखाई और राजा कहने लगा, "मैंने अवश्य इस लड़के को कहीं देखा है । मैं नहीं कह सकता कि क्यों मेरा चित्त इसकी ओर आकर्षित हो रहा है । हे लड़के, तू जीवित रह । मैं तुझे तेरी जान दिये देता हूँ । यही नहीं, तू जो कुछ चाहे और माँग ले ।"

इमोजिन—"मैं आपका बड़ा अनुगृहीत हूँ" । इस समय सब लोग अपने मन में यही कह रहे थे कि यह लड़का अपने स्वामी लूशियस की जान माँगेगा । और लूशियस ने भी यही समझ कर कहा, "हे प्यारे लड़के ! मैं अपनी जान नहीं माँग सकता । परन्तु मैं जानता हूँ कि तुम यही माँगना चाहते हो ।"

इमोजिन ने उत्तर दिया, "स्वामी, मुझे कुछ और ही माँगना है । इसलिए आपके छोड़ने के लिए मैं प्रार्थना नहीं कर सकता ।"

रोमन सेनापति इमोजिन की इस कृतघ्नता को देखकर बड़ा चकित हुआ ।

इमोजिन ने तब राजा से निवेदन किया कि, "महाराज, मैं और कुछ नहीं चाहता । केवल एक बात माँगनी है । उसी को आप कृपा कर के दान दीजिए । आइकीमो से सच सच

यह पूछा जाय कि उसने यह अँगूठी कहाँ से पाई जिसे यह पहने हुए है।"

आइकीमो ने तब पूरा पूरा हाल कह सुनाया कि किस प्रकार उसमें और पोस्टूमस में शर्त हुई और किस प्रकार वह इँग्लेण्ड में आकर इमोजिन को अपनी ओर आकर्षित करने में विफल रहा और किस प्रकार अन्त में उसने अपनी कुटिलता से पोस्टूमस को छला।

पोस्टूमस ने जब आइकीमो की ये सब बातें सुनीं और उसे यह मालूम हुआ कि जिस इमोजिन को उसने कुलटा समझ कर मरवा डाला वह वस्तुतः एक सती और पतिव्रता स्त्री थी तो उसके शोक का कुछ वारापार न रहा और झट राजा के सामने आकर उसने समस्त समाचार अपनी पुत्री तथा इमोजिन की मृत्यु का कह सुनाया। अर्थात् किस प्रकार उसके लिखने पर पिसानियो ने इमोजिन को मरवा डाला। क्योंकि वह तो अभी यही जानता था कि इमोजिन अब इस दुखःमय संसार में नहीं है।

पोस्टूमस पर शोक ने ऐसा आक्रमण किया था कि वह बिलख बिलख रोने लगा और 'हाय इमोजिन' 'हाय इमोजिन' कह कह कर चिल्लाने लगा। अपने पति को इस दुर्दशा में देखकर इमोजिन से न रहा गया और झट अपना भेस बदल कर वह पोस्टूमस के सम्मुख आगई।

पोस्टूमस अपनी प्रियतमा को जीवित देखकर गद्गद हो गया और हर्ष के मारे फूला न समाया।

सिंबेलिन को भी अपनी खोई हुई लड़की की प्राप्ति पर बड़ा आनन्द हुआ और उसने प्रेमपूर्वक न केवल पोस्टूमस को क्षमा ही दी किन्तु अपना दामाद बनाना भी स्वीकार कर लिया।

इस हर्ष के समय में विलारियस ने राजा के दोनों लड़कों पोलीडर और कडवाल को भी उसको भेंट किया और कहा कि मैं इन दोनों को बचपन में चुरा लेगया था और यह दोनों वस्तुतः आपके ही बेटे गडीरियस और अर्वीरेगस हैं।

ऐसे समय में जब कि चारों ओर आनन्द ही आनन्द की ध्वनि गूँज रही थी, दण्ड विचारे की कौन बात पूछता था। इसीलिए राजा ने विलारियस को भी बिना दण्ड दिये क्षमा कर दिया। आज राजा के लिए अत्यन्त हर्ष का दिन था। उसने न केवल अपने शत्रु रोम पर ही विजय पाई थी किन्तु दुर्भाग्य को भी पराजित कर दिया था। आज उसकी पुत्री मिल गई। आज उसके पुत्र भी प्राप्त हो गये। और कैसे पुत्र? वे जिन्होंने अपने पिता की जान बचाई।

अब इमोजिन को अपने स्वामी लूशियस के साथ प्रत्युपकार करने का अवसर मिल गया और राजा सिंबेलिन ने अपनी पुत्री की प्रार्थना पर लूशियस को क्षमा कर दिया। इसी लूशियस के द्वारा इँगलैण्ड और रोम में सन्धि हो गई। जिससे दोनों राज्य बहुत दिनों तक मित्रता से चलते रहे।

इमोजिन की दुष्ट विमाता को अपनी प्रयोजन-सिद्धि में विफल होने से बड़ा कष्ट हुआ और वह बीमार हो कर थोड़े दिनों में मर गई और उसका लड़का क्लौटन भी एक मनुष्य से झगड़ा करके मारा गया। इसका क्रमशः वृत्तान्त हम यहाँ नहीं देना चाहते क्योंकि ऐसे आनन्द की बातों में इनसे विघ्न होगा। सारांश यह है कि धर्म की जय हुई और अधर्म की पराजय। सिंबेलिन ने सबके साथ ऐसा दया का व्यवहार किया कि दुष्ट आइकीमो को भी छोड़ दिया क्योंकि उसकी कुटिलता से कोई बुरा परिणाम न निकलने पाया।

ग्रीष्मरात का स्वप्न।

'MID SUMMER NIGHT'S DREAM'

प्राचीन काल में यूनान देश भिन्न भिन्न छोटे राज्यों में बटा हुआ था जो अपनी राजधानी के नाम से प्रसिद्ध थे। इनके नियम केवल उन्हीं नगरों में प्रचलित होते थे और बहुत से नियम ऐसे थे जिनका संचालन दो चार कोस से अधिक भूमि में नहीं होता था।

इसी देश के अथेंस नामक नगर में एक नियम यह था कि पिताओं को अपनी पुत्रियों के विवाह का पूरा अधिकार होता था, अर्थात् जिसके साथ एक मनुष्य अपनी लड़की का विवाह करना चाहे कर सकता था और लड़कियों को अपनी इच्छा प्रकाशित करने की आज्ञा न थी। यदि कोई लड़की अपने बाप के चुने हुए मनुष्य के साथ विवाह करना स्वीकार न करती और किसी अन्य से विवाह कर लेती या करना चाहती थी तो पिता को पूरा अधिकार था कि वह अपनी पुत्री को प्राणदण्ड दिला दे। परन्तु कौन ऐसा बाप है जो अपनी लड़कियों से स्नेह न करता हो? इसलिए यद्यपि बहुत सी लड़कियाँ अपने पिता की इच्छा के विरुद्ध विवाह कर लिया करती थीं परन्तु वे स्नेहवश उनको दण्ड नहीं दिलाते थे और केवल धमका कर ही रह जाते थे। परन्तु एक समय एक वृद्ध पुरुष ईजियस ने सचमुच अथेंस के राजा थीसियस से प्रार्थना की कि "मेरी पुत्री हर्मिया को प्राणदण्ड देना चाहिए। क्योंकि वह मेरे बताये हुए पुरुष से जिसका नाम डिमेट्रियस है विवाह करना स्वीकार नहीं करती। और मेरी इच्छा के विरुद्ध एक और मनुष्य से, जिसका नाम लाईसेण्डर है, विवाह

करना चाहती है"। उसने कहा, "महाराज! न्याय कीजिए और अथेंस के नियमानुकूल इसको फाँसी दीजिए।"

थीसियस ने हर्मिया को बुलाया और सब हाल पूछा। हर्मिया ने उत्तर दिया कि, "महाराज जब मेरा प्रेम डिमेट्रियस के लिए नहीं है तो मैं उसको किस प्रकार अपना पति बना सकती हूँ?

थीसयस—देखो सुन्दरी! तुम्हारी दशा उस मोम की मूर्त्ति के समान है जिसका बनाना या बिगाडना तुम्हारे पिता के अधीन है। इसलिए उचित तो यही जान पड़ता है कि तुम अपने पिता की आज्ञा को मानो।

हर्मिया०—राजन्! प्रेम नहीं तो विवाह कैसा?

ईजियस—डिमेट्रियस बड़ा अच्छा आदमी है।

हर्मिया०—क्या लाईसेण्डर अच्छा नहीं है?

थीसियस—तुम्हारा पिता तो उसको अच्छा नहीं समझता।

हर्मिया०—मेरी इच्छा यह है कि वह मेरी आँख से अवलोकन करे?

थीसियस—तुम्हीं क्यों न अपने पिता के अनुकूल करो।

हर्मिया०—श्रीमन्! प्रेम का विषय एक ऐसा विषय है जिसमें दूसरों की सम्मति की गुंजाइश नहीं। मुझे खेद है कि मैं ऐसी स्पष्टता से कह रही हूँ। परन्तु क्या करूँ? युवती रमणियाँ एक बार एक मनुष्य को मन देकर दूसरों को नहीं देतीं। कुलीन और धार्मिक स्त्रियों का यही कर्त्तव्य है कि एक बार जिस किसीको स्नेह दृष्टि से देख लिया उसका ध्यान मरणपर्य्यन्त नहीं छूट सकता और न किसी अन्य को ग्रहण

किया जा सकता है। राजन्! एक निवेदन और भी है। यह डिमेन्ट्रियस जिसके विवाह पर मेरे पिता जी इतना आग्रह कर रहे हैं, पहले मेरी एक सहेली हैलीना से प्रेम करता था और हैलीना भी उसके ऊपर आसक्त थी। परन्तु जब विवाह का समय आया तो उसने हैलीना को छोड़ कर मेरे ऊपर दृष्टि डाली। ऐसे अस्थिर मनुष्य का क्या ठीक? हैलीना बिचारी अब तक उसके ऊपर तन मन वार रही है, परन्तु यह अब उसकी ओर भी नहीं देखता। यह कैसी अन्याय की बात है?

ईजियस—(लाईसेंडर की ओर देखकर) महाराज! इस मनुष्य ने मेरी लड़की को फुसला लिया है।

डिमेट्रियस—लाईसेण्डर, तुम हर्मिया को छोड़ दो।

लाईसे०—तुम्हीं क्यों न छोड़ दो?

डिमे०—मैं क्यों छोड़ूँ? उसका बाप मुझसे प्रसन्न है।

लाईसे०—अच्छा, यदि उसका पिता तुमसे प्रसन्न है तो तुम पिता से ही विवाह करलो। मुझसे हर्मिया प्रसन्न है इसलिए मैं उसे विवाहूँगा।

ईजियस इन बातों से और भी अप्रसन्न होगया और उसने हर्मिया को प्राणदण्ड दिये जाने पर आग्रह किया। थीसियस को यद्यपि हर्मिया पर दया आती थी परन्तु वह नियमविरुद्ध कुछ नहीं कर सकता था। इसलिए उसने हर्मिया को ४ दिन दिये जिनमें सोचकर वह अपना अन्तिम विचार राजा से निवेदन करे। क्योंकि यदि हर्मिया चार दिन पीछे डिमेट्रियस से विवाह करने को राज़ी न हुई तो उसको अवश्य फांसी मिलनी थी।

हर्मिया और लाईसेण्डर में ऐसा सच्चा प्रेम था जिसको मृत्यु का भय कुछ भी कम नहीं कर सकता था। इसलिए हर्मिया ने लाईसेण्डर के पास जाकर कहा "नाथ! या तो तुम छूटते हो या मैं चार दिन पीछे मारी जाती हूँ।"

लाईसेण्डर को बहुत बड़ा शोक हुआ और अन्त में कुछ सोच विचार कर उसने कहा, "प्रियतमे! तुम चिन्ता मत करो। प्रेम में बहुधा ऐसी ही बाधायें पड़ जाती हैं। इस नगर से थोड़ी दूर पर मेरी एक चाची रहती है। वह मुझको बहुत प्यार करती है। उसके पास धन भी बहुत है। चलो आज रातको हम दोनों वहाँ भाग चलें। उस जगह अथेंस का यह नियम प्रचलित नहीं है। वहाँ पहुँच कर हम तुम दोनों प्रीतिपूर्वक विवाह कर लेंगे"।

हर्मिया ने यह बात मान ली और लाईसेण्डर से कहा, "अच्छा स्वामिन्! मैं आज रात को तुम्हारे पास उसी वन में आ जाऊँगी जहाँ मई महीने की चाँदनी रातों को हम, तुम और हैलीना भ्रमण किया करते हैं"।

हर्मिया ने अपने भागने का भेद अपनी सहेली हैलीना से भी कह दिया, क्योंकि लड़कियों के मन में कोई बात छिपी नहीं रहती। हैलीना ने मूर्खता से यह भेद डिमैट्रियस पर प्रकाशित कर दिया। यद्यपि उसे इससे केवल इतना ही लाभ था कि डिमैट्रियस हर्मिया के ढूँढ़ने के लिए वन को आयगा और मैं भी उसके साथ साथ वहाँ जा सकूँगी।

जिस वन में हर्मिया और लाईसेंडर रात को जा छिपे वहाँ परियाँ (अप्सरा) भी आया करती थीं। और परियों का राजा ओबरन और उनकी महारानी टिटानिया दोनों आधी रात को इस वन में अपने अनुचरों सहित आकर विहार किया करते थे।

दैवगति से इस समय ओवरन और टिटानिया में झगड़ा हो गया था और जब यह दोनों अकस्मात् किसी कुंज में एक दूसरे से मिल जाते तो इतना झगड़ा होता कि बिचारी छोटी छोटी परियाँ भयभीत होकर फूल की पत्तियों में जा छिपती थीं।

इस वैमनस्य का कारण यह था कि टिटानिया की एक प्रिय सखी अपने एक छोटे बालक को छोड़ कर मर गई थी। इसको टिटानिया ने बड़े प्रेम से पाला और वन में लाकर रखने लगी। इस बालक के रूप को देखकर ओवरन की यह इच्छा हुई कि अपना अनुचर बना ले। परन्तु टिटानिया ने इस मातृहीन बालक को नौकर बनाना स्वीकार न किया और इसलिए परियों का राजा उससे बहुत ही नाराज़ हो गया।

जिस रात को हर्मिया और लाईसेण्डर नगर से भाग जाने के लिए इस वन में आये हुए थे, उसी समय टिटानिया भी अपनी परियों सहित भ्रमण करने के लिए वन में आ निकली; और जिस समय वह टहल रही थी उसे एक ओर से ओवरन मिल गया और उसने कहा, "गर्विता टिटानिया ! तू इधर कहाँ से आ निकली ? मैं तुझे देखकर सुखी नहीं हूँ"।

टिटानिया—"अरे यह क्या झगड़ालू ओवरन है ? अब तो अवश्य लड़ाई होगी। चलो परियो ! चलो ! मैंने प्रतिज्ञा की है कि मैं कभी अब ओवरन के साथ नहीं रहूँगी"।

ओवरन—"ठहर ठहर ! मूर्ख परी ठहर ! क्या मैं तेरा पति नहीं हूँ। मेरी टिटानिया, अपने पति से क्यों झगड़ती है। मुझे अपना छोटा बालक दे दो ?"

टिटानिया—"ऐसा कभी न होगा। ओवरन ! निश्चय जान लो कि तुम यदि समस्त परियों के राज्य को भी देना चाहो तो भी तुमको इस लड़के की प्राप्ति नहीं हो सकती"।

ओबरन—अच्छा जा! जा! मैं सवेरा होने से पहले ही तुझे इस धृष्टता का दण्ड दूँगा।

इस झगड़े के पश्चात् टिटानिया तो अपनी सब परियों सहित वहाँ से भाग गई और ओबरन ने अपने एक नौकर को बुलाया जिसका नाम पक था।

पक जो ओबरन का बड़ा प्रसिद्ध सेवक गिना जाता था बड़ा हँसोड़ा और धूर्त था। वह नित्यप्रति वन के निकटस्थ गाँवों में बड़ी बड़ी धूर्ततायें किया करता था। कभी ग्वालों के घर में घुस जाता और वहाँ दूध से मलाई उतार कर खा जाता। कभी जब ग्वालिन अपने दही को मथने बैठती तो अपनी सूक्ष्म* देह को दही की मथनी में डाल देता और उसके भीतर नाचता। बिचारी ग्वालिनों को कुछ भी ख़बर न होती और वे घण्टों मथने से भी घी न निकाल सकतीं। जब कभी गाँव के लोग मद्य बनाने लगते तब पक बर्तन में घुस जाता और शराब को बिगाड़ देता था। जब कभी शाम के वक्त कुछ पुरुष या स्त्रियाँ साथ बैठ कर शराब पीते तो पक किसी बुड्ढी स्त्री के प्याले में घुस जाता और शराब को उसके मुँह पर उँडेल देता। और जब कभी वही वृद्ध स्त्री किसी शोकप्रद बात को कहने के लिए अपने स्टूल (कुर्सी) पर बैठती तो पक चुपके से पीछे आकर स्टूल खींच लेता और बिचारी बुढ़िया झट से पृथ्वी पर गिर पड़ती और सब लोग ख़ूब ही हँसते। यद्यपि पक में किसी प्रकार की दुष्टता नहीं थी और न वह किसीको कष्ट देता था परन्तु उसे

*यह बात प्रसिद्ध है कि परियों के शरीर मनुष्य की तरह स्थूल नहीं होते, किन्तु सूक्ष्म होते हैं जिनको कोई नहीं देख सकता।

हास्य से इतना प्रेम था कि वह ऐसी धूर्तता बहुत किया करता था। ओबरन ने अपने ऐसे गुणी चाकर को बुलाया। क्योंकि जिस काम को वह कराना चाहता था उसके लिए ऐसे ही नौकर की आवश्यकता थी। जब एक आ गया तो ओबरन ने कहा। "एक! यहाँ आओ। देखो एक पीला पीला फूल होता है। उसे स्त्रियाँ सुहाग-पुष्प कहा करती हैं। इस फूल को तलाश करके तुम मेरे पास ले आओ। इस फूल में विलक्षण गुण यह है कि यदि किसी सोते हुए पुरुष व स्त्री की आँख में इसका रस निचोड़ दिया जाय तो वह पुरुष या स्त्री उसी स्त्री या पुरुष पर झट आसक्त हो जाते हैं जो पहले पहल उठ कर उनको मिल जाय। जब टिटानिया सो जायगी तब मैं इस रस को उसकी आँखों में छोड़ दूँगा। इसलिए जब वह जगेगी तब किसी पशु पक्षी पर जिसे वह देखेगी चाहे वह शेर, रीछ, बन्दर आदि कोई क्यों न हो झट से आसक्त हो जायगी, और जब वह उससे प्यार करेगी तब मैं एक दूसरे फूल को निचोड़ कर उसे अपनी स्वाभाविक अवस्था में लेजाऊँगा। ऐसी दशा में वह बहुत शरमायगी और मुझे अपना बालक दे देगी।"

एक तो स्वयं ही ऐसी बातों का बहुत शौकीन था। अपने स्वामी की आज्ञा पाकर वह झट फूल की तलाश में चल दिया। जब ओबरन वन में एक का इंतज़ार कर रहा था तब उसने देखा कि डिमैट्रियस और हैलीना जङ्गल में फिर रहे हैं।

पाठकगण जानते हैं कि डिमैट्रियस यहाँ हर्मियाँ की तलाश में आया था और हैलीना उसके पीछे पीछे आ रही थी। डिमैट्रियस इसको गालियाँ देता और अपने पास से भगाता था परन्तु प्रेमभरी हैलीना उसकी ख़ुशामद करती

थी और उसे याद दिलाती थी कि देखो तुम पहले मेरे साथ ऐसा प्रेम करते थे, अब क्यों इस प्रकार मुझसे क्रुद्ध हो गये? परन्तु डिमेट्रियस को कुछ भी दया नहीं आती।

ओबरन ने इन दोनों की बातें सुनीं और हैलीना की दुर्दशा पर तरस खाकर उसने निश्चय किया कि सुहाग-पुष्पकी सहायता से इस दुष्ट डिमैट्रियस का मन बदल देना चाहिए। जब पक आगया तो ओबरन ने कहा, "देखो, पक! यहाँ अथेंस का एक पुरुष और एक स्त्री फिर रहे हैं। स्त्री पुरुष को चाहती है परन्तु पुरुष स्त्री से प्रेम नहीं करता। तुम इनको इनके वस्त्रों से पहचान सकते हो। तुम इस फूल में से कुछ भाग ले जाओ और जब कि यह पुरुष सो रहा हो तो इसको आँखों में निचोड़ दो। पर यह ख़याल रखना कि उस वक्त इस काम को करना जब ये दोनों पास पास सो रहे हों।

पक तो यह सुनकर अपने स्वामी की आज्ञा पालन करने चल दिया और ओबरन फूल लेकर टिटानियाँ की ओर चला। टिटानियाँ, अपनी परियों सहित सोने का सामान कर रही है। एक नदी के तीर रेत में नर्म बिस्तरों पर नाना प्रकार के फूल बिछे हुए थे। कहीं चमेली खिल रही थी। कहीं गुलाब अपनी बहार दिखा रहा था। इसी रमणीय स्थान पर टिटानियाँ हर रात सोया करती थी। उसकी चादर साँप की सफ़ेद केंचुली की बनाई जाती थी, जो चाहे कितनी ही छोटी क्यों न हो परियों के लिए काफ़ी थी।

जब ओबरन वहाँ पहुँचा तब टिटानियाँ अपनी परियों को अपने सोने के समय के लिए भिन्न भिन्न कार्य्य सौंप रही थी

किसी को आदेश हुआ कि तुम गुलाब की पत्तियों के भीतर जो कीड़े हो गये हैं उनको मारो। किसी को आज्ञा हुई कि चमगादड़ों से लड़ कर उनके पर काट लाओ, मैं अपनी परियों का कोट बनवाऊँगी! किसीको हुक्म हुआ कि तुम मेरा पहरा दो और उल्लू मेरे निकट आकर न बोलने पावे। किसी परी को आज्ञा हुई कि तुम गान करो। इस प्रकार परियाँ अपने अपने काम में लग गईं। परन्तु पहले उन सबने मिलकर गीत गाना आरम्भ किया।

कुसुम-सेज नदी के तीर।
रात चाँदनी शीत समीर॥ १॥
सोती परियों की महरानी।
पहुँचे इसे न कोई हानी॥ २॥
*साही यहाँ न काँटे लाना।
फणी न अपना फण दिखलाना॥ ३॥
पाप ताप नहिं आने पावे।
जादू-टोना भी न सतावे॥ ४॥
बुलबुल आके गाओ गीत।
सोवे रानी हो निर्भीत॥ ५॥

जब गीत सुनते सुनते टिटानिया सोगई तो वे परियाँ उसे वहाँ अकेली सोते छोड़कर इधर उधर अपने अपने काम को चली गईं। परीराज ओबरन वहाँ पर आया और रानी के पलकों पर पुष्परस छोड़ कर और यह कह कर चला गया:—

*साही एक पशी होता है जिसके शरीर पर कांटे होते हैं।

सो०—भेंटे प्रथमहि आय,
पशु-पक्षी नरजाति जो।
तासो प्रेम दृढ़ाय,
देखो फूल-प्रभाव अस॥

अब हर्मिया का हाल सुनो। यह दुखिया लड़की उस रात को अपने पिता के घर से निकल कर अपने प्यारे की तलाश में वन को चल दी। जब वह जँगल में पहुँची तब देखती क्या है कि लाइसेण्डर उसके इंतज़ार में वहाँ खड़ा हुआ है। परन्तु जब वे दोनों वहाँ से थोड़ी दूर चले तब हर्मिया इतनी थक गई कि वह चलने से बिल्कुल अशक्त हो गई। और लाइसेण्डर ने यह देखकर कहा कि "अब कुछ चिन्ता नहीं है। लाओ आज सो रहें। कल सवेरे ही यहाँ से भाग चलेंगे।" ऐसा विचार कर हर्मिया और लाइसेण्डर दोनों घास पर एक दूसरे से गज़ दो गज़ की दूरी पर लेट रहे। और लेटते ही सोगये। इतने में ओबरन का भेजा हुआ पक सुहागफूल लिये हुए वहाँ आपहुँचा और अथेंस के पुरुष और स्त्री को सोता हुआ देखकर मन में कहने लगा कि जिस स्त्री के विषय में ओबरन कह रहा था वह यही है और इसलिए उसने झट से उस फूल का रस लाइसेण्डर की आँख में निचोड़ दिया। क्योंकि वह यह समझा कि यह पुरुष इस स्त्री से स्नेह नहीं करता है, इसलिए ज्योंही यह जागेगा इसकी आँख इसी रमणी पर पड़ेगी और शीघ्रही इसके प्रेम में निमग्न हो जायगा।

यदि लाइसेण्डर पहले जाग कर हर्मिया को ही देखता तो किसी प्रकार का झगड़ा न होता। क्योंकि हर्मिया तो उसे जान से भी प्यारी थी परन्तु दैवगति से वहाँ एक और

बखेड़ा पड़ गया। जिस समय लाईसेएडर सो रहा था हैलीना उसी स्थान पर जा पहुँची। क्योंकि जब डाईमैट्रियस ने हैलीना के साथ अच्छा बर्ताव नहीं किया और क्रुद्ध होकर उसको मारने दौड़ा तो यह विचारी लाईसेएडर और हर्मिया की तलाश में इधर उधर मारी मारी फिरी। अन्त में उसी स्थान पर आ निकली और लाईसेएडर को सोता देखकर कहने लगी, "अरे यह तो लाईसेएडर है! क्या यह जीवित है या मर गया?" फिर उसे हाथ से झटक कर कहा, "श्रीमन्! यदि आप जीवित हों तो उठिए"।

इतने में लाईसेएडर की आँखों में सुहागफूल का रस असर करने लगा और आंख खुलते ही ज्योंही उसने हैलीना को देखा वह उसे चाहने लगा, और अपनी प्राणप्यारी हर्मिया की कुछ भी सुध न रही। वह हैलीना के प्रेम में इतना आसक्त हुआ कि अनेक प्रकार से उसके सौन्दर्य्य की प्रशंसा करने लगा। कभी कहता कि तुम हर्मिया से इतनी सुन्दर हो जितना कौए से हंस। कभी कहता कि प्यारी, मैं तुम्हारे लिए आग में भी कूद पड़ूँ। सारांश यह है कि जैसी प्रशंसा वह इस समय हैलीना की कर रहा था उससे एक प्रकार की उन्मत्तता प्रतीत होती थी। परन्तु विचारी हैलीना चुपचाप खड़ी हुई इस दृश्य की विचित्रता पर चकित हो रही थी। वह थोड़ी देर पूर्व ही देख चुकी थी कि लाईसेएडर हर्मिया से स्नेह करता था और उन दोनों में विवाह की प्रतिज्ञा होचुकी थी। अब थोड़ी सी देर में लाईसेएडर के विचारों को इस प्रकार बदला हुआ देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और मनमें कहने लगी कि लाईसेएडर अवश्य मेरे साथ कुछ न कुछ हँसी कर रहा है! संसार में कौन

ऐसा है जो हँसी कराना चाहता हो। दूसरे यह कि हैलीना अपने ही दुःखों से पीड़ित थी। ऐसी अवस्था में एक मित्र को हँसी करता हुआ देखकर उसे बड़ा कष्ट हुआ और कहने लगी, "हाय! हाय! मैंने हँसी कराने के लिए ही इस संसार में जन्म लिया था। इससे अधिक बुराई मेरे लिए क्या हो सकती है कि मेरा प्यारा डिमेट्रियस मुझसे अप्रसन्न है? हाय! लाईसेण्डर, तुमको मैं भद्रपुरुष जानती थी। क्या तुम भी इस विपद् में मेरे शत्रु हो गये और मेरी हँसी करते हो?"

यह कहकर हैलीना वहाँ से भाग निकली और लाईसेण्डर उसके पीछे पीछे चल दिया और हर्मिया को वहीं अकेला छोड़ गया।

जब हर्मिया अकेली वन में सो रही थी तब उसने एक स्वप्न देखा कि मेरी छाती पर साँप रेंग रहा है। इस भय से डर कर वह जाग उठी और चिल्लाई।

"हाय लाईसेण्डर! मुझे साँप के पंजे से छुड़ाओ!"

परन्तु वहाँ लाईसेण्डर कहाँ था? वह हैलीना के पीछे दौड़ रहा था! लाईसेण्डर को वहाँ न देखकर और अपने आपको अकेली पाकर उसे बड़ा ही खेद हुआ और वह अपने प्यारे की तलाश में इधर उधर उस भयानक वन में घूमने लगी।

डिमेट्रियस भी हैलीना को छोड़कर हर्मिया की तलाश में इधर उधर फिरता रहा। अन्त को थक कर घास पर एक जगह सो गया। ओबरन इसे यहाँ सोता और लाईसेण्डर को हैलीना के पीछे दौड़ता देखकर झट समझ गया कि एक से

बड़ी भारी भूल हुई। उसने लाईसेण्डर को डिमैट्रियस समझ लिया। ऐसा विचार कर ओबरन ने फूल का रस डिमैट्रियस की आँख में डाल दिया और जब डिमैट्रियस उठा तो हैलीना ही पहले उसके सामने पड़ी और वह झट उस पर आसक्त हो गया। थोड़ी देर पहले डिमैट्रियस उससे घृणा करता था। इसलिए हैलीना को उसके शब्दों पर कुछ विश्वास न हुआ और वह मन में कहने लगी, "हो न हो इन तीनों ने मिलकर मुझसे हँसी की हो। हाय! हर्मिया, तू भी मुझसे हँसी करती है?"

हर्मिया को भी हैलीना की भाँति बड़ा आश्चर्य हुआ। अभी थोड़ी देर पहले लाईसेण्डर और डिमैट्रियस दोनों उसको चाहते थे। अब पल भर में उलटी बात हो गई। वे दोनों हर्मिया से घृणा करने लगे और हैलीना को चाहने लगे। परन्तु हैलीना इसको हँसी समझती थी और हर्मिया को यह सब सचमुच प्रतीत होता था। इस प्रकार ये दोनों स्त्रियाँ जो एक समय एक दूसरे की परम प्यारी सखी गिनी जाती थीं थोड़ी सी देर में शत्रु बन गईं।

हैलीना क्रोध में आकर कहने लगी, "हे दुष्ट हर्मिया! तूने ही तो लाईसेण्डर से कह दिया है कि इस दुःखिया को चिढ़ाओ। तेरा दूसरा प्रेमी डिमैट्रियस अभी थोड़ी देर हुई मुझसे घृणा करता था और मुझे मारने दौड़ता था। और अभी तेरे कहने से वह मेरे रूप की प्रशंसा करता है। मुझको अप्सरा कहकर चिढ़ाता है! अगर तुम मेरे साथ कपट न करती तो वह मेरे साथ कभी ऐसा न करता! हाय हर्मिया, तुम दो पुरुषों से मिलकर अपनी सहेली को चिढ़ाती हो! क्या तुम बाल्यावस्था के स्नेह को भूल गईं? देखो, हम दोनों

किस प्रकार साथ साथ पढ़ा करती थीं, साथ साथ सिया करतीं और साथ साथ गीत गाया करती थीं। ऐसे प्रेम के पश्चात् ऐसा छल करना तुमको उचित नहीं है।"

हर्मिया—"बहन ! मुझे तुम्हारे इन शब्दों पर आश्चर्य होता है। मैं तुमसे छल नहीं करती। ऐसा मालूम होता है कि तुम्हीं मुझसे छल करती हो।"

हेलीना—"नहीं नहीं ! तुम एक दूसरे की ओर आँख मारती हो और जब मैं पीछे मुँह फेर लेती हूँ, तो चुपके से मेरी ओर मुँह बनाती हो ! और मेरे दुख पर खुश होती हो। यदि तुममें कुछ भी सभ्यता होती तो तुम ऐसा कदापि न करतीं"।

जब ये दोनों स्त्रियाँ यहाँ झगड़ रही थीं तब डिमैट्रियस और लाईसेण्डर में भी परस्पर झगड़ा हो गया क्योंकि वे दोनों हेलीना को चाहते थे। और झगड़ते झगड़ते वह एक कुंज में पहुँच गये कि वहीं युद्ध करें और जो कोई जीवित बचे वही हेलीना को ले ले।

जब वे दोनों वहाँ से चले गये तब परीराज ने, जो पक के साथ खड़ा खड़ा इस झगड़े को सुन रहा था, उससे कहा, "देखो पक ! यह तुम्हारी भूल है या तुमने जान बूझ कर ऐसा किया ?"

पक—"श्रीमहाराज ! मैंने जान बूझ कर ऐसा नहीं किया ! आप ही ने तो कहा था कि अथेंस-निवासियों को वस्त्रों से पहचान लेना। परन्तु मुझे इस भूल के लिए खेद नहीं है। क्योंकि ऐसा उत्तम तमाशा कभी किसीके देखने में नहीं आया।"

ओबरन ने कहा—"अच्छा पक! जो हुआ सो हुआ। अब इसका इलाज करना चाहिए। देखो तुमने सुना है कि लाइसेण्डर और डिमेट्रियस एक दूसरे से लड़ने जा रहे हैं। अब मेरी आज्ञा यह है कि तुम अज्ञात विद्या के बल से ऐसा कर दो कि बादल छा जायँ और सारे जङ्गल में अँधेरा हो जाय। जिससे इन दोनों प्रेम-उन्मत्त पुरुषों को एक दूसरे का पता न मिले। तुम अपनी आवाज़ इनकी सी कर लो और इनको बहका कर एक दूसरे से दूर ले जाओ। जब वे भटक भटक कर थक जायँ और सो रहें तब इस दूसरे फूल का रस लाईसेण्डर की आँख में डाल दो। इस फूल का यह प्रभाव है कि सुहाग-फूल का फल इससे जाता रहता है। इस-लिये जब लाईसेण्डर उठेगा तब वह हेलीना के प्रेम को भूल जायगा और जो स्वाभाविक प्रेम उसे हर्मिया के लिए था वही यार रहेगा। और इस प्रकार यह दोनों सुन्दरियाँ अपने अपने प्रीतम को पाकर आनन्दित रहेंगी। जाओ, तुम जल्दी करो और मैं अपनी टिटानियाँ के पास जाता हूँ। देखूँ वह किसके प्रेम में निमग्न हो रही है।"

जिस रात का वर्णन कर रहे हैं उसी रात अथेंस के कुछ गँवार मूर्ख लोग एक नाटक को दुहराने के लिए उसी वन में आये हुए थे। उनका प्रयोजन यह था कि अभ्यास हो जाने पर उसी नाटक को किसी दिन राजा के सम्मुख खेलें। यहाँ कुंज और झाड़ियों को पर्दा बना कर वे खेल रहे थे कि ओबरन आ पहुँचा। टिटानिया अभी सोती रही थी। वहाँ एक गधे का सिर पड़ा देखकर उसने उन नाटक खेलनेवालों में से एक के सिर पर लगा दिया।

जब वह मनुष्य गधे का सिर रक्खे हुए झाड़ी से स्टेज (रङ्गभूमि) पर आया तब उसके साथी खिलखिला कर हँस उठे। उस आदमी ने कहा, "तुम सब गधे हो। नाटक खेलते हो या हँसते हो?"

उन्होंने उत्तर दिया—"गधे हम हैं कि तुम? ज़रा शीशा तो देखो"।

परन्तु इसको क्या पता था कि मेरे सिर पर गधे का सिर लगा हुआ है। वह उनको गालियाँ देने लगा। उसके साथी भी इस भयानक रूप को देखकर घबरा गये। उन्होंने समझा कि यहाँ कोई भूत-चुड़ेलें वास करती हैं। बस वे जल्दी से वन छोड़ कर नगर को भाग गये। इतने में अँधेरा हो जाने के कारण इस गधे को रास्ता न मिला और उसी वन में गाने लगा।

टिटानिया इसकी गीत सुनकर जाग उठी। उसकी आँखों में सुहाग-फूल का असर होने लगा और वह इसके प्रेम में आसक्त होकर कहने लगी, "अरे यह तो कोई गन्धर्व गान कर रहा है! धन्य धन्य, कैसा अच्छा राग है! तुम बड़े रूपमान हो। पर यह तो बताओ क्या तुममें बुद्धि भी बहुत है?"

गधा बोला, "यदि मैं इस जङ्गल से निकल जाऊँ तो समझूँगा कि मुझमें काफ़ी बुद्धि है।"

प्रेमासक्त टिटानिया ने उत्तर दिया, "जङ्गल से मत जाओ। मैं कोई साधारण परी नहीं हूँ। मुझे तुमसे प्रेम है। मेरे साथ आओ और मेरी परियाँ तुम्हारी सेवा करेंगी"।

तब चार परियों को बुलाया और कहा, "इस सुन्दर भद्र पुरुष की सेवा करो । इसको अपना नाच दिखा कर खुश करो । इसे अँगूर खिलाओ, और मक्खियों से शहद लाकर इसको चखाओ"। फिर मोहित होकर कहने लगी, "प्रियतम ! यहाँ आओ। मेरे पास बैठो, मैं तुम्हें प्यार करूँ। अहा ! तुम्हारा मुँह कैसा सुन्दर है । आओ, मैं तुम्हारा मुखचुम्बन करूँ।"

परियों को देखकर गधे ने कहा, "मेरे सिर को खुज-लाओ।" टिटानिया ने कहा "प्यारे, क्या खाओगे ? अरी परियों, जाओ और मेरे प्यारे के लिए कुछ फल ले आओ ।"

इस गँवार को गधे का सिर लगा कर गधे की सी भूख भी लगने लगी थी। इसलिए वह कहने लगा, "मुझे तो थोड़े से मटर के दाने चाहिएँ। लेकिन मुझे नींद लगी है। मुझे सोने दो, कोई जगाना मत ।"

टिटानिया—"अच्छा प्यारे, तुम मेरी गोद में सो जाओ। अहा ! तुम मुझे कितने प्यारे हो !"

ओबरन ने यह देखकर कि रानी गधे को गोद में लिये बैठी है उसे लज्जा दिलाई। अब टिटानिया इस बात से कैसे इन-कार कर सकती थी ? जब उसकी आँखें खुलीं तब एक गधे को गोद में लिये देखकर वह स्वयं बड़ी लज्जित हुई और जब टिटानिया को चिढ़ाने के पश्चात् ओबरन ने उससे लड़का माँगा तो वह उसकी प्रार्थना को अस्वीकार न कर सकी और लड़के को दे दिया ।

जब ओबरन ने देखा कि टिटानिया खूब पछता चुकी है तो उसने दूसरे फूल का रस उसकी आँखों में डाल दिया। फिर तो टिटानिया अपनी स्वाभाविक अवस्था में आ गई ।

और उस गँवार को गधे का सिर लगाये देखकर कहने लगी "अरे ! न जाने मैं इस गधे पर कैसे मुग्ध हो गई। यह तो ऐसा बुरा दिखाई देता है।" अब ओबरन ने उस गँवार के सिर से गधे का सिर उतार लिया और उसे जङ्गल में पड़ा सोने दिया।

जब ओबरन और टिटानिया में इस प्रकार मेल हो गया तब राजा ने अपनी रानी को अथेंस के प्रेमी स्त्री-पुरुषों का हाल सुनाया। टिटानिया और ओबरन दोनों इन मनुष्यों की अन्तिम दशा को देखने चल दिये।

थोड़ी दूर चल कर उसी वन में उन्होंने दोनों पुरुषों और दोनों स्त्रियों को सोता हुआ पाया, क्योंकि पक अपने चातुर्य्य से इन सबको एक साथ ले आया था। और उसने लाई-सेण्डर की आँख से अपने सुहाग-फूल का प्रभाव भी दूर कर दिया था।

पहले पहल हर्मिया उठी और लाईसेण्डर को अपने निकट पड़ा देखकर रात की दशा पर बड़ा आश्चर्य करने लगी। लाईसेण्डर भी उठा और अपनी प्यारी हर्मिया को वहीं पड़ी देखकर एक दूसरे से रात की बातें कहने लगे कि क्या यह सब सच था अथवा केवल स्वप्न मात्र।

इतनी देर में हैलीना और डिमैट्रियस भी उठे और आराम से सोने के पीछे हैलीना की वह अशान्ति भी जाती रही। डिमैट्रियस अब भी उससे स्नेह की बातें करता था जिससे उसने समझा कि डिमैट्रियस सचमुच मुझसे प्रेम करने लगा है।

अब वह चारों स्त्री-पुरुष जो थोड़ी देर पहले एक दूसरे

के शत्रु हो गये थे फिर मिल गये और रात के समय जो कुछ लड़ाई-झगड़े हुए थे वे सब क्षमा कर दिये गये।

परन्तु हर्मिया को प्राणदण्ड मिलना निश्चय हो चुका था इसका प्रतीकार इस प्रकार हुआ। जब डिमेट्रियस हैलीना को चाहने लगा तो उसको हर्मिया के विवाह की इच्छा नहीं रही। अब सबने यह निश्चय किया कि डिमेड्रियस अर्थेस में जाकर ईजियस अर्थात् हर्मिया के पिता को समझावे और उसकी आज्ञा से हर्मिया का विवाह लाईसेण्डर से हो जाय। ऐसा होना अब बहुत सम्भव था क्योंकि डिमेट्रियस के हर्मिया से विवाह करने को राज़ी न होने पर और कुछ हो भी नहीं सकता था।

जब डिमेट्रियस इस शुभ काम के करने को जंगल से जा रहा था ईजियस भी उसी वन में आ निकला, क्योंकि जब उसने हर्मिया के घर से निकल जाने की ख़बर सुनी वह उसे पकड़ने के लिए प्रातःकाल ही चल दिया।

जब ईजियस को यह मालूम हुआ कि डिमेट्रियस हर्मिया से विवाह करना नहीं चाहता तब उसने अपनी लड़की को क्षमा कर दिया। जब यह सब बातें हो ही रहीं थी उसी समय राजा थीसियस कुमारी हिपौलीटा के साथ उस तरफ़ भ्रमण करता आया था। यह दिन राजा के विवाह का था और कुमारी हिपौलीटा आज महारानी बनने को थी। इसीलिए हर्षपूर्वक यह अपूर्व जोड़ा प्रातःकाल ही भ्रमण करने और प्रकृति देवी के दर्शन करने के लिए चल दिया था।

जब राजा थीसियस को लाईसेण्डर, हर्मिया तथा डिमेट्रियस और हैलीना के विवाह का शुभ समाचार मिला तब

उसने अपने विवाह में इन दोनों जोड़ों को निमंत्रित किया और आज्ञा दी कि हम सबके विवाह एक ही समय हमारे महल में होंगे।

जब यह सब लौट कर राजमहल में पहुँचे और सूर्य देव का प्रकाश समस्त जगत् में फैल गया तब बड़े आनन्द और समारोह से ये तीनों विवाह रचे गये और उत्सव के पश्चात् हैलीना और हर्मिया ने अपनी विचित्र कहानी सुनाकर सब श्रोतागण को प्रसन्न किया।

ओबरन और टिटानिया जिनके महान् उद्योग से उपर्युक्त विवाह हर्षपूर्वक सम्पूर्ण हुए अपने अदृष्ट स्वरूप से उत्सव में उपस्थित थे और उनको इस शुभ अवसर पर ऐसी प्रसन्नता हुई कि दूसरी रात को उन्होंने वन में समस्त परियों को इकट्ठा करके एक महान् उत्सव किया।

पाठकगण! सम्भव है कि आपमें बहुत से सज्जन परियों तथा उनके खेलों पर विश्वास न करते हों, और उनको इस विचित्र कहानी के पढ़ने से कुछ खेद हुआ हो। परन्तु ऐसे अविश्वासी पुरुषों से प्रार्थना है कि आप थोड़ी देर के लिए कृपा करके यही कल्पना कर लीजिए कि हम स्वप्न देख रहे थे। मुझे आशा है कि आपमें कोई मनुष्य ऐसा न होगा जो इस हानिरहित "ग्रीष्मरात" के स्वप्न से घृणा करे।

वेनिस नगर का व्यापारी।

(THE MERCHANT OF VENICE)

यूरोप महाद्वीप के दक्षिण ओर एक देश इटली है। इसके एक नगर वेनिस में शाईलौक नामी एक यहूदी रहता था। शाईलौक बड़ा महाजन था और इतना अधिक ब्याज लेता था कि ईसाई व्यापारियों को ऋण देकर और उनसे बहुत सा व्याज लेकर उसने थोड़े ही दिनों में बहुत सा धन एकत्रित कर लिया था। शाईलौक बड़ा निर्दयी और कठोर था और ऋणी मनुष्यों से इतनी सख़्ती से ऋण वसूल करता था कि सब भले आदमी उससे घृणा करते थे। यद्यपि वह समय पर ऋण दे देता था परन्तु जब वसूल करने का समय आता तब चाहे ऋणी मनुष्यों के पास खाने तक को न रहे और चाहे उनके बालबच्चे भूखों ही मरजावें परन्तु उसे अपने मूल और ब्याज से काम था। इस पाषाण-हृदय शाईलौक के विरुद्ध एक भद्रपुरुष अण्टोनियो था जो दरिद्र व्यापारियों को अवसर पड़ने पर कर्ज़ दे देता था और कभी उनसे एक कौड़ी भी ब्याज नहीं लेता था। जब व्यापारियों को इस प्रकार अण्टोनियो से कर्ज़ मिल जाता तब वे शाईलौक के पास नहीं जाते थे और शाईलौक को हानि होती थी। इसीलिए इन दोनों भिन्न भिन्न प्रकृति के मनुष्यों में बहुत वैर होगया और जब कभी हाटबाज़ार में अण्टोनियो और यहूदी में भेंट हो जाती तो अण्टोनियो शाईलौक को बहुत कुछ बुरा भला कहता था और उसे समझाता था कि इतना ब्याज लेना अच्छा नहीं है। शाईलौक दिखलाने को तो सन्तोष करके

चुप रह जाता था परन्तु उसके मन में क्रोध की आग दिन दूनी बढ़ती जाती थी।

अण्टोनियो वेनिस नगर के सब लोगों से अधिक दयालु और धर्मात्मा था। उसके आचरण प्रायः उन पुराने रोमन लोगों से मिलते जुलते थे जिनके कारण रोम * आज कल इतना प्रसिद्ध हो रहा है। सब लोग उसको बहुत प्यार करते थे परन्तु उसका सच्चा प्रेमी वेनिस का एक भद्रपुरुष बिसानियो था। बिसानियो एक बड़े घर में पैदा हुआ था और इसी कारण यद्यपि उसके पास बहुत धन नहीं था उसे बड़े ठाट से रहना पड़ता था। जब कभी बिसानियो को धन की ज़रूरत होती थी अण्टोनियो उसकी सहायता कर देता था और इस प्रकार ऐसा जान पड़ता था कि इन दोनों मित्रों का धन साझे का है।

एक समय बिसानियो अपने मित्र अण्टोनियो के पास आकर कहने लगा,

"मित्र अपनी दरिद्रता को दूर करने का एक उपाय मेरे चित्त में आया है। मेरी इच्छा यह है कि मैं एक धनी सुन्दरी के साथ विवाह करूँ। जिस सुन्दरी की ओर मेरा संकेत है वह अपने पिता के मर जाने के कारण अभी थोड़े दिन हुये बड़ी भारी सम्पत्ति की मालिक हो गई है। यदि मेरा विवाह इस रमणी से हो जाय तो निस्सन्देह मैं धनवान हो जाऊँगा। इसके पिता के सामने मैं बहुधा इसके घर जाया करता था

---

* रोम इटली देश में एक नगर है जिसका राज्य २५०० वर्ष हुए समस्त यूरोप, पश्चिमी एशिया और उत्तरी अफ्रीका में फैला हुआ था। यहाँ के लोग बड़े वीर और पराक्रमी होते थे।

और यद्यपि उसने कभी मुझसे इस सम्बन्ध में वार्त्तालाप नहीं किया परन्तु उसके कटाक्षों से ऐसी शब्दरहित सूचना मिलती थी जिससे आशा पड़ती है कि यदि मैं उससे विवाह का प्रार्थी हूँगा तो वह मुझे अस्वीकार न करेगी । परन्तु किसी नायिका के पास नायक बन कर जाना कोई साधारण बात नहीं है। इसके लिए बहुत कुछ तैय्यारियाँ करने की ज़रूरत होती है। आप जानते हैं कि मेरे पास कौड़ी भी नहीं है। इसलिए मैं इस समय आपकी सेवा में उपस्थित हुआ हूँ कि जहाँ आपने इससे पहले बीसियों बार अनेक प्रकार की सहायतायें की वहाँ उनके साथ हो आज मुझे तीन हज़ार रुपये उधार देकर मेरे साथ उपकार कीजिए जिससे मेरा मनोरथ सिद्ध हो सके।"

अण्टोनियो के पास उस समय दुर्भाग्यवश एक रुपया तक नहीं था। परन्तु उसे अपने मित्र विसानियो से सच्चा प्रेम था। इसलिए उसने विचारा कि चल कर शाईलौक से तीन हज़ार रुपया उधार ले लेना चाहिए । इस समय मित्र का काम सिद्ध हो जायगा और जब मेरे जहाज़ जो बहुत जल्द माल लेकर आने वाले हैं यहाँ आजावेंगे तब मैं शीघ्र ही इस रुपये को चुका दूँगा ।

ऐसा विचार कर दोनों मित्र शाईलौक के समीप चल दिये और वहाँ पहुँच कर उससे कहा, "शाईलौक, मुझे आज तीन हज़ार रुपयों की ज़रूरत है । तुम मुझे यह रुपया उधार देदो और जो चाहो सूद लेलो। मेरे जहाज़ अभी थोड़े दिनों में माल लेकर आने वाले हैं। ज्योंही वह आगये मैं व्याज-सहित सब ऋण चुका दूँगा।"

यह सुन कर शाईलौक अपने मन में विचारने लगा।

"देखो, यह पापी लोग मुझे नित्यप्रति कष्ट देते हैं। यदि एक बार इनको पकड़ पाऊँ तो मेरे मन की आग बुझ जावे। इस अण्टोनियो ने बार बार मुझे कोसा है। बाज़ार में जब यह मिलता है मुझे गालियाँ देता है; मेरी समस्त यहूदी जाति का तिरस्कार करता है। स्वयं बिना सूद के कर्ज़ देकर हम सबको सूदखोर कहता और हमारा अपमान करता है। हे ईश्वर! एक बार इसको मेरे हाथ में देदे फिर जो मैं इसे जीता छोड़ दूं तो मैं अपनी समस्त यहूदी जाति का शत्रु हूँ।"

शाईलौक को चुपचाप खड़ा और उत्तर न देता हुआ देख कर अण्टोनियो कहने लगा, "शाईलौक! तुमने सुना कि नहीं? क्या तुम मुझे तीनहज़ार रुपया उधार दे सकते हो?" शाईलौक ने उत्तर दिया, "महाशय, तुमने बाज़ार में मुझे कई बार गालियाँ दी हैं और अन्य व्यापारियों के सम्मुख मेरा अपमान किया है और मैंने हमेशा बातों का सहन किया है। क्योंकि तुम जानते हो कि हमारी समस्त यहूदी जाति सहनशीलता के लिए प्रसिद्ध है। तुमने मुझको नास्तिक, कूकुर, उचक्का और क्या कुछ नहीं कहा? तुम मेरी इस यहूदी पोशाक पर घृणा करते हो और मुझे कुत्ते की तरह लातों से ढकेलते हो। परन्तु अब तुमको ज़रूरत हुई और तुम मेरे पास आकर कहते हो कि शाईलौक तीन हज़ार रुपये उधार दो। परन्तु यह तो बताओ कि क्या कुत्ता उधार दे सकता है? क्या यह सम्भव है कि कूकुर रुपया दे सके। क्या मैं नम्रता से यह उत्तर देवूँ कि "श्रीमन्, आपने मुझे तिरस्कार किया है। अब इसके बदले में मैं तुमको रुपया कैसे दे सकता हूँ?"

अण्टोनियो ने कहा—"शाईलौक व्यवहार की बात व्यवहार कीतरह होती है। मैं इस समय ऋण लेने आया हूँ।

यदि तुम ऋण देना चाहो तो मित्र की तरह से मत दो किन्तु शत्रु की तरह दो। कागज़ लिखा लो जिससे यदि मैं अपनी प्रतिज्ञा का पालन न कर सकूं तो तुम नालिश करके कौड़ी कौड़ी वसूल कर लो। रहा तुम्हारी जाति का तिरस्कार। उसकी बात यह है कि मैं अब भी तुमसे घृणा करूँगा और बाज़ार में तुम्हारे व्याज और तुम्हारी क्रूरता की बुराई करूँगा। मैं अब भी तुमसे और तुम्हारी समस्त यहूदी जाति से घृणा करूँगा; चाहे तुम रुपया दो या न दो।"

शाईलौक ने कहा—"अरे भाई, तुम तो व्यर्थ इतना चिल्लाते हो। मैं तो तुमसे प्रेम करता हूँ और तुम शत्रुता। मैं चाहता हूँ कि किसी प्रकार तुमको अपना मित्र और प्रेमपात्र बनालूँ जिससे हमारा वैर दूर हो जाय। मैं उन सब बुराइयों को जो तुमने मेरे साथ की हैं भूल जाऊँगा और तुम्हें रुपया दूँगा। और देखो तुमसे व्याज भी न लूँगा।"

इस उत्तर से अण्टोनियो को बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि शाईलौक जैसे कठोर आदमी के मन में दया का भाव आना दुस्तर था। परन्तु शाईलौक ने अपने चेहरे पर बड़ी नम्रता धारण करली थी। वह फिर कहने लगा, "देखो अण्टोनियो! मैं यह सब तुम्हारी ख़ातिर से करता हूँ, जिससे तुम मुझे प्यार करने लगो और गालियाँ देना छोड़ दो। लो मैं तुम्हें रुपया देता हूँ और व्याज नहीं लूँगा। रहा काग़ज़, सो चलो वकील के पास चलें और केवल हँसी में एक काग़ज़ लिख दो कि अगर नियत समय पर रुपया न मिलेगा तो मैं तुम्हारे शरीर में से, चाहे जिस जगह से, आध सेर मांस काट लूँगा।"

अण्टोनि०—"अच्छा, मैंने माना। मैं काग़ज़ लिखे देता हूँ। मैं इतने पर भी यह समझूंगा कि यहूदी लोग बड़े दयालु होते हैं।"

बिसानियो के मन में इस अनोखी शर्त को सुन कर खटका हो गया और उसने अण्टोनियो से बहुत आग्रह किया कि तुम ऐसा काग़ज़ मत लिखो, परन्तु अण्टोनियो ने न माना और कहा कि "कोई चिन्ता नहीं है। मेरे जहाज़ नियत समय से बहुत पहले यहाँ आ जावेंगे और मैं इस रुपये से कई गुना रुपया दे सकूँगा। इसलिए ऐसे काग़ज़ पर हस्ताक्षर कर देने में कुछ संकोच की बात नहीं है।"

शाईलौक दोनों मित्रों के इस परस्पर विचार को सुन कर कहने लगा, "हे पिता *इबराहीम! देखो ये ईसाई लोग कैसे पेट-पापी होते हैं। जैसे धोखेबाज़ ये स्वयं हैं वैसा ही ये औरों को जानते हैं।"

फिर बिसानियो की ओर मुँह करके उसने कहा, "देखो बिसानियो! तुम जो इतनी शङ्का करते हो, यह तो बताओ कि यदि नियत समय पर रुपया न मिल सका तो मैं अण्टोनियो से क्या नक़दी ले लूँगा? आध सेर मनुष्य का गोश्त! यह तो इतना भी लाभदायक नहीं जितना बकरे या हरिण का! क्या आदमी के गोश्त को कोई खा सकता है? नहीं भाई! मैं तो केवल हँसी में यह काग़ज़ लिखाता हूँ। नहीं तो आन्तरिक प्रयोजन मेरा केवल इतना है कि किसी प्रकार अण्टोनियो से मित्रता हो जाय। यद्यपि बिसानियो अण्टोनियो को

---

* इबराहीम यहूदियों के एक प्रसिद्ध पूर्वज का नाम है जिसका नाम यहूदी लोग लिया करते हैं।

बहुत कुछ समझाता रहा कि इस प्रकार अपने जीवन को सङ्कट में डालना अच्छा नहीं है किन्तु अएटोनियो ने एक न मानी और तीन हज़ार मुद्रा लेकर काग़ज़ पर हस्ताक्षर कर दिये।

अपने प्यारे मित्र से तीन हज़ार रुपया लेकर, जिनको अएटोनियो ने अपने प्राणों को सङ्कट में डालकर उधार लिया था, बिसानियो ने चलने की तैयारियाँ कर दी और बड़े समारोह के साथ ग्रेशियानो नामक एक भद्रपुरुष को साथ लेकर अपनी प्रियतमा के घर को चल दिया।

यह सुन्दरी जिसके धन तथा हाथ की अभिलाषा बिसानियो के मन में उत्तेजित हो रही थी, वेनिस के निकट ही बेलमाएट नामी नगर में रहती थी। इसका नाम पोर्शिया था और यह रूप, लावएय, तथा गुणों में उस जगत् प्रसिद्ध पोर्शिया* से कुछ कम न थी जो कैटो की लड़की और ब्रूटस की स्त्री थी।

ऐसी गुणवती स्त्री के लिए पति भी ऐसा ही गुणवान और योग्य चाहिए था। परन्तु इन सब बातों के अतिरिक्त एक और मुश्किल बात यह थी कि पोर्शिया के पिता ने मरते समय उसके विवाह के लिए एक शर्त लगा दी थी। उसने तीन सन्दूक बनवाये, एक सोने का, दूसरा चाँदी का और तीसरा शीशे का। उन तीनों में से किसी एक में पोर्शिया की

* ईसा से लगभग ५० वर्ष पूर्व रोम में पोर्शिया बड़ी गुणवती स्त्री हो गई है। वह एक महापुरुष कैटो की लड़की थी और इसका विवाह एक बड़े आदमी ब्रूटस के साथ हुआ था। हम ब्रूटस का कुछ हाल "जूलियस सीज़र" में लिखेंगे।

तसवीर लेकर बन्द कर दी और उसकी कुंजियाँ पोर्शिया को दे दीं। अब शर्त यह थी कि जो कोई पोर्शिया के विवाह का प्रार्थी हो वह इन तीनों सन्दूकों में से एक को पसन्द कर लेवे। यदि उस सन्दूक में पोर्शिया की तसवीर निकले तो उससे उसका विवाह हो जाय। यदि उस सन्दूक में तसवीर न निकले तो वह तिरस्कृत और अस्वीकृत किया जाय। फिर उसको पोर्शिया से बात चीत करने की भी आज्ञा न थी। परन्तु उसे शपथ दिला दी जाती थी कि वह कभी इस समाचार को किसीसे न कहे। यदि तीन विवाह की इच्छा करने वाले पुरुषों में से कोई भी इस तसवीर के निकालने में सफल न हो सके तो पोर्शिया आयुभर अविवाहिता रहे। यह नियम उसने इसलिए लगा दिया था कि उसकी सर्व-गुण-सम्पन्न कन्या को कोई मनुष्य सहज में ही न ले जा सके किन्तु यह रत्न केवल उसीको प्राप्त हो सके जिसका भाग्य बहुत बड़ा हो।

वैसे तो ऐसी उत्तम स्त्री से विवाह करना कौन नहीं चाहता था परन्तु उनकी इच्छा प्रबल न होने के कारण किसी से परीक्षा नहीं ली गई। अब तीन मनुष्य विवाह की इच्छा करके आये जिनमें तीसरा बिसानियो था। यहाँ हम उन तीनों का क्रमशः हाल लिखते हैं।

पहले पहल इस रूपवती प्रमदा से सम्बन्ध करने के लिए मराको देश का राजा आया। इसके साथ बहुत से मनुष्य नौकर-चाकर थे और इस महान् पुरुष को अपने पद की उच्चता के कारण पूर्ण आशा थी कि अवश्य ही मेरा विवाह पोर्शिया के साथ हो जायगा।

पोर्शिया ने अपने राज-अतिथि का बड़ा आदर सत्कार किया और जब विवाह का विषय छिड़ा तब अपने पिता की नियत की हुई शर्त बताई। तीनों सन्दूक़ उसके सामने रक्खे गये और पोर्शिया ने मराको के राजा से प्रार्थना की कि महाराज, आप इनमें से कौनसा पसन्द करते हैं?

राजा ने तीनों बक्सों को बड़े ध्यान से देखा और उलटने पलटने से उसे मालूम हुआ कि सन्दूकों में एक एक काग़ज़ का टुकड़ा लगा हुआ है और उस पर कुछ लिखा हुआ है।

सोने के बक्स पर यह लिखा हुआ था "मैं, वह वस्तु हूँ जिसकी खोज में सारी दुनिया मारी मारी फिरती है"।

चाँदी के सन्दूक़ का लेख यह था "जो मुझे पसन्द करेगा उसको उसके योग्य वस्तु अवश्य मिलेगी। इसमें कुछ भी सन्देह न करना चाहिए।"

शीशे के सन्दूक़ पर यह लिखा हुआ था "जो मुझे ग्रहण करेगा उसे अशान्ति और आत्म-विसर्जन होगा।"

मराको नरेश ने फिर इन तीनों सन्दूक़ों को भली-प्रकार देखा और बार बार लेखों को पढ़कर मनमें विचारा। तत्पश्चात् सीसे का बक्स उठाकर कहा, "नीच शीशे के लिए ऐसे उत्तम रत्न छोड़े नहीं जा सकते। चल, मैं तुझे पसंद नहीं करता।"

फिर चाँदी के सन्दूक़ की ओर देखकर कहा, "इस पर लिखा है कि इसका ग्रहण करनेवाला अपने योग्य वस्तु को पायेगा। मैं सर्वथा पोर्शिया के योग्य हूँ। क्यों न मैं इसी सन्दूक़ को छाँट लूँ"। फिर सोने की सन्दूक़ की ओर देखकर

कहा, यहाँ तो यह लिखा है कि "वह चीज़ मिलेगी जिसके लिए संसार मारा मारा फिरता है।" ओ हो ! वस्तुतः पोर्शिया ऐसी ही अपूर्व रमणी है। ऐसी लड़की को विवाहने की किसे चाह न होगी ? ठीक ठीक ! मैं तो सोने के सन्दूक़ को ही पसन्द किये लेता हूँ क्योंकि पोर्शिया जैसी रूपलावण्यवती की तसवीर चाँदी और सीसे के सन्दूक़ में क्यों होगी ? ऐसा विचार कर पोर्शिया से कहा, "लो प्यारी ! मैं सोने के सन्दूक़ को लेता हूँ। खोलो तो सही। इसमें तुम्हारी तसवीर है या नहीं।"

लेकिन अभागे मराको-नरेश की आशा पूरी नहीं हुई। जब सोने का बक्स खोला गया तब उसमें कुछ न निकला। हाँ एक कागज़ पर यह तो लिखा रक्खा था, "जो बाहर के रूप पर मरता है उसकी यही दशा होती है।"

इस पर मराको-नरेश तो अपना सा मुँह लेकर चलते हुये। अब आरागन देश के राजा आये। इनका भी ऐसा ही सत्कार किया गया और सन्दूक़ लाकर उनके सामने रख दिये गये। शीशे का सन्दूक़ देखकर वह कहने लगा, "हा ! दुष्ट सीसे ! तुझे इतना अभिमान है ! भला तुझमें ऐसी क्या वस्तु है जिसे मनुष्य अशान्ति होते हुए भी ग्रहण करेगा ? चल हट।"

फिर सोने का सन्दूक़ हाथ में लेकर कहा "जो इसे लेगा उसे वह चीज़ मिलेगी जिसे संसार भर चाहता है। क्या अन्य साधारण मनुष्यों की भाँति मैं भी हूँ ? नहीं नहीं कदापि नहीं। मैं उस चीज़ को लेकर क्या करूँगा जिसे सभी चाहते हैं ? सोने के बक्स! तू भी यहीं रह।" फिर चाँदी के संदूक़ का

लेख पढ़कर कहा, "बस बस, ठीक यही संदूक है जिसमें पोर्शिया की तसवीर है। यह मनुष्य को उसीके योग्य चीज़ देगा और मैं पोर्शिया के योग्य हूँ। अच्छा इसीको लो।"

परन्तु आरागन नरेश को भी धोखा हुआ। संदूक खोलने पर एक कागज़ के टुकड़े के सिवाय और कुछ नहीं था और उस पर लिखा हुआ था "अरे मूर्ख! तुझे इतना भी ज्ञान न हुआ कि चमकीली चीज पर मोहित होगया! जो तुझे कुछ भी समझ होती तो इसे न लेता। बस तू इसी योग्य है।" आरागन-नरेश भी हताश होकर चले गये।

अब बिसानियो को इसी परीक्षा से पाला पड़ा। हम ऊपर कह चुके हैं कि पोर्शिया बिसानियो से प्रेम करती थी और उससे विवाह करना चाहती थी। पर इस कठिन शर्त को देखकर उसका मुख मलिन था। पहले दो पुरुषों को परीक्षा में पूरा उतरते न देखकर उसे हर्ष हुआ था क्योंकि वे दोनों उसके योग्य न थे, परन्तु बिसानियो के विषय में उसे यह भय था कि यदि बिसानियो परीक्षा में पूरा न उतरा तो उसका सम्बन्ध सदा के लिए उससे छूट जायगा। इसलिए उसने बिसानियो से प्रार्थना की कि "महाराज, परीक्षा देने से पहले थोड़े दिनों आप यहाँ रहें, जिससे मैं अपने मन की बातें आपसे कर सकूँ क्योंकि यदि आप परीक्षा में उत्तीर्ण न हुए तो मुझे मरणपर्यन्त आपके दर्शन न होंगे।"

बिसानियो को यह जान कर तो हर्ष हुआ कि पोर्शिया उससे प्रेम करती है परन्तु साथ ही विकट परीक्षा का बखेड़ा उसके चित्त को दुःख देने लगा।

एक बार पोर्शिया के मन में यह आया कि चुपके से बक्स के भेद को बिसानियो से कहदूँ जिससे इच्छा के विफल होने

का डर जाता रहे। परन्तु फिर अपने पिता की प्रतिज्ञा और सत्यव्रत के पालन का विचार कर के उसका हृदय काँप उठा और उसने दृढ़ निश्चय कर लिया कि चाहे जो कुछ हो मैं कभी अपने पिता की प्रतिज्ञा का भङ्ग न करूँगी।

विसानियो ने भी कहा कि "सुन्दरी, कुछ चिन्ता मत करो। जैसा मेरे भाग्य में होगा वही होगा। अन्यथा नहीं हो सकता। मैं परीक्षा के लिए तैय्यार हूँ।"

तीनों सन्दूक़ विसानियो के सन्मुख लाये गये और पोर्शिया थर थर लतावत् काँपने लगी। "परिणाम न जाने क्या हो" ऐसा विचार कर उसका हृदय धड़कता था।

विसानियो ने ईश्वर का नाम लेकर सन्दूक़ उठा लिये और सोने के सन्दूक़ का लेख पढ़ कर कहने लगा "अरे इसमें तो संसार की कथा लिखी हुई है। सच है, दुनिया बाहरी चटक-मटक पर मोहित हो जाती है और वास्तविक तत्त्व की परवाह नहीं करती। मैं तत्त्व को ढूँढ़ना चाहता हूँ। इसलिए हे स्वर्ण, तुमको मैं ग्रहण नहीं कर सकता।" फिर चाँदी के सन्दूक़ को देखकर कहा, "तुम भी मेरे योग्य नहीं हो। देखो चाँदी, कितने हाथों में नित्यप्रति आती जाती है और बाज़ार में इसी द्वारा चीज़ें बिकती और मोल ली जाती हैं। परन्तु प्यारी पोर्शिया कोई मोल लेने या बेचने की चीज़ नहीं है। इसकी मूर्त्ति इसमें नहीं हो सकती।"

फिर शीशे का सन्दूक़ उठाकर कहा, "ठीक तो है। जो मनुष्य पोर्शिया से विवाह करेगा उसे अशान्ति अवश्य होगी। भला प्रेम से अधिक कौन सी अशान्ति हो सकती है? क्या जो पोर्शिया को ग्रहण करेगा वह आत्मत्याग न करेगा। मैं तो इसी सन्दूक़ को पसन्द करता हूँ। लो प्यारी, खोलो।"

पोर्शिया ने हर्ष के मारे चाबी फेंक दी और बिसानियो ने खोलकर देखा तो उसकी चाही हुई तसवीर वहाँ रक्खी हुई थी। उस समय इन दोनों को जो खुशी हुई उसका वर्णन क़लम से नहीं हो सकता। यह दृश्य तो देखने ही योग्य था और भाग्यवान् होगा वह मनुष्य जिसने उसे देखा होगा।

बिसानियो थोड़ी देर टकटकी लगाकर उस तसवीर को देखता रहा, फिर उसे सामने से हटाकर कहने लगा, "जब साक्षात् प्यारी मेरे सामने खड़ी है तब फिर उसकी तसवीर की आवश्यकता ही क्या है?" अब उसे इसी बक्स में एक काग़ज़ मिला जिस पर लिखा हुआ था "तुम बड़े भाग्यवान् हो जो तुम्हें ऐसी अनुपम स्त्री मिली। तुम बाहरी चमक-दमक पर नहीं गये। इसीलिए तुमको यह इनाम मिला। इसको लेकर चिरकाल तक सुखी रहो। जाओ अपनी प्रियतम का पाणिग्रहण करो।"

थोड़े दिन ये दोनों बड़े प्रेम से रहे। बिसानियो ने पोर्शिया से स्पष्ट कह दिया, "प्रिये, मैं निर्धन हूँ। जो कुछ धन मेरे पास है वह मेरा उच्चकुल है। इसके सिवाय मेरे पास कुछ नहीं है। मैं नहीं जानता कि किस प्रकार तुम जैसी वधू को ग्रहण करूँ।" पोर्शिया तो पहले से ही उसे चाहती थी। उसके पास धन बहुत था। उसे निर्धन पति की निर्धनता से प्रयोजन ही क्या था? वह हाथ जोड़कर नम्रता से कहने लगी, "प्रियतम! तुम ऐसा न कहो। कौन सा धन ऐसा है जो तुमसे बड़ा हो? मैं मूर्खा किस योग्य हूँ कि आप जैसे सुयोग्य पुरुष की पत्नी बन सकूँ। स्वामिन्, यदि मैं सौगुनी रूपवती और हज़ारगुनी धनवती होती तो कहीं आपके

चरणों की सेवा के योग्य हो सकती थी। नाथ! कृपा करके मुझ दासी को ग्रहण कीजिए"।

"स्वामिन्! मैं मूर्ख और अशिक्षित हूँ, परन्तु अभी मेरी आयु इतनी नहीं हुई कि कुछ सीख न सकूँ। आप जो कुछ पढ़ावेंगे शीघ्र ही सीखलूँगी। आप जिस रास्ते चलावेंगे उसी रास्ते चलूँगी। आज तक मैं इस सम्पत्ति और इन नौकरचाकरों की मालिक थी परन्तु आज से ये सब और मैं अपने तन-मन-धन सहित आपके अधीन हूँ। आप अपने निर्धन होने पर इतना सोच क्यों करते हैं? अब आप निर्धन नहीं हैं किन्तु यह सब धन आपका ही है। लीजिए (हाथ से अँगूठी उतारकर) इस अँगूठी को मेरे लिए पहन लीजिए और मैं मरणपर्य्यन्त आपकी होगई।"

बिसानियो स्त्री-चरित्र की ऐसी महत्ता को देखकर ऐसा चकित हुआ कि उसके मुख से धन्यवाद के शब्द भी न निकल सके। यह देखकर कि ऐसी धनवती और रूप-लावण्य-युक्त पोर्शिया मुझ जैसे दरिद्र से इतना प्रेम करती है वह फूला नहीं समाया और अँगूठी को पहन कर प्रतिज्ञा की कि मैं इसे कभी अँगुली से न निकालूँगा।

जिस समय पोर्शिया ने बिसानियो को अपना पति बनाने की इस प्रकार सुन्दरता से प्रतिज्ञा की उस समय बिसानियो का साथी ग्रेसियानो और पोर्शिया की सहेली नैरीसा भी वहाँ मौजूद थी। ग्रेसियानो बिसानियो का मनोरथ पूरा होता हुआ देख कर स्वयं भी विवाह करने की इच्छा करने लगा और अपने स्वामी से प्रार्थना की कि यदि आप आज्ञा दें तो मैं भी विवाह करलूँ"।

बिसानियो—"हे ग्रेशियानो, यदि तुमको अपने योग्य रमणी मिल सके तो तुम्हारा विवाह भी इसी समय देखकर मुझे अत्यन्त आनन्द होगा।"

ग्रेशियानो—"श्रीमन्, मैं पार्शिया की सहेली नैरीसा को चाहता हूँ। और नैरीसा भी मुझसे प्रेम करती है और कहती है कि यदि पोर्शिया आज्ञा देगी तो मैं भी तुम्हारे साथ विवाह कर लूँगी।"

पोर्शिया ने नैरीसा से पूछा कि क्या यह बात ठीक है। नैरीसा ने उत्तर दिया कि "श्रीमतीजी! बात तो ठीक है परन्तु आपकी अनुमति चाहिए"।

यह सुनकर पोर्शिया और बिसानियो दोनों ने बड़ी प्रसन्नता से अपने साथी और सहेली को आज्ञा दी कि "हमारे विवाह के साथ तुम्हारा विवाह भी अवश्य हो जाय"।

इस प्रकार शुभ मुहूर्त नियत हो गया। दो विवाह रचाये गये, एक बिसानियो का पोर्शिया से, दूसरा ग्रेशियानो का नैरीसा से।

जब बेलमाएट में इस प्रकार आनन्द-मङ्गल हो रहे थे उस समय दैवगति से एक आकस्मिक घटना हुई जिसने सब आनन्द को मिट्टी में मिला दिया। एक दिन जब पोर्शिया और बिसानियो आपस में प्रेमालाप कर रहे थे बिसानियो के नाम एक चिट्ठी आई जिसको पढ़ कर उसका मुँह ऐसा पीला पड़ गया कि पोर्शिया ने समझा कि इसके किसी प्यारे मित्र की मृत्यु का पत्र है। और उसने बड़े आग्रह से चिट्ठी का विषय पूछा। बिसानियो ने उत्तर दिया, "प्रिये, यह एक ऐसा दुःखमय पत्र है कि जिसका वर्णन नहीं

हो सकता ! हे प्यारी, जब मैंने पहले पहल तुमसे प्रेम प्रकट किया था उस समय साफ़ साफ़ कह दिया था कि धन के नाम मेरे पास शून्य ही है और यदि मुझे किसी बात का अभिमान है तो केवल अपने उच्च कुल का । परन्तु मैं एक बात कहना भूल गया था अर्थात् मेरे पास शून्य से भी कम धन है, अर्थात् मैं ऋणी हूँ ।"

तब बिसानियो ने शनैः शनैः सब हाल अण्टोनियो की मित्रता, शाईलौक के ऋण, काग़ज़ पर हस्ताक्षर करने और आध सेर मांस के काटने की बात सुनाई ।

जब वह यह सब हाल कह चुका तब अण्टोनियो का पत्र पढ़ा, जिसके शब्द ये थे, "मित्र बिसानियो ! मेरे जहाज़ डूब गये और मैं यहूदी का रुपया नियत समय तक नहीं चुका सका । अब शर्त के अनुसार आध सेर मांस मेरे हृदय में से काटा जायगा, जिससे मैं जीवित नहीं रह सकता । मेरी इच्छा यह है कि मरने के पहले एक बार तुमको देख लूँ । परन्तु जैसा मन में आवे करो । यदि प्रेम के कारण नहीं आ सकते तो पत्र के कारण न आओ" ।

पोर्शिया ने यह सुनकर कहा, "नाथ, सब काम छोड़ दो और जल्दी से प्रबन्ध करके चले जाओ । तीन हज़ार क्या इससे बीसगुना रुपया ले जाओ और ख़र्च कर दो । कहीं ऐसा न हो कि ऐसा सच्चा मित्र मेरे बिसानियो की भूल से कुछ भी हानि उठावे । परन्तु जाने से पूर्व विवाह होजाना अच्छा है जिससे आपको नियमानुसार मेरी सम्पत्ति पर स्वत्व (क़बज़ा) प्राप्त हो जाय और आप उसे भली प्रकार बिना किसी संकोच के व्यय कर सकें" ।

बस उसी दिन पोर्शिया और बिसानियो तथा नैरीसा और ग्रेशियानो का विवाह जल्दी से होगया और बिसानियो अपने साथी समेत झट से वेनिस नगर को चल दिया। वहाँ जाकर देखा कि अण्टोनियो क़ैद में पड़ा है। चूँकि रुपया देने का नियत समय बीत चुका था, बिसानियो ने यद्यपि बहुत कुछ रुपया देने की कोशिश की परन्तु शाईलौक ने एक न मानी और यही कहा कि मैं केवल आधसेर मांस लूँगा। इस अभियोग के चलाने के लिए एक दिन नियत हुआ जब कि वेनिस का ड्यूक (राजा) इस बात का न्याय करने वाला था और बिसानियो बड़ी चिन्ता से इस बात की प्रतीक्षा (इंतज़ार) कर रहा था कि देखें क्या होता है।

जब पोर्शिया अपने पति से पृथक् हुई थी उस समय उसने हँसते मुख दिलासा देकर कहा था कि "स्वामी, आप लौटते समय अपने मित्र अण्टोनियो को अवश्य यहाँ लेते आना, परन्तु पीछे से विचार कर उसके मन को बड़ी चिन्ता हुई क्योंकि अण्टोनियो का ऐसी दशा में बचना बहुत ही कठिन था। अब उसने इरादा कर लिया कि जिस प्रकार हो सके अपने पति के सच्चे मित्र को बचाने की कोशिश करनी चाहिए।

बिलारियो नामी एक बड़े बुद्धिमान् वकील से पोर्शिया का कुछ सम्बन्ध था। इसलिए उसने सब मुक़द्दमा उसे कह सुनाया और उसकी सम्मति पूछी और यह भी प्रार्थना की कि वकीलों के पहनने के वस्त्र भी भेज दो। बिलारियो ने ऐसाही किया और अपने शुभ विचार के साथ वे सब चीज़ भी भेज दीं जिनकी एक वकील को कचहरी में ज़रूरत होती है।

पोर्शिया अपनी सहेली नैरीसा के साथ मर्दाने कपड़े पहन कर वेनिस को चलदी। पोर्शिया के कपड़े वकीलों के से थे और नैरीसा उसकी क्लर्क बन गई। पोर्शिया ने अपना नाम डाक्टर बलथज़ार रक्खा और जिस समय ये दोनों वेनिस की कचहरी में पहुँचे उस समय अण्टोनियो का मुक़द्दमा सुना जाने को था और ड्यूक मन्त्रीगण सहित वहाँ बैठा हुआ था।

ड्यूक ने पुकार कर कहा, "क्या अण्टोनियो हाज़िर है?"

अण्टोनियो—"महाराजाधिराज! आपका दास हाज़िर है।"

ड्यूक—"मुझे शोक है कि तुमको ऐसे सख़्त आदमी से पाला पड़ा जिसमें कुछ भी दया नहीं है।"

अण्टो०—"मैं सुन चुका हूँ कि हुज़ूर ने इसे मुलायम करने की बहुत कोशिश की। पर अब वह नहीं मानता, और कानून के अनुसार मेरी जान नहीं बच सकती। इसलिए मुझे सन्तोष है, देखें तो सही! मेरी हिम्मत बड़ी या इस यहूदी की कठोरता बड़ी।"

ड्यूक—"शाईलौक हाज़िर है।"

शाईलौक—"श्रीमहाराज! मैं यह हूँ।"

ड्यूक—"शाईलौक! हम सबका यह विचार हो रहा है कि तेरी कठोरता बहुत ही बढ़ी हुई है। परन्तु हमारा यह भी विश्वास है कि इसके पश्चात् तुझे दया आवेगी और तू पश्चात्ताप करेगा। हम चाहते हैं कि तू इस पर दया कर और ऐसी दशा में जब कि अण्टोनियो के जहाज़ डूब गये हैं और वह इतना तबाह होगया है। तुझे उचित है कि मूलधन में से भी कुछ छोड़ दे। ऐसी तबाही की

हालत में तुर्क और तातारी लोग भी जिन्होंने कभी दया का नाम तक नहीं सुना अपनी कठोरता कम कर देते हैं। शाईलौक! क्या कहता है?"

शाईलौक—"महाराज! मैं प्रतिज्ञा कर चुका हूँ कि काग़ज़ की शर्त पूरी हो! अगर आप क़ानून के अनुसार नहीं चलते तो जाइए। ईश्वर आपको देखेगा! और आपने जो स्वतंत्रता प्रजाको देने के लिए क़सम खाई वह झूठी खाई। आप जो यह पूछते हो कि आदमी के आधसेर गोश्त का क्या करोगे, सो इसका उत्तर मैं नहीं देता। मेरा मन यही है। इससे किसीको क्या?"

बिसानियो—"अरे कठोर! यह तो कोई उत्तर नहीं है।"

शाईलौक—"अरे तो क्या मैं तुझे ख़ुश करने के लिए उत्तर देता हूँ।"

बिसानि०—"तीन हज़ार के बदले छः हज़ार लेले।"

शाईलौक—"अगर छः हज़ार रुपयों में से एक एक के बदले छः छः रुपये दिये जाँय तो भी न लूँगा।

ड्यूक—"जब तुझे दया नहीं है तब ईश्वर तुझपर कैसे दया करेगा?"

शाईलौक—"मैंने क्या पाप किया है कि डरूँ? क्या तुम्हारे यहाँ बहुत से गुलाम नहीं हैं जिनको तुम गधे और घोड़ों की तरह रखते हो? क्या मैं कह सकता हूँ कि इन पर दया करके छोड़ दो या इनको अपनी लड़कियों से विवाह दो, या इनको ऐसे ही मुलायम वस्त्र बनवादो जैसे तुम्हारे हैं? तुम यही कहोगे कि गुलाम हमारे हैं। हम

जो चाहें सो कर सकते हैं। बस, मैंभी यही कहता हूँ। आध सेर गोश्त मेरा है। मैंने इसे बड़े मोल में लिया है और लूँगा। यदि आप न्याय नहीं करते तो ईश्वर आपको और आपके देश को दण्ड दे।"

जब ये बातें हो रहीं थीं उसी समय पोर्शिया न्यायालय में पहुँच गई और एक पत्र बिलारियो का ड्यूक को दिया जिसका आशय यह था—"मेरी इच्छा थी कि अण्टोनियो के मुक़द्दमे को मैं ही चलाता परन्तु रोगवश नहीं आ सकता! इसलिए डाक्टर बलथज़ार को भेजता हूँ। यह बड़े योग्य पुरुष हैं। आप कृपा करके इनको मेरी ओर से विकालत करने की आज्ञा दीजिए।"

पोर्शिया की अल्प आयु तथा स्वरूप को देखकर सब सभासद् चकित हो गये और ड्यूक ने बड़े सम्मान से उसे बिठा लिया और पूछा, "क्या आपको मुक़द्दमे का हाल मालूम है?"

पोर्शि०—"राजन्, सब हाल मालूम है। इनमें से कौन सा व्यापारी है और कौन सा यहूदी?"

ड्यूक—"अण्टोनियो और शाईलौक, तुम दोनों आगे खड़े हो जाओ।"

पो०—क्या तुम्हारा नाम शाईलौक है?

शाई०—हाँ, मेरा नाम शाईलौक है।

पो०—"तुम्हारा मुक़द्दमा बड़ा विलक्षण है। परन्तु वेनिस के नियम के अनुसार किसीको विरोध करने का अधिकार नहीं। अच्छा!" (अण्टोनियो से) "और तुम्हारे ऊपर नालिश की गई है?"

अण्टो०—जी हाँ।

पो०—क्या तुमने कागज़ लिखा ?

अण्टो०—हाँ।

पो०—तो यहूदी को तुम पर दया करनी चाहिए।

शाई०—क्यों ?

पो०—"इसलिए कि दया बड़ा भारी गुण है। यह स्वर्ग से मर्त्यलोक में अमृतवर्षा की भाँति बरसती है। इससे दोनों को सुख होता है। अर्थात् जो दया करता है और जिसपर दया की जाती है दोनों ही दया से आनन्द पाते हैं। दया सब शक्तियों में प्रबल है। राजों में यह गुण अपने राज-मुकुट से भी अधिक शोभा देता है। मुकुट केवल भौतिक स्वत्व को प्रकट करता है, परन्तु दया मुकुट से भी सर्वोपरि है। क्योंकि दया राजों के हृदय में विराजती है। दया ईश्वर का गुण है, और इसलिए हमारे भौतिक राजों में जितनी अधिक दया हो उतने ही वे ईश्वर के समान हैं। इसलिए हे यहूदी, तू न्याय चाहता है, परन्तु केवल न्याय से हम मोक्ष नहीं पा सकते, जब तक कि ईश्वर हम पर दया भी न करे। हम ईश्वर से दया की प्रार्थना करते हैं, इसलिए हमको भी दूसरों पर दया करनी चाहिए। मैंने यह इसलिए कहा है कि शायद तुझे कुछ दया आ जाय। क्योंकि यदि तू न्याय ही चाहेगा तो वेनिसराज्य के नियमानुसार इस व्यापारी को दण्ड मिलेगा।"

शाईलौक—मेरे कर्म मेरे साथ। मैं तो न्याय ही चाहता हूँ। जो कागज़ में लिखा है वही मुझे चाहिए।

पोर्शिया—क्या वह रुपये नहीं दे सकता ?

विसानियो—हाँ रुपया यह रहा। यदि चाहो तो दूना दूँ। नहीं, नहीं, दसगुना देने को तैयार हूँ। यदि यह भी काफ़ी नहीं है तो समझना चाहिए कि वैरभाव से लोग धर्म छोड़ देते हैं। हे महाशय, मेरी सविनय प्रार्थना है कि आप किसी तरह क़ानून को इधर उधर फेर दो। अगर बड़े लाभ के लिए थोड़ा सा झूँठ भी बोलना पड़े तो भी कुछ हानि नहीं।

पोर्शिया—क़ानून में कोई फेरफार नहीं कर सकता, नहीं तो क़ानून ही काहे का! अगर ऐसा हो तो लोग कल से ही क़ानून के विरुद्ध चलने लगेंगे।

शाईलौक—वकील महाशय, आप बड़े बुद्धिमान् हैं। ऐसी थोड़ी आयु और इतनी बड़ी बुद्धि! आहा! स्वयं दानियाल * उतर आये हैं!

पोर्शि०—ज़रा काग़ज़ तो दिखाओ।

शाईलो—लीजिए परमपूज्य! लीजिए।

पो०—अरे तिगुना रुपया मिलता है फिर क्यों नहीं लेते ?

शाईलौ०—व्रत! श्रीमन्, व्रत! मैंने ईश्वर को साक्षी देकर व्रत किया है। इसका पालन करना आवश्यक है।

पो०—इस काग़ज़ से तो आध सेर मांस तुम को मिलना चाहिए परन्तु दया करो तिगुना रुपया ले लो और मुझे यह काग़ज़ फाड़ डालने दो!

---

*दानियाल यहूदियों के पूर्वजों में एक बड़ा धर्मात्मा पुरुष हो गया है जो अपने न्याय के लिए प्रसिद्ध था।

शाईलौक—उसी वक्त जब मुझे गोश्त मिल जाय ! आप बड़े बुद्धिमान् हैं। क़ानून जानते हैं। ईश्वर की सौगन्ध, मुझे अपने वचन से कोई नहीं टाल सकता।

अण्टो०—अच्छा, कुछ परवा नहीं ! आप फ़ैसला कर दें।

पो०—अच्छा तुम तैयार रहो।

शाई०— धन्य हो ! पूज्यवर ! धन्य हो !

पो०—अण्टोनियो, कपड़े उतारो !

शाई०—छाती पर से ! यही तो लिखा है ?

पो०—हाँ ! क्या तराज़ू है ?

शाई०—हाँ मौजूद है ?

पो०—क्या कोई डाक्टर भी मौजूद है कि घाव को रोक कर अच्छा कर दे ? नहीं तो यह बिचारा मर जायगा !

शाई०—यह तो काग़ज़ में नहीं लिखा है।!

पो०—लिखा नहीं सही ! परन्तु इतनी दया करो !

शाई०—नहीं, नहीं, यह काग़ज़ में नहीं लिखा है।

पो०—अण्टोनियो ! क्या तुम्हें कुछ कहना है ?

अण्टो०—"कुछ नहीं, मैं तैयार हूँ ! (बिसानियो की ओर देख कर) मित्रवर ! आओ गले लग जाओ ! शोक मत करो ! अच्छा है कि मैं अभी मरा जाता हूँ। वृद्धावस्था के दुःखों से छूट जाऊँगा। अपनी पत्नी से मेरा नमस्कार कहना और मेरे प्रेम का हाल उसको बतलाना, और कहना कि पहले भी तुम्हारा एक मित्र था। मेरी मृत्यु पर शोक मत करो। मुझे कुछ पश्चात्ताप नहीं है !"

बिसानियो—हे अण्टोनियो ! मुझे अपनी स्त्री अपनी जान से भी प्यारी है। परन्तु मैं अपनी स्त्री, जान तथा सर्वस्व देने को तैयार हूँ यदि तुम्हारी जान बच जाय !

पो०—अगर तुम्हारी स्त्री यहाँ होती तो अवश्य यह बात सुन कर बुरा मानती।

ग्रेशियानो—महाशयो, अपनी स्त्री मुझे भी बहुत प्यारी है। परन्तु मैं अभी उसे स्वर्ग पहुँचा दूँ अगर वहाँ जाकर वह किसी देवता द्वारा इस यहूदी के चित्त को बदल सके !

नैरीसा (क्लार्क के भेस में)—अच्छा है कि तुम्हारी स्त्री यहाँ नहीं है। नहीं तो ऐसी बात सुन कर अभी झगड़ा हो जाता।

शाई०—क्यों समय ख़राब करते हो ! मुझे जल्दी है।

पो०—अच्छा, आध सेर गोश्त काट लो।

शाई०—(चाक़ू लेकर) अच्छा अण्टोनियो ! इधर आओ !"

पो०—ज़रा ठहरो। इस काग़ज़ में केवल गोश्त लिखा है। लोहू नहीं लिखा है। तुम गोश्त ले सकते हो। पर जो एक ईसाई का एक बूँद खून गिरा तो तुम्हारी सब सम्पत्ति ले ली जायगी।

ग्रेशि०—देख यहूदी ! देख कैसा न्याय है !

शाई०—क्या यह भी क़ानून है ?

पो०—तुम देख लो ! तुम न्याय चाहते हो तो न्याय ही होगा। पूरा न्याय ! तुम्हारी इच्छा से भी अधिक !

शाई०—अच्छा मैं रुपया लेलूँगा।

बिसानि०—जो रुपया मौजूद है।

पो०—ठहरो ठहरो ! न्याय पूरा होगा। इसको मांस के सिवाय कुछ नहीं मिल सकता ! शाईलौक गोश्त काट लो। ख़ून न निकले और ठीक आध सेर काटना। अगर रत्ती भर भी कम या ज़्यादा काटा या तराज़ू की डण्डी बाल बराबर भी इधर उधर हुई तो तुमको फाँसी मिलेगी और तुम्हारी सम्पत्ति राज ले लेगा !

ग्रेशि०—यहूदी, देख ! साक्षात् दानियाल आ गया।

पो०—शाईलौक ! क्या देखता है ? जल्दी कर।

शाई०—नहीं ! नहीं ! मैं रुपया लूँगा।

बिसानि०—लो !

पो०—नहीं, नहीं, सिवाय गोश्त के और कुछ नहीं। शर्त तो यही है।

शाई०—तो क्या मूल धन भी नहीं ?

पो०—नहीं, कुछ नहीं ! वेनिस का क़ानून यह है कि अगर कोई मनुष्य किसी प्रकार किसी प्रजा की जान लेने की कोशिश करे तो उसकी आधी सम्पत्ति उस मनुष्य को दिलाई जाय और आधी सम्पत्ति राजा ले ले। इसलिए, शाईलौक, इस नियमानुसार तेरी आधी जायदाद ड्यूक लेंगे और आधी अण्टोनियो को मिलेगी, क्योंकि तूने एक भद्र-पुरुष की जान लेने का प्रयत्न किया है। रही तेरी जान, सो यदि ड्यूक क्षमा करे तो बच जायगी नहीं तो तुझे फाँसी मिलेगी। इसलिए ड्यूक से अपने प्राणों के लिए प्रार्थना कर !

ग्रेशियानो—हाँ, हाँ ! ड्यूक से प्रार्थना कर कि वे तुझे फाँसी की आज्ञा दे दें। पर हा ! हा ! तेरे पास तो इतना भी

रुपया नहीं कि फाँसी की रस्सी भी मोल ले सके। तेरी सब जायदाद छिन गई। हा! हा! हा! अरे तुझे तो सर्कारी ख़र्च से फाँसी देनी पड़ेगी! हा! हा! हा!"

ड्यूक—शाईलौक, देख, हमारे और तेरे स्वभावों में कितना भेद है यह बात जतलाने के लिए मैं तेरी प्रार्थना के पूर्व ही तेरे प्राणों को क्षमा करता हूँ। रही तेरी जायदाद उसमें से आधी अण्टोनियो की है और आधी राज की।

शाईलौक—नहीं, नहीं, मेरे प्राण भी ले लो। सब ले लो। कुछ मत छोड़ो। जब तुमने घर के खम्भ ले लिये तब समझो घर भी ले लिया! इसी प्रकार जब तुमने जायदाद, लेली जिससे कि प्राणों का पालन होता था तो फ़िर प्राण लेने में ही क्या कसर रही?

पो०—अण्टोनियो, तुम इस पर क्या दया कर सकते हो?

ग्रेशि०—केवल एक फाँसी की रस्सी मुफ़ दे दो और कुछ नहीं।

अण्टोनि०—श्रीमहाराज, मैं आधी जायदाद इसे माफ़ कर सकता हूँ। परन्तु शर्त यह है कि यह अपनी जायदाद को, अपनी मृत्यु के पीछे, अपनी लड़की को छोड़ जाय। क्योंकि इसने अपनी लड़की को इस अपराध में अपनी जायदाद से वंचित कर रक्खा है क्योंकि इसने लौरेंजो नामी एक ईसाई से विवाह कर लिया है।

ड्यूक—हाँ, इसको ऐसा करना होगा। और मैं भी आधी जायदाद माफ़ करता हूँ, अगर यह ईसाई धर्म स्वीकार करले।

पो०—यहूदी! क्या तुझे यह सब स्वीकार है?

शाईलोक०—हाँ, स्वीकार है ?

पो०—(नेरीसा से) क्लर्क ! कागज़ लिखो और इसके हस्ताक्षर लेलो।

शाई०—मुझे यहाँ से जाने दो। मेरा स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। मैं कागज़ पर हस्ताक्षर कर दूँगा।

ड्यूक०—अच्छा चला जा, परन्तु हस्ताक्षर अवश्य करने होंगे।

अब ड्यूक ने अण्टोनियो को छोड़ दिया और दरबार समाप्त होने पर ड्यूक ने इस युवक वकील की बुद्धि की बहुत बड़ी प्रशंसा की और उसे अपने घर भोजन करने के लिए निमंत्रण दिया। परन्तु पोर्शिया अपने पति से पूर्व ही बेलमाण्ट में पहुँचना चाहती थी इसलिए उसने धन्यवाद देकर ड्यूक से क्षमा चाही। ड्यूक ने अवकाश न होने पर शोक प्रकट करके अण्टोनियो से कहा, "इस वकील को पूरा पुरस्कार दो क्योंकि आज इसने तुम्हारी जान बचाई है।"

जब ड्यूक और सभासद् चले गये तब बिसानियो ने पोर्शिया से कहा, "परमपूज्य महाशय ! आज आपकी बुद्धिमत्ता से मैं और मेरा मित्र अण्टोनियो बड़े भारी दण्ड से बचगये। मेरी प्रार्थना है कि आप उन तीन हज़ार रुपयों को स्वीकार कीजिए जो यहूदी को देने थे।"

अण्टोनि०—"श्रीमन्, इसके अतिरिक्त हम दोनों सदा आपके ऋणी रहेंगे और जहाँ तक हो सकेगा आपकी सेवा करते रहेंगे।"

पोर्शिया ने कुछ भी लेना स्वीकार न किया और जब बिसानियो ने बहुत आग्रह किया तब पोर्शिया ने कहा, "अच्छा

नहीं मानते तो अपने दस्ताने देदो। मैं तुम्हारी याद करके इनको पहना करूँगा।"

जब बिसानियो ने दस्ताने उतारे तो पोर्शिया ने उसके हाथ में अँगूठी देखी जिसको उसने अपने विवाह के समय दिया था। वस्तुतः इस अँगूठी के लेने के लिए ही पोर्शिया ने दस्ताने माँगे थे। अँगूठी देखकर वह कहने लगी "और इस अँगूठी को भी ले लूँगा।"

अँगूठी की माँग पर तो बिसानियो को बड़ा कष्ट हुआ और वह सविनय कहने लगा, "महाराज! आप इस अँगूठी को न माँगिए। यह अँगूठी मेरी स्त्री की दी हुई है और मैंने प्रतिज्ञा की है कि आयुभर कभी इसको अँगुली से पृथक् न करूँगा। अगर आप अँगूठी ही चाहते हैं तो मैं अभी विज्ञापन देकर वेनिस नगर में जो कोई सबसे उत्तम अँगूठी होगी उसे आपकी भेंट करूँगा।"

पोर्शिया इस उत्तर को सुनकर कुछ क्रुद्ध सी होगई और यह कहकर चलदी, "अजी महाशय, ऐसे उत्तर तो भिक्षारियों को दिये जाते हैं।" इस पर अण्टोनियो ने कहा, "मित्र बिसानियो! इस वकील ने ऐसी सेवा की है कि आप इस अँगूठी को देदो। स्त्री की अप्रसन्नता ऐसी बुरी नहीं है जैसी इस महापुरुष की अप्रसन्नता।"

बिसानियो यह सुनकर अपनी कृतघ्नता पर कुछ शरमाया और ग्रेशियानो के हाथ अपनी अँगूठी पोर्शिया की सेवा में भेजदी। जब ग्रेशियानो अँगूठी लाया तब नैरीसा ने भी जो क्लर्क के रूप में थी उससे अपनी दी हुई अँगूठी माँगी। और ग्रेशियानो ने यह समझ कर कि बिसानियो ने अपनी स्त्री

की अँगूठी दे डाली थी, क्लर्क को अपनी अँगूठी देने में कुछ भी सँकोच न किया। जब इन दोनों स्त्रियों ने छल से अपने २ पति से अँगूठियाँ लेलीं तब वे बड़े हर्ष से कहने लगीं कि अब चलकर हम अपने पतियों से यह कहेंगी कि तुम हमारी अँगूठियाँ किसी स्त्री को दे आये हो।

जब पोर्शिया घर आई तब उसका चित्त बहुत ही प्रसन्न था। अच्छे कार्य्य के करने से सभीका मन प्रसन्न होता है। उस दिन जिस किसी वस्तु पर उसकी दृष्टि पड़ती थी उसीसे आनन्द का भास होता था। जब वह रात के समय अपने मकान के निकट पहुँची तब अपने कमरे के दीपक का प्रकाश देखकर नैरीसा से कहने लगी, "देखो! यह दीपक अपना प्रकाश चारों ओर फैला रहा है। यही हाल अच्छे कार्य्य का है। इसी प्रकार अच्छे काम भी संसार में प्रसिद्ध होजाते हैं।"

अब वे दोनों घर पहुंच गईं और मर्दाने कपड़े उतार कर अपने पतियों का इंतज़ार करने लगीं। थोड़ी देर में बिसानियो अपने मित्र अएटोनियो सहित वहाँ पहुँच गया और उसने पोर्शिया को अपने मित्र से भेंट कराई। जिस समय पोर्शिया अपने पति और अएटोनियो को स्वागत और बधाई दे रही थी, उसी कमरे के एक कोने से नैरीसा और उसके पति की लड़ाई का शब्द सुनाई दिया। इस पर पोर्शिया ने कहा, "हैं! हैं! यह क्या? आते ही झगड़ा शुरू हो गया? अरे क्या बात है?"

ग्रेशियानो ने उत्तर दिया—"श्रीमती जी! कोई बात हो तो कहूँ। झगड़ा उस तुच्छ गिल्ट की अँगूठी के विषय में है जिसे नैरीसा ने मुझे दिया था और जिस पर यह लिखा हुआ था—"कीजिए अनुराग पर न कीजिए त्याग।"

नैरीसा—"अजी इससे क्या होता है ? चाहे अँगूठी का मोल कुछ भी क्यों न हो और चाहे उसपर का लेख कितना ही तुच्छ क्यों न हो । जब मैंने तुमको यह अँगूठी दी थी उस समय तुमने क्या कहा था ? क्या तुम्हारी यह प्रतिज्ञा नहीं थी कि मैं मरणपर्य्यन्त उसे अपनी उँगुली से न निकालूंगा ? अब तुम प्रतिज्ञाभङ्ग करके कहते हो कि मैंने अँगूठी वकील के क्लर्क को देदी । मैं कभी न मानूंगी। तुमने अंगूठी अवश्य किसी प्रेमिका-स्त्री को देदी है ।"

ग्रेशियानो—"तुम्हारे सर की क़सम, मैंने अँगूठी एक लड़के को दी थी जो तुम्हारी बराबर था । यह लड़का उस वकील का क्लर्क था जिसने अण्टोनियो की जान बचाई । इस लड़के ने अपनी फ़ीस के बदले अँगूठी माँगी और मैं इनकार न कर सका ।"

पोर्शिया—"ग्रेशियानो ! भूल तुम्हारी है । तुमने अपनी स्त्री की पहली दी हुई चीज़ खो डाली । देखो ! मैंने अपने स्वामी बिसानियो को एक अँगूठी दी है, और मुझे निश्चय है कि यदि उनके प्राण भी जाते हों तब भी वह उसे अपनी उँगुली से पृथक् न करेंगे ।"

ग्रेशियानो—"बिसानियो ने अपनी अँगूठी वकील को दी थी । इसी पर तो उसके क्लर्क ने मुझसे भी अँगूठी माँगी । क्योंकि उसने वकालत करते समय कुछ लिखने पढ़ने का काम किया था ।"

पोर्शिया यह सुन कर बड़ी अप्रसन्न हुई और अपने पति को इस प्रतिज्ञा-भङ्ग पर बुरा भला कहने लगी । उसने कहा "मैं अब नैरीसा की बात समझ गई । ठीक ठीक, इन पुरुषों का

कुछ भी भरोसा नहीं है । मेरी अँगूठी अवश्य किसी स्त्री के हाथ लग गई" ।

बिसानियो को अपनी स्त्री की अप्रसन्नता पर बड़ा खेद हुआ क्योंकि उसे पोर्शिया अपनी जान से भी प्यारी थी। वह कहने लगा, "प्रियतमे ! सत्य कहता हूँ, मैंने अँगूठी किसी स्त्री को नहीं दी। जिस वकील ने अण्टोनियो की जान बचाई उसको मैं तीन हज़ार रुपये देने लगा। परन्तु उसने रुपये स्वीकार न किये और मुझसे फ़ीस के बदले अँगूठी माँगी। मैंने जब अँगूठी देने से इनकार किया तो वह क्रुद्ध होने लगा और मुझे अपनी कृतघ्नता पर बड़ी लज्जा आई। प्यारी पोर्शिया, ऐसी दशा में मैं क्या कर सकता था ? प्रिये ! क्षमा करो। अगर तुम वहाँ होती तो अवश्य अँगूठी को मुझसे लेकर उसे दिला देती।"

जिस समय यह वादानुवाद हो रहा था अण्टोनियो ने दुखी होकर कहा, "हाय ! इस अशान्ति का कारण मैं ही हूँ" ।

पोर्शिया–(अण्टोनियो से) "नहीं ! नहीं ! आप किसी प्रकार अपने मन को कष्ट न दें। मैं आपको देखकर बड़ी ख़ुश हूँ" ।

अण्टोनियो—"मैंने एकबार अपने शरीर को बिसानियो के लिए गिरवी रख दिया था और जिस पुरुष को आपके पति ने अँगूठी देदी यदि वह मेरी सहायता न करता तो आज मेरे प्राण न बचते। अब मैं फिर अपने आत्मा को गिरवी रखता हूँ कि आपका पति कभी प्रतिज्ञा-भङ्ग न करेगा" ।

पोर्शिया—"अच्छा, अगर तुम ज़ुम्मा लो तो मैं एक और अँगूठी देती हूँ। उनसे कह दो कि वह कभी इस अँगूठी को पृथक् न करें ।"

जब विसानियो ने अँगूठी देखी तो उसे इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह वही अँगूठी थी जो उसने वकील को दी थी।

इस समय सब भेद खुल गया और पोर्शिया ने सब हाल कह दिया कि किस प्रकार उसने वकील का रूप धारण किया था और नैरीसा क्लर्क बनी थी। विसानियो को यह बात जान कर अत्यन्त आनन्द हुआ कि मेरी स्त्री ने अपनी योग्यता से मेरे मित्र की जान बचाई। विसानियो और ग्रेशियानो में खूब हँसी हुई कि उन्होंने अपनी स्त्रियों को न पहचाना और वे दोनों छल करके उनसे अंगूठियाँ ले आईं।

जब सब प्रकार से चारों ओर हर्ष की बातें हो रही थीं पोर्शिया ने आनन्द को बढ़ाने के लिए अएटोनियो को कुछ पत्र दिये जिनको उसने कहीं से पा लिया था। इन पत्रों से सूचित होता था कि जिन जहाज़ों के डूबने की अएटोनियो को ख़बर मिली थी वे वास्तव में डूबे न थे और कुशलता से बन्दरगाह में पहुँच गये थे।

अब इन सबको अत्यानन्द हुआ और जिस कथा का आरम्भ इस दुःख से हुआ था ईश्वर की महती कृपा से उसका परिणाम बहुत अच्छा निकला। अब सब लोग हँसने लगे और विसानियो कहने लगा कि वास्तव में हमने स्त्रियों को ही अँगूठियाँ दी थीं। ग्रेशियानो ने कहा, "जब तक जान में जान है कभी किसी चीज़ की इतनी ख़बर न रक्खूँगा जितनी नैरीसा की अँगूठी की।"

मैकबिथ।

(MACBETH)

कई सौ वर्ष व्यतीत हुए कि स्काटलैण्ड देश में एक भद्रपुरुष डङ्कन नामी राज करता था। डङ्कन ऐसा धर्मात्मा और दयालु था कि उस की समस्त प्रजा उसे पिता के समान समझती थी और उसके लिए प्राण देने को भी तैय्यार थी। उसका एक सम्बन्धी मैकबिथ, जो सेनापति भी था, बड़ा राजभक्त और वीर-पुरुष था। डङ्कन उसका बड़ा आदर और सत्कार करता था और उसे ग्लैमिस का राज्य दे रक्खा था।

जिस समय का हाल हम लिख रहे हैं उस समय स्काटलैण्ड के थोड़े से लोगों ने विद्रोह मचाया और नार्वे देश के राजा ने विद्रोहियों की सहायता के लिए बहुत बड़ी सेना भेजी थी, क्योंकि नार्वे-नरेश स्काटलैण्ड पर अपना स्वत्व करना चाहता था। इस विपत्ति के समय डङ्कन ने मैकबिथ को विद्रोहियों के परास्त करने के लिए भेजा। मैकबिथ ने इस युद्ध में ऐसी वीरता दिखाई कि यद्यपि उसके पास इतनी सेना नहीं थी जितनी कि नारवे की थी परन्तु विरोधियों को परास्त होकर भाग जाना पड़ा।

डङ्कन का एक सेनाध्यक्ष और भी था जिसका नाम बंको था। जब मैकबिथ और बंको युद्ध को जीतकर घर आ रहे थे उन्हें रास्ते में तीन विलक्षण मूर्तियाँ दिखाई दीं। इनकी सूरत भयानक थी और चुड़ैलें मालूम होती थीं। यद्यपि उन का मुँह स्त्रियों का सा था परन्तु एक विचित्र बात यह थी

कि उनके लम्बी लम्बी डाढ़ियाँ भी थीं। सूखी लटकती हुई खाल और जङ्गली कपड़ों से यह प्रतीत होता था कि ये कोई मायावी जीव हैं।

जब मैकबिथ और बंको आगे बढ़े तब वे तीनों उसकी राह रोक कर खड़ी होगईं। इस पर बंको ने कहा, "अरी, तुम कौन हो? क्या तुम जीवित हो अथवा कोई मायावी जीव हो? क्या मेरी बात पर नाराज़ होगईं? प्रतीत होता है कि तुम मेरी बात समझती हो क्योंकि तुमने क्रोध के मारे अपनी मोटी अँगुलियाँ होठों पर रखली हैं। तुम स्त्री हो? परन्तु तुम्हारे तो डाढ़ियाँ भी हैं!

मैकबिथ ने कहा, "अगर तुम्हारे मुँह में जीभ है तो बोलती क्यों नहीं? अरे तुम कौन हो?"

मैकबिथ के इस प्रश्न पर सबसे आगे वाली चुड़ैल ने कहा, "ग्लेमिस के राजा मैकबिथ की जय हो।" मैकबिथ को यह जान कर कि इन चुड़ैलों को मेरा नाम मालूम है बड़ा आश्चर्य हुआ। इतने में दूसरी बोली—

"काडर के अधिपति, मैकबिथ, की जय हो।" इस पर तो मैकबिथ और भी विस्मित हो गया क्योंकि काडर का राज्य उसके पास नहीं था और न उसके प्राप्त करने की कुछ आशा ही दृष्ट पड़ती थी। तीसरी चुड़ैल कहने लगी, "स्काटलैण्ड के भावी राजा मैकबिथ की जय हो।"

इस भविष्यत् वाणी को सुनकर तो मैकबिथ को बहुत ही अचंभा हुआ और वह भौचक्का सा रह गया, क्योंकि डङ्कन अभी जीवित था और यद्यपि मैकबिथ डङ्कन का निकटस्थ सम्बन्धी था परन्तु डङ्कन के दो पुत्रों मालकम और डोनल

बेन के होते हुए मैकबिथ को राज्य मिलने की कुछ भी सम्भावना न थी।

जब मैकबिथ इस सोच-विचार में पड़ा हुआ था बङ्को ने उन चुड़ैलों को सम्बोधित करके कहा, "सच सच बताओ, तुम कौन हो ? क्या तुम वही हो जो दिखाई देती हो, अथवा इसके अतिरिक्त कोई और हो जो भेस बदल कर यहाँ आ ई हुई हो ? मेरे साथी मैकबिथ के लिए तुम इस प्रकार जय-कार करती हो। मेरे लिए भी तो कुछ कहो।"

इस पर पहली चुड़ैल बोली—"मैकबिथ से छोटा और बड़ा।"

दूसरी चुड़ै०—"इतना सुखी नहीं जितना मैकबिथ परन्तु उससे अधिक सुखी।"

तीसरी चुड़ै०—"तू राजा न होगा परन्तु तेरी सन्तान रहेगी।"

ऐसी अनोखी बातें कह कर वह तीनों लोप हो गईं। और अभी वे दोनों सेनाध्यक्ष वहीं खड़े थे कि डङ्कन के दूतों ने आकर उनको यह शुभ समाचार सुनाया कि मैकबिथ की वीरता का हाल सुन कर महाराज ने उसको काडर का राज्य दे दिया।

बङ्को ने आश्चर्य से कहा।

"ओ हो ! चुड़ैलों की एक बात तो ठीक हो गई।"

मैकबिथ ने दूतों से इस अनुपम सम्मान का कारण पूँछा और कहा कि जब काडर का राजा अभी जीवित है तब मैं वहाँ का राजा किस प्रकार हो सकता हूँ। दूतों ने उत्तर दिया कि "महाराज काडर के राजा पर विद्रोह की शङ्का की गई थी। अभियोग चलाने पर यह बात ठीक ठीक निकली और उसे प्राणदण्ड दिया गया। क्योंकि आप पर डङ्कन महाराज का

विश्वास है और आपने विद्रोह के नष्ट करने में बड़ा उद्योग किया है। इसलिए यह उच्चपद आपके भेंट किया गया है। महाराज इसे ग्रहण करें।"

यह कह कर दूत तो वहाँ से चले गये और मैकबिथ के हृदय में चुड़ैलों की दो बातों के सिद्ध होने से तीसरी की भी लालसा उत्पन्न होने लगी। मानो चुड़ैलों का मिलना एक प्रकार से बुराई का बीज था जो मैकबिथ के चित्तरूपी खेत में बोया गया था। बुरी बातों के लिए भले भले आदमियों का चित्त झट से चंचल हो जाता है। मैकबिथ अब तक डङ्कन का बड़ा भक्त और विश्वासपात्र था परन्तु जब उसने चुड़ैलों से सुना कि भविष्यत् में उसे स्काटलैण्ड का राज्य मिलने वाला है तब उसे इस भविष्यत् को वर्त्तमान में परिवर्तन करने की बड़ी उत्कण्ठा होने लगी। उसने बङ्को से कहा,

"कहिए। आपकी सन्तान स्काटलण्ड पर राज करेगी?"

बङ्को ने उत्तर दिया, "मैकबिथ! तुमको ऐसा विश्वास करना ठीक नहीं है। सम्भव है कि काडर का राज्य पाकर आप डङ्कन को गद्दी से उतारने का यत्न करें। परन्तु याद रखिए कि ये राक्षसियाँ प्रायः दो चार सत्य बातें बताकर मनुष्य जाति को धर्म मार्ग से हटा कर अधर्म की ओर ले जाती हैं। इसलिए इन चुड़ैलों के कहने का हमको कुछ भी विश्वास न करना चाहिए और न लोभ में फँसना चाहिए।"

मैकबिथ के मन में लोभ जड़ पकड़ चुका था। यद्यपि बङ्को ने बहुत कुछ समझाया पर मैकबिथ ने एक न सुनी और जिस समय मैकबिथ वहाँ खड़ा हुआ था यह प्रतीत होता था मानो वह किसी गम्भीर विचार-सागर में डुबकी लगा

रहा है। अन्त को मैकविथ और बङ्को वहाँ से चुपचाप दर-बार को लौट आये।

जब वे दोनों महाराज डङ्कन के समीप उपस्थित हुए तब उसने उनका बहुत बड़ा सम्मान किया और मैकविथ को देखकर तो उसको इतना हर्ष हुआ कि गुलाब के फूल की भाँति खिल गया और कहने लगा, "प्यारे मैकविथ, आज तुमने ऐसी वीरता दिखाई है कि मैं इसका किसी प्रकार प्रत्युपकार नहीं कर सकता। अच्छा होता कि आप मेरे ऊपर कम कृपा करते जिससे आपका उपकार और मेरा प्रत्युपकार दोनों मिल सकते। आपका उपकार इतना तेज़ चल रहा है कि मेरे धन्यवाद के पर उसको पकड़ने के लिए थके जाते हैं और तोभी वह उसे पकड़ नहीं सकते। ईश्वर आपको सुख दे और नित्यप्रति आप फूलें-फलें।"

मैकविथ—"महाराज, मैंने अपने कर्त्तव्य से अधिक कुछ भी नहीं किया। हम जितना कुछ आपकी सेवा और भक्ति के लिए करें वही थोड़ा है।"

डङ्कन—"मैकविथ! तुम्हारी जय हो। ईश्वर तुम्हारी वृद्धि करे। बंको, तुमने भी बड़ी वीरता का काम किया है। मैं तुम्हारा भी अनुगृहीत हूँ। आओ गले से लगाऊँ।"

बंको—"महाराज, आपकी वृद्धि वस्तुतः मेरी ही वृद्धि है।"

डङ्कन—"मैकविथ, तुम्हें धन्यवाद देने के लिए मैंने विचार किया है कि आज तुम्हारे नगर में चल कर तुम्हारा अतिथि बनूँ"।

मैकविथ—"महाराज, मेरा बड़ा भाग्य है कि आपके पैरों की धूलि से मेरा स्थान पवित्र होगा। राजन्, आज्ञा दीजिए

कि अपनी स्त्री से यह समाचार कहूँ और आपके सत्कार के लिए तैय्यारी करूँ।"

मैकबिथ वहाँ से चल दिया परन्तु उसके मन में राज्य लेने की इच्छा उत्पन्न होरही थी। उसी समय उसने अपनी पत्नी लेडी मैकबिथ को एक पत्र लिखा जिसका आशय यह था—

"जब लड़ाई जीतकर हम बंको सहित वापस आ रहे थे रास्ते में हमको मैदान में तीन चुड़ैलें मिलीं, जिन्होंने यह भविष्यद्वाणी कही कि तुम काडर के राजा हो और स्काटलैण्ड के राजा होने वाले हो। थोड़ी दूर चलकर हमको डङ्कन महाराज के दूत मिले जिन्होंने यह सूचना दी कि काडर के वर्त्तमान राजा पर विद्रोह की शङ्का होने के कारण उसको पदच्युत कर दिया गया और उसके स्थान पर हम काडर के अधिपति बनाए गए। अब एक बात तो पूरी हो चुकी, दूसरी शेष रही है। तुम मेरी अर्धाङ्गिनी होने से हरएक बात में मेरी साथी हो। मेरी बड़ाई में तुम्हारी बड़ाई है, अतएव मैंने उचित समझा है कि सबसे पहले तुमको सूचित करदूँ।"

अपने महल में अकेली बैठी हुई लेडी मैकबिथ अपने पति का पत्र बाँच रही थी और बारबार मन में कहती जाती थी, "अब तक ग्लैमिस थे। आज काडर होगये। शेष जो कुछ भविष्यत् वाणी है वह भी पूर्ण होगी। परन्तु तुम्हारे स्वभाव का मुझे भय होता है क्योंकि इसमें दयारूपी दूध भरा हुआ है और वह तुम्हें प्रत्येक कार्य्य करने को तत्पर होने नहीं देता। तुम बड़े होना चाहते हो, तुम्हें उत्साह है, तुमको उच्च पद का लोभ भी है परन्तु बिना अधर्म के इसकी प्राप्ति दुर्लभ है। जिस उच्चपद को चाहते हो वह क्या धर्म से मिल सकता है? जिस अधर्म से तुमको घृणा है उसका करना राज्य लेने

के लिए अत्यावश्यक है। यहाँ आओ और मैं अपने उत्साह को तुम्हारे हृदय में भर दूँ।"

लेडी मैकविथ बड़ी कठोर और कुलच्छिणी स्त्री थी। उसे अपने पति का पत्र पढ़ कर महारानी बनने की ऐसी उत्कण्ठा हो रही थी कि जिस भीषण कार्य्य अर्थात् हत्या से स्त्रियों की कोमल जाति को स्वाभाविक घृणा है उस हत्या के करने में इसको किञ्चिन्मात्र भी सङ्कोच न था। थोड़ी देर पीछे जब उसने सुना कि स्काटलैण्ड का सम्राट् डङ्कन आज उसके घर अतिथि बन कर आ रहा है तो इस दुष्ट स्त्री को बड़ा हर्ष हुआ और मन में कहने लगी, "आज राजा हमारे घर आ रहा है या यमपुर को जा रहा है। हे हृदय, स्त्री जाति की कोमलता को निकाल और उसके स्थान में घोर पाप और कठोरता को धारण कर। हे रात्रि! आ और अँधेरा कर जिससे मेरे पापिष्ठ कार्य्य को कोई देख न सके। हे सूरज, जल्दी से छिप जा, जिससे मेरे छुरे की धार को डङ्कन के पेट में चलता हुआ कोई देख न सके।"

इतनी देर में मैकविथ भी घर आ पहुँचा और कहने लगा, "प्रियतमे, आज डङ्कन हमारे घर आ रहा है।"

लेडी मैकविथ—"और जायगा कब?"

मैकविथ—"कल प्रातःकाल।"

लेडी मै०—"वह कल कभी न होगा। स्वामिन्, तुम्हारे चेहरे से तुम्हारे हृदय के भाव मालूम हो जाते हैं। मनुष्य को जैसा समय हो वैसा ही कार्य्य करना उचित है। अपने चेहरे, वाणी तथा हाथ से राजा का स्वागत करो और फूल के समान प्रसन्न रहो; परन्तु हृदय में फूल के भीतर

छिपे हुये सर्प के तुल्य आचरण करो। आने वाले अतिथि का सत्कार करना चाहिये और रात का काम मैं अपने हाथ में लूँगी। और आज एक रात के काम से तुम्हारे सब दिन और रातों को सुख और राज प्राप्त कराऊँगी।"

मैकविथ का हृदय अपनी स्त्री की इस कठोर बात को सुन कर काँप गया परन्तु लेडी मैकविथ ने उसे किसी न किसी प्रकार इस घोर पाप के करने को राज़ी कर लिया।

डङ्कन बड़ा धर्मात्मा और उदार चित्त था। जब वह किसी पर प्रसन्न होता था तो उसके आदर और सम्मान के लिए उसके घर पर जाया करता था। इसीलिए इस समय मैकविथ पर कृपा कर के अपने दोनों पुत्रों तथा मन्त्रियों समेत उसके घर को सुशोभित करने के लिए आया हुआ था।

मैकविथ का नगर बड़ा सुन्दर था, वहाँ की वायु बड़ी निर्म्मल और शुद्ध थी। महल की दीवारों में पक्षीगण किलोलें कर रहे थे। मन्द मन्द समीर चलकर मनको प्रसन्न कर रही थी। मैकविथ के ऐसे सुन्दर महल को देख कर डङ्कन बड़ा सन्तुष्ट हुआ और लेडी मैकविथ के आतिथ्य सत्कार को देख कर उसने उसका बड़ा सन्मान किया। पापिनी लेडी मैकविथ की चिकनी-चुपड़ी बातें सुन कर राजा ऐसा मोहित हुआ कि उसने एक बहुमूल्य हीरा उसको भेंट किया। वह सरल हृदय डङ्कन क्या जानता था कि इस दुष्ट स्त्री के मन में विष भरा हुआ है और इसकी चापलूसी केवल धोखा देने के लिए है!

देशाटन की थकावट के कारण डङ्कन उस रात जल्दी से सो गया और उसके साथ उस कमरे में दो रक्षक भी सोये, जैसा कि महाराजों का नियम है।

आधीरात होगई। आधी दुनिया सो रही थी और सिवाय चोर-डाकू तथा व्याघ्र आदि हिंसक जीवों के और कोई जागता न था। हर तरफ़ सुन्सान हो रहा था। देखने से भयानक मालूम होता था। जिस दिन कोई बड़ी मृत्यु हुई हो अथवा घोर महापाप होने वाला हो उस दिन देवी प्रकृति का रूप भी बड़ा भयानक दिखाई देता है। हरएक चीज़ पर उदासी सी छाजाती है। यही हाल आज की रात था। लेडी मैकबिथ अपने दुष्ट विचारों को पूरा करने के लिए उठी। समस्त स्त्री-जाति ऐसी घोर हत्या से काँप उठेगी। लेडी मैकबिथ भी ऐसे कार्य्य के लिए शायद तत्पर न होती परन्तु उसे यह सन्देह था कि मेरे पति की प्रकृति नम्र है। यद्यपि उसमें राज्य लेने की अभिलाषा है परन्तु वह हत्या करने को राज़ी नहीं है। यद्यपि लेडी मैकबिथ ने मैकबिथ को बड़ी मुश्किल से इस बात पर तैय्यार कर दिया था कि वह डङ्कन को मार डाले परन्तु वह जानती थी कि मैकबिथ की स्वाभाविक दयालुता उसे ऐसा करने न देगी। इसलिए लेडी मैकबिथ स्वयं हाथ में तलवार लेकर भीषण काम करने को डङ्कन के कमरे में घुस गई। डङ्कन पड़ा सो रहा था और उसके दो रक्षक जिनको लेडी मैकबिथ ने ख़ूब शराब पिला दी थी बेहोश पड़े हुए थे। जिनका काम अपने स्वामी की रक्षा करना था उनको मद्य पीकर अपनी भी सुध नहीं रही थी। जब लेडी मैकबिथ कमरे में गई तब निर्दोष डङ्कन को सरल स्वभाव से सोते देखकर उसे अपने पिता की याद आगई। क्योंकि उसका पिता भी डङ्कन के सदृश था। पिता का ध्यान आते ही उसका हृदय काँप गया और वह वहाँ से उलटे पैरों लौट आई।

जब वह अपने पति से सलाह करने उसके पास आई

तो क्या देखती है कि मैकविथ सोच-विचार कर रहा है। अब उसका हत्या करने को जी नहीं चाहता था और इसके कारण भी कई थे। मैकविथ और डङ्कन का सम्बन्ध केवल राजा और प्रजा का ही न था किन्तु मैकविथ उसका रिश्तेदार भी था। इसके अतिरिक्त डङ्कन उससे बड़ा प्रेम करता था। हाल में ही उसने उसे काडर का राज्य देकर बड़े उच्च पद पर पहुँचा दिया था। इसके बदले में अपने स्वामी के प्राण लेने से अधिक कृतघ्नता क्या हो सकती थी? और आज की रात डङ्कन मैकविथ के घर अतिथि के समान था। मनुष्य का धर्म है कि अपने पाहुन की सब विपत्तियों से रक्षा करे, न कि स्वयं ही कटार से उसके पेट का सफ़ाया करदे। डङ्कन बड़ा धर्मात्मा और प्रजाप्रिय अधिपति था। देश के सब लोग उससे प्रीति करते थे, किसीको उससे हानि नहीं पहुँचती थी। ऐसे उत्तम राजों को ईश्वर भी प्यार करता है, मनुष्यों की तो गिनती ही क्या है। और इनकी हत्या पर ईश्वर क्यों न क्रुद्ध होगा? इन सब कारणों के ऊपर एक कारण यह भी था कि लोग अब तक मैकविथ को अच्छा समझ कर उसका सम्मान करते थे। अब यदि वह ऐसे क्रूर काम करेगा तो उसकी सब इज़्ज़त मिट्टी में मिल जायगी। ऐसे अनेक विचारों में फंसा हुआ मैकविथ सोच ही रहा था कि इतने में उसकी दुष्ट स्त्री वहाँ पर आ गई और यह देख कर कि मैकविथ का विचार अब बदल गया है वह कहने लगी।

लेडी मैकविथ—"क्या अब तक तुमने जो आशा बाँध रक्खी थी उसको नशा पीकर बाँधा था? क्या अब तक तुम सो रहे थे कि अब जाग कर उस काम को करने में हिचकते हो? क्या मैं तुम्हारे प्रेम को भी ऐसा ही समझूँ? सम्भव

है कि जिस प्रकार तुम्हारे विचार बदलते हैं तुम्हारी प्रीति भी मुझसे जाती रहे। क्या जिस बात की तुम इच्छा करते हो उसको करने से कायर की तरह भागते हो ? छी ! छी ! छी ! क्या तुम धर्म धर्म का व्यर्थ आलाप करके आयु भर दास रहना स्वीकार करते हो ? शोक ! शोक ! शोक !"

मैकबिथ०—"मैं कायर नहीं हूँ। जो कुछ मनुष्य की शक्ति में है मैं भी कर सकता हूँ। मैं नहीं जानता कि संसार में कौन मनुष्य ऐसा है जो इसके अधिक कर सके।"

लेडी मैकबि०—"अरे तो पहले कौन सा पशु था जिसने तुमसे प्रतिज्ञा कराई थी ? तब तुम अवश्य मनुष्य थे और अब यदि उसको पूरा करो तो मनुष्य कहलाने के योग्य हो। उस समय तुम अवसर ढूँढ़ते थे, अब यह भी मिल गया। जाओ और शीघ्र अपने मनोरथ की पूर्ति करो। मैंने बच्चे को दूध पिलाया है और मैं जानती हूँ कि बच्चा मा को कितना प्यारा होता है परन्तु यदि मैंने उसके मारने की प्रतिज्ञा की होती तो मैं अवश्य दूध पीते हुए हँसते बालक का सिर पत्थर से मार देती। मनुष्य को अपनी प्रतिज्ञाओं पर दृढ़ रहना चाहिए।"

मैकबिथ "अगर मुझे कार्य्य में सफलता न हो ?"

लेडी मैक०—"सफलता न हो। अरे साहस करो और सफलता होगी। सफलता क्यों न होगी ? डंकन थकावट के मारे खुर्राटे भर रहा है। उसके रक्षक नशे में बेहोश हैं। ऐसे समय में मैं और तुम क्या कुछ नहीं कर सकते ? जाओ, शीघ्र जाओ।"

मैकबिथ, "लड़के ही लड़के जनियो। क्योंकि तुम जैसी वीर स्त्रियाँ लड़कियाँ नहीं जन सकतीं। अगर मैं लोहू को

रक्षकों के वस्त्रों से लगा दूँ तो लोग अवश्य ही यह जानेंगे कि यह हत्या रक्षकों ने की है।"

लेडी मैक०—"और क्या! हम तुम तो उसकी मृत्यु पर शोक करेंगे और हाहाकार मचावेंगे। फिर हमारे ऊपर कौन शङ्का करेगा?"

मैकवि०—"अच्छा, अब मैं अवश्य इस काम को करूँगा चाहे कुछ क्यों न हो।"

जब मैकविथ दुवारा इस भीषण कार्य्य को करने चल दिया तो क्या देखता है कि एक तलवार सामने पड़ी हुई है, और वह कहने लगा, "अरे! क्या यह तलवार पड़ी है जिसकी हत्या मेरी ओर हो रहा है? ओहो यह तो वस्तुतः मेरे ही विचारों को सूचित कर रही है। आओ इसे उठालें। अरे यह तो मेरे हाथ में नहीं आती परन्तु आँखोंसे दिखाई देती है। न जाने क्या बात है कि चक्षु इन्द्रिय अन्य इन्द्रियों से विपरीत चल रही है। अरे आँखो, तुम्हें क्या हो गया! अरे हाथ! तझे इस तलवार का अनुभव क्यों नहीं होता जिसको आँखें स्पष्टतया देख रही हैं? अरे इस तलवार पर लोहू को बूँदे भी हैं, मानों इसने अभी किसीके प्राण लिये हैं। अरे यह तो मेरे हाथ में अब भी नहीं आती। हो न हो कहीं मुझे भ्रम तो न हुआ हो। ओहो! यह तो वास्तविक तलवार नहीं है किन्तु मेरे भीषण पापयुक्त विचारों के कारण केवल भ्रम हुआ है। हो सो हो। अब मैं इस के करने को उद्यत हूँ। लो अब चला। हे दृढ़ पृथ्वी, तू भी मेरे पगों की आहट न सुनना। कहीं ऐसा न हो कि किसी को मेरे विचार मालूम हो जायँ। आधा संसार आज मृतवत् हो रहा है और पापी जन पाप करने में संलग्न हैं। भूत-प्रेत इधर उधर फिर रहे हैं और चारों ओर अन्धेरा छा रहा है।

हे रात्रि, मुझे सहायता दे और हे आकाश, तू मेरी ओर मत देख कि कहीं मैं अपने कार्य्य में चूक न जाऊँ।"

यह कहता हुआ मैकबिथ डङ्कन के कमरे में घुस गया और एक तलवार से उसे स्वर्ग पहुँचा दिया। जब वह यह हत्या कर रहा था राजा के रक्षकों में से एक सोते में हँस पड़ा और चिल्ला उठा, "हत्या! हत्या!" दोनों जगे और कुछ ईश्वर-प्रार्थना के पश्चात् फिर सोगये। मैकबिथ खड़ा खड़ा उनकी बातें सुनता रहा और जब एक ने कहा, "ईश्वर हमारी रक्षा करे" तो मैकबिथ ने कहना चाहा "तथास्तु"। परन्तु उसके शब्द उसके गले में ही अटक रहे और जब वह वहाँ से चला तब उसने आकाशवाणी सुनी जिसने कहा "मत सोओ! मत सोओ! अब मत सोओ। देखो मैकबिथ निद्रा का नाश कर रहा है"। फिर एक शब्द सुनाई दिया जिसने कहा, "मत सोओ!" मैकबिथ ने सुख की नींद का नाश कर दिया। अब मैकबिथ को नींद न आवेगी। ग्लैमिस ने निद्रा का नाश कर दिया। इसलिए काडर कभी न सोवेगा। मैकबिथ कभी न सोवेगा"।

ऐसे भयभीत विचारों में निमग्न मैकबिथ डरा हुआ बाहर निकला और अपनी स्त्री के पास आया। अपने पति को घबराया देख कर उसने यह समझा कि मैकबिथ कार्य्य करने में अशक्त रहा और कहने लगी, "मुझे उल्लू बोलते सुनाई दिये थे। क्या आपने कुछ कहा?"

मैकबिथ—कब?

लेडी मैक०—अभी! अभी!

मैकबि०—नहीं! (अपने हाथ दिखाकर) देखो कैसा भीषण दृश्य है"?

लेडी मैक०—"भीषणदृश्य! इसको भीषण कहना मूर्खता है। जाओ हाथ धोओ और फिर यह सब भीषणपन दूर हो जायगा। मैं अभी डङ्कन के कमरे में जाती हूँ और सोते हुए रक्षकों के मुँह और हाथों में लोहू लगाये देती हूँ।"

यह कह कर लेडी मैकबिथ तलवार लेकर चली गई और मद्य के नशे में मस्त संरक्षकों के कपड़ों में खून लगा दिया। तत्पश्चात् वे दोनों दम्पती अपने घर में सोने के लिए चले गये।

दूसरे दिन प्रातःकाल लैनोक्स और मैकडफ़ दो मंत्री उठकर मैकबिथ के समीप आये और प्रणाम करके कहा:—

लैनोक्स—"क्या महाराज उठ बैठे?"

मैकबि०—"नहीं, श्रीमन्, अभी नहीं।"

मैकड०—"महाराज की मुझे आज्ञा है कि प्रातःकाल सूर्य्य निकलने से पूर्व ही जगा दूँ।"

मैकबिथ—"अच्छा चलिए मैं आपको महाराज के कमरे तक ले चलूँ।"

मैकडफ़—"बहुत अच्छा। बड़ी कृपा होगी।"

मैकबिथ—"देखिये कमरे का द्वार वह रहा।"

मैकडफ़—"महाराज को जगाना असभ्यता न होगी क्योंकि यह उन्हींकी आज्ञा है"।

लैनो०—"क्या महाराज आज ही जायँगे?"

मैकबि०—"हाँ उनकी यही आज्ञा है।"

लैनो०—"रात बड़ी भयानक थी। जहाँ हम सोते थे वहाँ वायु बड़े ज़ोर से दरवाज़ों से आकर टकराती रही।"

हवा में रोने की सी ध्वनि सुनाई देती थी। उल्लू रात भर बोलते रहे, और बड़ा बुरा मालूम होता था। ईश्वर भला करें। न जाने क्या होने वाला है।"

मैकबिथ—"हाँ रात्रि बड़ी भयानक थी।"

लैनोक्स—"मैंने आजन्म कभी ऐसी रात्रि नहीं देखी।"

मैकडफ़—"हाय! हाय! कैसा हुआ? हाय! यह कैसा भयानक दृश्य है।"

मैकबिथ—"लैनोक्स! अजी क्या है?"

मैकडफ़—"हाय! नाश होगया। दुष्ट हत्या ईश्वर के मन्दिर में भी पहुँच गई और मन्दिर की जान को ले गई।"

मैकबिथ—(घबराकर) अजी आपका क्या तात्पर्य है? कौन सी जान?"

लैनो०—"क्या महाराज?"

मैकडफ़—"हाय! कमरे में आओ और स्वयं अपनी आँखों को ख़राब करो। मुझसे कुछ मत पूछो। मैं नहीं कह सकता।"

जागो! जागो! घण्टी बजाओ। बङ्को जागो! डोनल्बेन जागो! मालकम जागो। जागो जागो देखो तो सही। हाय सर्वनाश होगया!"

घण्टी को सुनकर लेडी मैकबिथ आगई और कहने लगी "अरे यह कैसी घण्टी है जो हम सबको जगाती है। अरे बोलो बोलो क्या बात है?

मैकडफ—"हा देवि, क्या कहूँ। कोमल स्त्रियों से ऐसी घोर हत्या की बात किस प्रकार कहूँ।"

मैकबिथ—"हाय! हाय! यदि मैं एक घड़ी पहले मर जाता तो मेरा जीवन सफल होता। ऐसा घोर दुःख तो देखना न पड़ता। असार संसार में कुछ भी नहीं है। यह जगत् क्षणभंगुर है। हाय आज राज्य की श्री लुप्त हो गई।

मैकबिथ और उसकी स्त्री दोनों इस प्रकार मिथ्या व्यवहार करके रो-पीट रहे थे। परन्तु लोगों की शङ्का मैकबिथ की ही ओर थी। यद्यपि मैकबिथ ने यह बात फैला रक्खी थी कि संरक्षकों ने राजा को मार डाला परन्तु सब जानते थे बिचारे चाकरों को डङ्कन के मारने का प्रयोजन ही क्या था। डङ्कन के दोनों लड़के मालकम और डोनलबेन मैकबिथ का अद्भुत चरित्र देखकर इँग्लैण्ड को पलायन कर गये। क्योंकि उनको अपने प्राणों का भय था। जब डङ्कन के पुत्र भाग गये तब मैकबिथ निश्चिन्त होकर स्काटलैण्ड की गद्दी पर बैठ गया। और इस प्रकार तीसरी चुड़ैल की बात भी सिद्ध हो गई क्योंकि उसने कहा था कि मैकबिथ स्काटलैण्ड का भावी राजा है।

ऐसे उच्च पद पर पहुँचने से भी मैकबिथ के आत्मा को शान्ति न हुई। वह नित्यप्रति डाह की आग में जलने लगा। सत्य है कि धर्मात्मा पुरुष भी यदि किसी समय कोई पाप कर्म कर बैठते हैं तो उनकी आत्मा गिर जाती है। अब मैकबिथ की अधोगति आरम्भ हो गई। जिस पाप के बीज को चुड़ैलों ने मैकबिथ के हृदय में बोया था उसके अङ्कुर निकल कर एक पूरा वृक्ष हो गया और अब उसमें फल-फूल लगने लगे।

मैकबिथ यद्यपि स्काटलैण्ड का नृपति था परन्तु अब उसे नित्यप्रति यह शोक रहने लगा कि "हाय! मैंने व्यर्थ राज-

हत्या की। यदि चुड़ेलों की बात ठीक है तो मेरे पीछे बक्को की सन्तान राज्य करेगी। क्या इस बक्को के लिए ही मैंने ऐसा घोर पाप किया था कि इतना कष्ट उठाने पर भी मैं चिरकाल तक राज्य न कर सकूँगा? कभी ऐसा न होगा। देखो मैं ऐसा उपाय करूँगा कि बक्को की सन्तान को राज्य न मिल सके।

लेडी मैकबिथ को भी दिन-रात यही चिन्ता रहने लगी। अन्त में उन दोनों ने विचार किया कि बंको और उसके लड़के दोनों को मार डालना चाहिए। न जड़ रहेगी न शाखाओं से भय होगा। ऐसा विचार कर मैकबिथ ने अपने राजा होने के उत्सव की खुशी में एक महाभोज किया, जिसमें उसने अपने राज्य के सब बड़े बड़े रईसों को बुलाया और ऐसा प्रबंध किया कि जिस रास्ते से बंको इस भोज में सम्मिलित होने आवे उसी पर वह मार डाला जावे।

रात्रि हुई। महाभोज तैय्यार हुआ। निमन्त्रित भद्रपुरुष एकत्र होने लगे। लेडी मैकबिथ उन सबको स्वागत करके बिठाने लगी। परन्तु बक्को और उसका लड़का फ़िलियन्स नहीं आये। वे बिचारे आते भी कहाँ से? उनके तो प्राणों पर बीत रही थी। जिस समय वे मैकबिथ के घर भोजन करने आ रहे थे मैकबिथ के घातकों ने उन दोनों पर आक्रमण किया और फ़िलियन्स तो भाग गया परन्तु उसका पिता बक्को न भाग सका और दुष्ट घातकों ने वहीं उसका सिर काट लिया।

इधर बक्को का प्राणान्त हुआ, उधर मैकबिथ बक्को की अनुपस्थिति पर बनावटी शोक प्रकट करने लगा और कहने लगा, "देखो बक्को नहीं आया। उसकी अनुपस्थिति में समस्त सभा आनन्दशून्य हो रही है। बक्को मेरा प्रेम-पात्र है। उसे

यह नहीं चाहिये था कि इस भोज में सम्मिलित न हो।" इतने में दो घातक आये और मैकबिथ ने बाहर जाकर पूछा तो उन्होंने बङ्को के मारने और फ़िलियन्स के भाग जाने का समाचार सुनाया।

बङ्को की मृत्यु पर मैकबिथ को जो हर्ष हुआ था वह फ़िलियन्स के भागने की ख़बर सुनकर जाता रहा क्योंकि मैकबिथ को वास्तविक भय तो बङ्को की सन्तान से ही था। और वही सन्तान भाग गई। चुड़ैलों के कथनानुसार बङ्को की सन्तान ही मैकबिथ की गद्दी पर बैठने वाली थी और यही हुआ। क्योंकि इसके पश्चात् जो बादशाह स्काटलैण्ड की गद्दी पर बैठे वह सब फ़िलियन्स की सन्तान थे। इन्हीं की सन्तान में प्रथम जेम्स था जिसने इँग्लैण्ड और स्काटलैण्ड को मिला कर राज्य किया और जिसके वंश में राज-राजेश्वर महाराज पंचम जार्ज हैं।

फ़िलियन्स के भागने पर मैकबिथ ने घातकों से कहा, "बङ्को का मारना अवश्य ही सराहनीय है। परन्तु फ़िलियन्स को भगाकर तुमने अच्छा काम नहीं किया। यदि वह भी मर जाता तो मैं अपनी गद्दी पर प्रस्तरवत् सुख और दृढ़ता से बैठ सकता; परन्तु अभी मेरा शत्रु जीवित है जिससे मेरा जीवन मृत्यु के समान हैं। जब तक फ़िलियन्स जीता रहेगा मुझे कभी चैन की नींद न आवेगी। तुम जाओ और उसको मारने का यत्न करो।"

फिर मैकबिथ ने भीतर आकर सभा के जनों से कहा "सभ्यगण, हमको बंको के न आने से बड़ा कष्ट हुआ है यदि बंको आता तो हमारा गौरव अवश्य ही बढ़ जाता। पर अब क्या किया जाय? आप भोजन प्रारम्भ कीजिए।"

सभासदों में से एक ने मैकबिथ को आसन पर बैठने के लिए प्रार्थना की। और जब वह अपने आसन की ओर झुका तो क्या देखता है कि बंको की प्रतिमूर्त्ति (भूत) उस आसन पर बैठी हुई है। देखते ही मैकबिथ का मुख भयभीत होगया और घबरा कर कहने लगा, "कहाँ बैठूँ। ये तो सब आसन भरे हुए हैं।"

बङ्को की प्रतिमूर्त्ति मैकबिथ के अतिरिक्त और किसीको दिखाई नहीं देती थी इसलिए लोगोंने कहा, "महाराज, आप क्या हवा से बातें कर रहे हैं। श्रीमान् का आसन तो शून्य ही पड़ा है"। मैकबिथ उस प्रतिमूर्त्ति से कहने लगा, "अरे तू यहाँ क्यों आई है। और मुझे क्यों चिढ़ाती है? यदि मुर्दे शवालय से भाग कर निकल आते हैं तो अब हम उनके शव को चील-कव्वों की भेंट किया करेंगे।"

इस बङ्को की प्रतिमूर्त्ति यहाँ से चली गई और लेडी मैकबिथ ने जिसको अपने पति का समस्त भेद मालूम था भाँड़ा फूट जाने के डर से सभासदों से कहा, "सभ्यगण! मेरे पति को एक ऐसा रोग है कि उनकी प्रायः इस प्रकार की दशा हो जाती है। इस समय भी उसी दुष्ट रोग का आक्रमण दिखाई पड़ता है इसलिए आप कृपापूर्वक यहाँ से बिदा हो जाइए।"

निमन्त्रित पुरुष तो बिना खाये ही वहाँ से चले गये परन्तु उस दिन से मैकबिथ और उसकी स्त्री को बहुत शोक होने लगा। वे रात-दिन चिन्ता की आग में जलने लगे। उन्हें एक घड़ी भी नींद नहीं आती थी और यदि सो जाते तो स्वप्न में अनेक प्रकार के भयानक पदार्थ देखा करते थे। लेडी मैकबिथ को कुछ ऐसा रोग हो गया था कि उसे नित्य अपने

हाथों में डङ्कन का .खून लगा हुआ प्रतीत होता था। उसको धोने की वह बहुत कोशिश करती थी परन्तु उससे छुटकारा न होता था।

इस भ्रान्त अवस्था में मैकविथ ने विचार किया कि अब उन्हीं चुड़ैलों के पास चलना चाहिए जिन्होंने पहले भविष्यत् का हाल बताया था। चुड़ैलों को पहले से ही यह मालूम हो चुका था कि मैकविथ हमारे पास आ रहा है। इस लिए वे एक वीभत्स व्यापार में लगी हुई थीं। एक बड़ी सी कढ़ाई चढ़ी हुई थी। जिसमें वे अपने राक्षस देवता की पूजा के लिए कुछ पका रही थीं। मेंडक, चमगादड़ और साँपों का मांस,कुत्ते की जीभ, छिपकली की टाँग, उल्लू के पर, भेड़िये के दाँत, विषैले वृक्ष की जड़, बकरी का पित्ता, मरे बालक की अँगुली, इन सबको मिला कर कढ़ाई में डाल रही थीं और बन्दर का .खून उसके ऊपर छिड़क रही थीं। आग जलाने के लिए वे किसी घातक की चर्बी डाल रही थीं जो सूली देते समय निकाली गई थी। ऐसी भयानक चीज़ों से वे अपने देव को सिद्ध करना चाहती थीं।

जब वे इस काम को कर रही थीं मैकविथ वहाँ पर आ पहुँचा और कहने लगा, "मैं तुम्हारे पास कुछ जिज्ञासा करने आया हूँ, ठीक ठीक बताओ। तुम यह क्या कर रही हो?"

चुड़ैलें—"इसका कुछ नाम नहीं है।"

मैकविथ—"मैं जो प्रश्न करूँ उसका एक एक करके उत्तर दो।"

चुड़ैलें—"अच्छा कहो। परन्तु यह तो बताओ कि उत्तर तुम हमारे मुख से सुनोगे या हमारे देवता के मुख से।"

मैकविथ ने निर्भय होकर उत्तर दिया कि "देखें तुम्हारे देवता कौन से हैं ? बुलाओ।"

इस पर तीनों चुड़ैलें एक एक करके मंत्र पढ़ने और भूत को बुलाने लगीं। इस पर एक कटा हुआ सिर दिखाई दिया और मैकविथ ने उससे कुछ पूछना चाहा। परन्तु एक चुड़ैल ने कहा, "मैकविथ, सुनते रहो! कुछ कहो मत! यह तुम्हारे विचार को जानता है।"

कटे शिर ने कहा—"मैकविथ, मैकविथ! मैकविथ! मैक-डफ़ से होशियार रहो"।

मैकविथ—"इस शिक्षा के लिए धन्यवाद देता हूँ। पर एक बात और बताओ ?"

इतने में कटा शिर लुप्त हो गया और चुड़ैलों ने कहा, "चुप रहो! देखो दूसरा देवता आता है।" इस पर एक रक्तमय बालक प्रकट हुआ और उसने कहा, 'मैकविथ, मैकविथ! मैकविथ! क्रूरता और कठोरता धारण करो। किसी मनुष्य की परवा न करो। क्योंकि कोई मनुष्य तुमको नहीं मार सकता।"

मैकविथ—"अच्छा मैकडफ़, जीवित रहो। मुझे तुम्हारा क्या डर है ? परन्तु एक निश्चय को और पक्का करने के लिए मैं तुझे अवश्य मार डालूँगा जिससे मैं भय को झूँठा कर सकूँ और निर्भय होकर चैन की नींद सो सकूँ।"

इसके पश्चात् तीसरा देवता प्रकट हुआ जिसकी आकृति मुकुट पहने हुए बालक की सी थी और जिसके हाथ में एक वृक्ष था।

मैकविथ—"अरे यह क्या है जो राजकुमार की भाँति चमक रहा है और जिसके शिर पर राजमुकुट विराजमान है ?"

चुड़ैलें—"सुनो सुनो, बोलो मत।"

देवता—"हे अभिमानी, सिंह के समान वीर और निर्भय हो और कुछ परवा मत करो कि कौन लड़ता है अथवा कौन शत्रु है। मैकविथ उस समय तक पराजित नहीं हो सकता जब तक समस्त बर्नम वन डन्सीनन पर्वत तक उसके विरुद्ध न चढ़ आवे।"

यह कह कर देवता तो अन्तर्ध्यान हो गया परन्तु मैकविथ मारे ख़ुशी के फूला नहीं समाया। क्योंकि एक तो यह बात कि उसे कोई मनुष्य नहीं मार सकता, बड़ी ही विचित्र थी, परन्तु दूसरी बात ने तो मैकविथ को और भी निर्भय कर दिया-क्योंकि-ऐसा कौन मनुष्य है जो बरनम वन को डन्सीनन पर्वत तक उखाड़ लाये ! अब उसने कहा:—

"यह तो कभी न होगा। तुमने भली बात कही। परन्तु मेरा हृदय एक बात जानने के लिए बड़ा उत्सुक है। यह तो बताओ कि बंको की सन्तान कभी इस देश में राज करेगी या नहीं ?"

चुड़ैलें—"अब कुछ मत पूछ।"

मैकविथ—"बस यही बतादो और मैं सन्तुष्ट हूँ। बताओ बताओ ! अरे कढ़ाई क्यों गिरी जाती है ?"

एक चुड़ैल—"दिखा"

दूसरी "—"दिखा"

तीसरी "—"दिखा"

सब चुड़ैलें—"अरे इसे दिखाकर इसका हृदय विदीर्ण करो।" इतने में आठ राजों की मूर्तियाँ दिखाई दीं। अन्तिम राजा के हाथ में दर्पण था और उसके पश्चात् बंको की प्रतिमूर्ति थी।

मैकबिथ—"अरे अरे! यह कैसा दुख दृश्य है। ओहो! इतने राजे और यह सब बंको की सन्तान! अभागिनी चुड़ैलों! मैं अब तुमको न देखूँगा।"

जब मैकबिथ घर आया तब वहाँ आने पर मालूम हुआ कि वही मैकडफ़ जिससे होशियार रहने के लिए पहले देवता ने उससे कह दिया था डङ्कन के पुत्र माल्कम की सहायता के लिए इङ्गलैण्ड भाग गया है। ऐसी बात सुन कर उसके शरीर में आग लग गई और दो घातकों को भेज कर मैकडफ़ की स्त्री तथा बालकों को मरवा डाला। अब इस [illegible] से मैकबिथ की क्रूरता का कुछ ठिकाना नहीं रहा। वह नित्यप्र[illegible] ऐसे ही अत्याचार किया करता और प्रति दिन किसी न किसी बड़े रईस के घर का सत्यानाश किया करता। होते होते थोड़े दिनों में यह नौबत होगई कि सारी प्रजा इस दुष्ट राजा मैकबिथ के हाथ से दुखी होकर हाहाकार मचाने लगी।

राजा को प्रजा का ही बड़ा बल होता है। जो प्रजा ही विमुख हो जाय तो राजा भला किस प्रकार राज कर सकता है। मैकबिथ के पास प्राचीन सेना तो रही ही न थी, जो नई थी वह उसकी ओर लड़ना अधर्म समझती थी। बहुत से लोग तो खुल्लमखुल्ला माल्कम की सेना में सम्मिलित होगये थे। शेष बहुत से जो मैकबिथ के अत्याचारों से डरते थे छिप छिप कर मैकबिथ के विरुद्ध सहायता करने को

उद्यत हो रहे थे। ऐसी विपत्ति की दशा में जब मैकबिथ शारीरिक तथा मानसिक हर तरह की विपत्तियों में पड़ा हुआ था और अपने मन में कह रहा था कि "मुझे प्रतीत होता है कि मेरी अपेक्षा डङ्कन कई गुना सुखी है। मुझ विश्वास-घातक ने उसे मार डाला परन्तु वह अपनी क़बर में आनन्द-पूर्वक सो रहा है और मैं असीम अधिकार और राज को पाकर भी पीड़ा उठा रहा हूँ। मुझे हर एक पुरुष घृणा और अनादर की दृष्टि से देखता है।" ऐसी हाहाकार और अशान्तिसूचक अवस्था में लेडी मैकबिथ की अवस्था और भी बिगड़ गई और इस पापिनी को अपने कुकर्मों ने ऐसा घेरा कि हत-भागिनी उन्मादिनी होगई। डाकृर जब मैकबिथ को देखने गया तो परिचारिका से और वैद्य से यह बातें हुईं।

वैद्य—"मैंने तुम्हारे साथ दो रातें जागकर देखा है। परन्तु जिस रोग [illegible]न वर्णन किया वह दशा मैंने कभी नहीं देखी।"

परिचारिका—"श्रीमन्! जिस दिन से महाराज रण को गये हैं महाराणी जी बिस्तर से उठती हैं। रात्रि का वस्त्र पहनती हैं। बक्स में से काग़ज़-क़लम निकाल कर कुछ लिखती हैं। फिर उसको पढ़ती हैं। फिर मुहर लगाती हैं। और फिर बिस्तर पर आ जाती हैं। और यह सब काम सोते सोते ही होता है।"

वैद्य—"विलक्षण रोग है। सोना और जागने के से काम करना! इसके अतिरिक्त वह कुछ कहती भी हैं?"

परिचा०—"हाँ! परन्तु वह मैं आपसे न कहूँगी।"

वैद्य०—"मुझसे तो अवश्य कहना चाहिए। मैं डाकृर हूँ।"

परिचा०—"मैं किसीसे न कहूँगी। मेरा कोई साक्षी नहीं है।"

इतने में लेडी मैकबिथ मशाल लिये आ गई और परिचारिका ने कहा:—

"देखो देखो ! इसकी यही दशा है ।"

वैद्य—"इसके पास मशाल कहाँ से आई ।"

परि०—"मशाल हमेशा महारानी के समीप जलती रहती है । यह उसकी आज्ञा है ।"

वैद्य—"तुम देखती हो ? इसकी आँखें तो खुली हैं ।"

परि०—"केवल पलक खुले हैं । परन्तु चक्षुइन्द्रिय काम नहीं करती ।"

वैद्य—"देखो ! यह हाथ कैसे मल रही है ।"

परि०—"यह उसका स्वभाव सा हो गया है । कभी कभी पाव घण्टे तक बराबर धोने के लिए हाथ मलती रहती है ।"

लेडी मैक०—"अरे अभी एक धब्बा बाक़ी है ।"

वैद्य—"देखो वह कुछ कहती है ।"

ले० मैक०—"अरे छूट ! छूट ! धब्बे छूट ! स्वामिन् ! आप क्यों डरते हैं । हमसे कौन पूछेगा कि डङ्कन को किसने मारा ? परन्तु क्या इस बुड्ढे के इतना ख़ून था ?"

वैद्य—(परिचारिका से) "सुनो ?"

ले० मैक०—"मैकडफ़ की स्त्री कहाँ है ? अरे क्या यह हाथ कभी शुद्ध न होंगे ? पति जी ! कुछ नहीं ! कुछ नहीं !"

वैद्य—"अरे महारानी तो वह बात कह रही है जो कहना उसे उचित नहीं है ।"

ले० मै०—"अरे अभी लोहू की दुर्गन्ध आती है । हा ! हाय ! हाय !"

वैद्य—"मैंने ऐसे रोग की कभी चिकित्सा नहीं की ।"

ले० मै०—"पति जी, घबराइए नहीं। बंको का शव शवालय में पड़ा हुआ है। वहाँ से उठकर नहीं आ सकता।"

वैद्य—"अरे यह भी!"

इसी प्रकार लेडी मैकबिथ ऐसी ही दुखित अवस्था में जीवन व्यतीत करती रही और वैद्य उसकी चिकित्सा न कर सका।

थोड़े दिनों में मैकडफ़ इँग्लैण्ड से बहुत सी सेना लेकर माल्कम के साथ स्काटलैण्ड पर चढ़ आया और मैकबिथ के दूतों ने उसे आकर इस चढ़ाई की ख़बर दी।

मैकबिथ चुड़ैलों की भविष्यद्वाणी पर भरोसा किये हुए बैठा था। वह समझता था कि कोई मनुष्य उसे नहीं मार सकता। उसे जीवन का कोई भी सुख प्राप्त न था। उसके कुकर्म उसके सिर पर चढ़कर बोल रहे थे। उसका हृदय पापमय विचारों से विदीर्ण हो गया था। उसे किसी पर विश्वास न था। भला विश्वासघाती को किसका विश्वास हो सकता है? उसका प्रेम केवल अपनी स्त्री से था, जिसने अपनी दुष्टता से मैकबिथ को भी दुष्ट बना लिया था। परन्तु अब लेडी मैकबिथ भी मानसिक रोग से पीड़ित होकर मर गई। अब मैकबिथ का संसार में कोई नहीं रहा और उसने अपनी मृत्यु ही अपने दुःखों की औषध समझ ली। परन्तु जब माल्कम की सेना बहुत ही निकट आगई तब उसने वीरता से लड़ने का इरादा कर लिया और अस्त्र-शस्त्र ले रणभूमि को चल दिया। थोड़ी देर में एक दूत ने आकर ख़बर दी कि जब वह बरनम बन की ओर देख रहा था उसे समस्त बन डन्सीनन पर्वत की ओर चलता दिखाई दिया।

मैकविथ—"झूठ! झूठ! महाझूठ!"

दूत—'महाराज! झूठे को फांसी। श्रीमान् स्वयं देखलें कि तीन मील से बरनम वन चला आरहा प्रतीत होता है।"

मैकविथ—"अरे दुष्ट! यदि तेरा कहना झूठ निकला तो इसी वृक्ष पर तुझे टाँग कर फांसी दी जायगी। अगर सच है तो तूभी मेरे लिए ऐसा ही करना। अरे मुझे अभागिनी चुड़ैलों के कथन पर सन्देह होता है। उन्होंने कहा था कि 'जब तक बरनम वन डन्सीनन पर्वत तक न आजाय कुछ चिन्ता नहीं करनी चाहिए, अब वन भी चलने लगा! चलो धीरता से लड़ाई लड़ें।"

बरनम वन के चलने की कथा इस तरह से है कि जब माल्कम अपनी सेना सहित डन्सीनन पर चढ़ाई करने चला तो बरनम वन में से उसने वृक्षों की शाखायें काट लीं, और अग्रगन्त सिपाहियों ने अपने अपने हाथों में यह शाखायें लेलीं। माल्कम ने यह बात इस अभिप्राय से की थी कि शत्रु के दूत सिपाहियों की ठीक ठीक संख्या से अभिज्ञ न हो सकें। दूत को इन्हीं शाखाओं पर वन के चलने का भ्रम हुआ था। इस प्रकार चुड़ैलों के शब्द तो ठीक निकले परन्तु उनका अर्थ जो मैकविथ ने समझा था वह नहीं था।

अब बहुत बड़ी लड़ाई हुई और मैकविथ बड़े उत्साह से लड़ा परन्तु उसके सिपाही बहुत ही न्यून थे इसलिए उसको विजय प्राप्त होनी दुर्लभ थी। भला पापियों की सहायता भी कोई करता है? जो रहे सहे मैकविथ के मित्र थे वे भी इसकी दुष्टताओं से तंग आकर माल्कम से जा मिले थे। होते होते मैकविथ वहाँ आ पहुँचा जहाँ मैकडफ लड़ रहा था। परन्तु

जब जैसे यह बात याद आई कि चुड़ैलों ने उससे कहा था कि मैकडफ़ से होशियार रहना तो उसने चाहा कि वहाँ से भाग जावे। परन्तु मैकडफ़ को मैकबिथ पर बड़ा क्रोध आ रहा था। उसने मैकडफ़ की स्त्री और बच्चों को मार डाला था इसलिए मैकडफ़ उससे बदला लेना चाहता था। ज्योंही उसने मैकबिथ को देखा त्यों ही बड़े ज़ोर से ललकार कर कहा कि "हे दुष्ट और कृतघ्न पापी! आ, आज तुझे तेरे कुकर्मों का मज़ा चखाऊँ।"

मैकबिथ को चुड़ैलों की यह बात याद आई कि कोई स्त्री से उत्पन्न मनुष्य मुझे मार नहीं सकता और कहने लगा।

"मैकडफ़! क्यों व्यर्थ प्रयत्न करता है। तेरी तलवार मेरे ऊपर काम नहीं कर सकती। कोई स्त्रीज्याया मुझे मार नहीं सकता"।

मैकडफ़—"चल दूर हो। जिन भूत चुड़ैलों का तू आज तक उपासक रहा है उनसे कहदे कि मैकडफ़ को किसी स्त्री ने नहीं जना, जैसा कि प्राकृतिक नियम है, किन्तु इसके विरुद्ध मैं तो माता के पेट को चीर कर निकाला गया था।"

मैकबिथ—"नाश हो उस मुँह का जो मुझसे ऐसा कहता है। मैं तुझसे न लडूँगा। अब से किसी मनुष्य को चुड़ैलों का विश्वास न करना चाहिए। यह ऐसी छलयुक्त बातें करती हैं कि यद्यपि इनके शब्द ठीक निकलते हैं परन्तु इनका तात्पर्य कुछ का कुछ निकलता है।

मैकडफ़—"अच्छा मत लड़। हम तुझे पकड़ कर नगर भर में फिरावेंगे और तेरे आगे एक तख़्ते पर लिखा रहेगा।"

"देखो, यह आता है एक कृतघ्न पापी।"

मैकबिथ को कुछ साहस आगया और इस बुरी मौत मरने से लड़कर मरना उचित समझा और थोड़ी देर में मैकडफ़ के हाथ से मारा गया ।

मैकडफ़ ने अपने शत्रु का सिर काटकर माल्कम के पैरों पर रखदिया और मालकम बड़े समारोह के साथ गद्दी पर बैठ गया ।

जूलियस सीज़र।

(JULIUS CÆSAR)

निवेदन

पाठकवर्ग ! हिन्दीभाषा में प्रायः अन्य देशों के इतिहास नहीं हैं और यदि दो एक हैं भी तो उनका प्रचार सर्वसाधारण में नहीं है। इस लिए सिवाय उन लोगों के जिन्हों ने अन्य भाषायें सीखकर कुछ पढ़लिया है बहुधा हमारे देशीभाई इतिहास-विद्या से रहित ही हैं। जब तक इतिहास का ज्ञान नहीं तब तक ऐतिहासिक नाटक तथा इतिहास-सम्बन्धी कहानियाँ सुनने में रुचि नहीं होती, इसलिए हम शेक्सपियर-लिखित जूलियस सीज़र की कथा के लिखने से पहले कुछ थोड़ा सा हाल रोम के इतिहास का देना चाहते हैं जिसको पढ़कर मुख्य कथा को समझने में किसी प्रकार की कठिनाई न हो।

इटली देश के पश्चिम ओर टाइबर नदी के तीर रोम नामी एक नगर है। यद्यपि आजकल भी यह नगर बड़ा प्रसिद्ध गिना जाता है परन्तु कोई दो हज़ार वर्ष हुए इसका चमत्कार संसार भर में फैला हुआ था। रोम का राज्य ईसा के जन्म से प्रायः ८०० वर्ष पहले शुरू हुआ। थोड़े दिनों में उन्होंने इटली भर को जीत लिया। कई सौ वर्ष में यह राज्य इतना बढ़ा कि समस्त यूरोप, उत्तरी अफ़्रीक़ा, पश्चिमी एशिया यह सब रोम के अन्तर्गत हो गये। रोम को पहले पहल रेमस और रेम्यूलस दो भाईयों ने बसाया था, जिनके विषय में यह कहा जाता है कि उनका पालन किसी भेड़िया ने किया था।

इसके पश्चात् वहाँ सात बड़े राजा हुए। सातवें राजा सुपर्बस के समय में राजकुमार सेक्सटस ने बलात्कार से एक धार्मिक रमणी का धर्म नष्ट किया। इस पर वहाँ के लोग इस वंश से चिढ़ गये और राजा तथा उसके कुल को नगर से निकाल दिया। इसके उपरान्त प्रजापालित राज्य स्थापित होगया और यह सात सौ वर्ष तक रहा। प्रजा की ओर से हरसाल दो प्रबन्ध-कर्ता चुने जाया करते थे। एक राज्य का प्रबन्ध करता था दूसरा अन्य देशों को जीतता और राज्य की रक्षा करता था। जिस समय यह राज्य स्थापित हुआ समस्त प्रजा बलिष्ठ थी और राजकाज में रुचि रखती थी। परन्तु जब राज्य बहुत बढ़गया और बहुत से देश इसमें सम्मिलित हो गये तब रोमन लोगों के जीवन में कुछ कुछ दोष आने लगे। वे उस मुख्य अभिप्राय को तो भूल गये जो वस्तुतः प्रजापालित राज्य-स्थापकों का था। वे केवल उन लोगों के अनुयायी हो गये जिनका देश में बल हुआ। इस प्रकार स्वतंत्रता तो जाती रही, एक प्रकार की परतंत्रता ही रह गई। जो प्रबन्धकर्ता चुने गये वे प्रजा की इच्छा से नहीं किन्तु उन पुरुषों के बल से। और ये लोग उसी प्रकार अत्याचार करने लगे जैसे पहले राजा किया करते थे। इनमें और राजाओं में कुछ भेद न रहा। जिसकी लाठी उसकी भैंस हो गई। रोम की इस अवस्था को शेक्सपियर महाकवि ने अपने 'जूलियस सीज़र' नामक नाटक में दिखलाया है। ऐसी अवस्था का परिणाम यही होना था कि प्रजापालित राज्य जाता रहे और पहले की तरह नियमानुसार राजवंश की जड़ पड़ जाय। ऐसा ही हुआ। यद्यपि जूलियस सीज़र को नियमबद्ध राजगद्दी न दी जा सकी परन्तु उसके पश्चात् उसके सम्बन्धी आक्टे-

वियस सीज़र ने आगस्टस सीज़र के नाम से अपने सिर पर राजमुकुट रख ही लिया।

यहाँ हम नाटक का अनुवाद देने से पूर्व जूलियस सीज़र का कुछ जीवन चरित्र भी देते हैं जो प्लूटार्क नामी प्रसिद्ध इतिहासकर्ता से उद्धृत किये हुए कई अँग्रेज़ी लेखों के आधार पर लिखा गया है।

ईसा के जन्म से कोई सौ वर्ष पहले जब रोम में आपस के झगड़े शुरू हो गये तब सिना और सिला दो प्रसिद्ध पुरुष एक दूसरे के विरुद्ध लड़ने लगे। अन्त में सिला ने जय पाई और उसने अपने विरोधियों को बड़े बड़े भयानक दण्ड दिये। इस समय सीज़र (जूलियस सीज़र) बालक ही था। पाँच वर्ष की अवस्था में उसका पिता मर गया। थोड़े दिनों पीछे सीज़र प्रसिद्ध हो गया और देश-कार्य्य में सम्मिलित होने लगा। सिला को पहले ही से सीज़र से कुछ वैमनस्य था। परन्तु सीज़र ने एक अपराध और किया। अर्थात् सिला के महाशत्रु सिना की कन्या कौर्नीलिया से विवाह कर लिया। इस पर तो सिला के क्रोध की आग बहुत ही भड़क उठी। इस समय सिला के समान कोई मनुष्य नगर में नहीं था। सिला के अत्याचारों पर हाहाकार तो सब करते थे परन्तु किसीका यह साहस न होता था कि उसका प्रतिबन्ध कर सके। उस समय सैकड़ों पुरुषों को सिला ने भस्मीभूत कर दिया था। अब सीज़र की बारी आई। लोगों ने बहुत प्रार्थना की कि सीज़र अभी बालक है। इसे छोड़ दीजिए परन्तु सिला यही कहता था:—

"तुम इस बालक को नहीं पहचानते। जिस बालक की

तुम सिफ़ारिश करते हो यही बालक एक दिन देश की स्वतंत्रता का नाश करेगा।"

सचमुच यह बात ठीक हुई। सीज़र भाग कर अन्य देशों को चला गया।और इधर उधर फिरता रहा।

सीजर बड़ा वीर पुरुष था। उसने बहुत सी लड़ाइयाँ जीतीं और बड़े बड़े पराक्रम दिखाये। परन्तु वह केवल सिपाही ही न था। उसका मस्तिष्क भी बड़ा विचित्र था। उसने और प्रसिद्ध विद्वान् सिसरो ने एक साथ शिक्षा पाई थी और बहुत जल्द वह अपने साथी से अधिक हो गया था। सीज़र ने उस समय के सबसे प्रसिद्ध नीतिज्ञ कैटो की नीति का खण्डन एक बड़े ग्रन्थ में किया है।

सीज़र की विद्या थोड़े ही दिनों में फैल गई। वह कई विद्याओं का पण्डित था। गणित और ज्योतिष शास्त्र उसे खूब आता था। उसके लेख उसके नगर-निवासी बड़ी रुचि के साथ पढ़ते थे। इसी कारण थोड़े दिनों में रोम के बड़े बड़े लोग उसके मित्र हो गये।

जब सिला का ज़ोर कम हो गया और वह राजभार से छूट कर विश्राम करने लगा। तब सीज़र ने बड़े बड़े पराक्रम दिखाये। उसका व्यवहार सबके साथ बड़ा मधुर था। वह सबसे प्रीति करता था। वीरता उसमें अपार थी। इसलिए शीघ्र ही उसको राज के भारी काम मिलने लगे। थोड़े दिनों में वह स्पेन का शासक नियत हो गया। वहाँ उसने न केवल अपना बल ही बढ़ाया किन्तु रुपया भी बहुत कमाया।

वहाँ से लौट कर जब वह रोम में आया तब उस समय एक अन्य मनुष्य पौम्पे नामी बहुत बड़ा हुआ था। इसने

आते ही पौम्पे से मित्रता करली और अपनी लड़की जूलिया का विवाह उसके साथ कर दिया। एक और एक ग्यारह होते हैं। जब सीज़र और पौम्पे दोनों मिल गये तब दोनों का बल बढ़ने लगा। यहाँ तक कि इनके सब विरोधी पराजित हो गये। पाँच वर्ष के लिए जूलियस सीज़र गाल देश (जिसको आज कल फ्राँस कहते हैं) का शासक नियत हुआ। वहाँ जाकर उसने अपनी बुद्धि तथा बल से रोम का राज्य बहुत बढ़ाया। ईसा के जन्म से ५५ वर्ष पूर्व उसने ब्रिटेन (इँग्लैएड) पर चढ़ाई की। यह देश जो आजकल भूमएडल का रत्न समझा जाता है उस समय केवल जङ्गल ही था। सीज़र ने यद्यपि इँग्लैएड का दक्षिणी भाग जीत लिया परन्तु वह आगे नहीं बढ़ने पाया। इतने में गाल देश के बखेड़ों के कारण उसे लौट आना पड़ा। इस समय सीज़र और पौम्पे दोनों का बल दिन दूना और रात चौगुना बढ़ रहा था। मसल मशहूर है कि दो बलवान् मनुष्यों में बहुत दिनों तक मित्रता नहीं रह सकती। यही बात यहाँ भी सच हुई। जूलिया मर गई और उसके मरते ही सीज़र का सम्बन्ध पौम्पे से कम हो गया। अब बहुत सी बातों के कारण उन दोनों प्रसिद्ध पुरुषों में लड़ाई हो गई। एक दूसरे के लोहू का प्यासा हो गया।

उस समय रोम की राजसभा काठ की पुतली से अधिक न थी। जो अधिक घूस दे देता था उसीका बल हो जाता था। जो प्रजापालित राज्य पहले समय में प्रजा की बुद्धि से चलता था वही राज्य इस समय एक दो धनी पुरुषों के धन से चलता था। पौम्पे ने इस अवसर को पा कर राजसभा से कह सुन कर सीज़र के लिए यह आज्ञा दिला दी कि उससे समस्त सेना ले ली जाय।

एएटनी जो एक उच्च पद पर नियत था इस भेद को बताने के लिए सीज़र के पास जा रहा था कि इतने में पौम्पे के नौकरों ने उस पर आक्रमण किया। इस बात से सीज़र को क्रोध आ गया और वह बहुत सी सेना लेकर इटली देश पर चढ़ आया। पौम्पे ने भी उस पर चढ़ाई की। परन्तु ईसा के जन्म से ४८ वर्ष पूर्व फ़ार्सलिया के युद्ध में पौम्पे की हार हुई। पौम्पे मिश्र देश को भाग गया और किसी आदमी ने वहाँ उसे मार डाला। सीज़र अपने शत्रु का पीछा करता हुआ मिश्र पहुँचा और उस देश पर चढ़ाई की।

इस समय मिश्र देश में एक महारानी क्लियोपाटरा राज करती थी। यह स्त्री समस्त स्त्रीजाति में बहुत ही रूपवती थी। परन्तु इसको आचार-व्यवहार का कुछ भी संकोच न था। वीर पुरुष सीज़र को देख कर वह घबरा गई और शस्त्रको छोड़ कर शृङ्गार का आश्रय लिया। सीज़र उसको देख कर मुग्ध हो गया और थोड़े दिनों वहीं रहा। इस बात ने सीज़र के यश पर बहुत बड़ा धब्बा लगाया है।

जब सीज़र ने सुना कि पौम्पे के लड़के उसके विरुद्ध स्पेन में ऊधम मचा रहे हैं तब वह मिश्र से स्पेन चला गया और वहाँ उनको परास्त करके मरवा डाला।

पौम्पे के लड़कों की मृत्यु सीज़र की मृत्यु का कारण हुई। उसी दिन से रोम के बहुत से लोग उसके विरुद्ध हो गये, क्योंकि पौम्पे रोम-निवासियों को बहुत प्रिय था।

अब हम इतिहास के उस स्थान पर आ पहुँचे हैं जहाँ से शेक्सपियर का मुख्य नाटक आरम्भ होता है। इसलिए हम जूलियस सीज़र की योग्यता का थोड़ा सा वर्णन करके मुख्य कहानी को शुरू करेंगे।

जूलियस एक अनुपम पुरुष था। उसकी योग्यता विलक्षण थी। कहते हैं कि वह एक ही समय में कान से सुनता, आँख से पुस्तक पढ़ता, हाथ से लिखता, पैर से घोड़े पर चढ़ता और मन से विचारता था।

उसने अपना जीवन-चरित्र स्वयं लिखा है। वह उस समय भी एक बड़ा भारी ग्रन्थ लिख सका, जब कि वह गाल देश में युद्ध कर रहा था।

रोम में आकर उसने बड़े से बड़ा पद प्राप्त किया। केवल राजा बनने की काङ्क्षा ही उसके मन में रह गई, परन्तु इसी इच्छा ने उसके प्राण ले लिये। क्योंकि बहुत से ऐसे लोगों ने जो रोम में प्रजापालित राज्य चाहते थे सीज़र को मार डाला। इसका वर्णन आगे लिखा है।

जूलियस सीज़र नाटक

रोम नगर का एक नियम यह था कि जब कभी कोई रोमन जनरल (सेनापति) किसी बड़ी भारी लड़ाई को जीत कर आता तब नगरवासी अपना अपना निज काम छोड़ कर तातील मनाते थे और विजयी पुरुष अपनी सेना-समेत कीर्तन करता हुआ नगर के बीच में हो कर निकलता था। नगरवासी बाज़ार की छतों पर खड़े हो कर जयजयकार करते और फूल बरसाते थे।

जिस समय जूलियस सीज़र पौम्पे को पराजित करके रोम को लौटा उस समय रोम में प्रायः दो दल हो रहे थे। एक सीज़र के अनुकूल था और दूसरा पौम्पे के। यद्यपि पौम्पे के दल की हार हुई थी तौभी अभी रोम में ऐसे लोग मौजूद थे जो पौम्पे से स्नेह रखते थे। उनको यह बात बुरी मालूम हुई कि लोग जूलियस सीज़र के विजय-कीर्तन में सम्मिलित हों। इसलिए फ्लैवियस

और मरूलस लोगों को तितर बितर करने के लिए बाज़ार में आये और फ्लैवियस बहुत से रोमन पुरुषों को इकट्ठा देखकर कहने लगा—

"काहिल लोगो! घर भाग जाओ! क्यों इकट्ठे हो रहे हो? क्या आज तातील है? क्या तुम नहीं जानते कि काम के दिन दूकानों पर बैठ के काम करना चाहिए। (एक आदमी से) अरे तू क्या काम करता है?"

१ ला आदमी—मैं बढ़ई हूँ।

मरूलस—तो तेरे औज़ार कहाँ हैं? अच्छे कपड़े पहने क्यों घूमता है? (दूसरे से) अरे तू क्या करता है?

२ रा आदमी—मुझे आप शायद चमार कहेंगे।

मरूलस—ठीक ठीक बता तू क्या काम करता है?

दूस० आद०—अजी! नाराज़ क्यों होते हो? मैं तुमको भी दुरुस्त कर सकता हूँ।

मरूलस—अरे क्या कहता है?

दूस० आद०—अजी तुम्हारे जूते गाँठ सकता हूँ।

मरूलस—तू जूते गाँठने वाला है?

दूस० आद०—ईमान से, धर्म से मेरा काम जूता सीना है, मैं सुतारी के बल खाता हूँ। अजी, मैं पुराने जूतों का वैद्य हूँ। जब उन्हें रोग लग जाता है तब मैं अच्छा कर देता हूँ।

फ्लैवियस—अरे तो आज तू दूकान पर क्यों नहीं बैठा? यहाँ क्यों फिर रहा है? तेरे साथ इतने आदमी क्यों हैं?

दू० आद०—इसलिए कि इनके जूते घिस जायँ और मुझे काम मिल जाय–पर सच तो यह है कि आज तातील है। वीर जूलियस सीज़र का आज विजय-उत्सव है। इसीलिए हम सब यहाँ आये हैं।

मरूलस—अरे कृतघ्न मनुष्यो! अरे ईंट पत्थर! तुम आज सीज़र का उत्सव करते हो! उसने कौन सा देश जीता है?

हे रोम के दुष्ट आदमियो ! क्या तुम यह नहीं जानते कि आज सीज़र हमारे पौम्पे को मार कर आ रहा है ? हाय ! हाय ! अरे क्या तुम पौम्पे को भूल गये ? देखो, कितनी बार वह देश के लिए लड़ाइयाँ जीत जीत कर विजय-उत्सव मनाने आया और तुमने कितने उत्साह से उसका जयजय-कार किया ? क्या तुम आज यह सब भूल गये ? क्या आज तुम उसी पौम्पे के शत्रु का स्वागत करने आये हो ? हे कृतघ्नता, तेरा बुरा हो ! जाओ—घर को भाग जाओ और ईश्वर से प्रार्थना करो कि वह इस कृतघ्न नगर को नष्ट कर डाले ।

फ्लेवियस—भद्र पुरुषो ! जाओ जाओ और जितने आदमी मिल सकें, टाइबर नदी के तीर एकत्रित होकर, इस आपत्ति पर इतने आँसू बहाओ कि तुम्हारे आँसुओं की एक और नदी बह निकले ।

इस प्रकार इन लोगों के कहने से बहुत से लोग बिना उत्सव मनाये चले गये । परन्तु बहुत से जो सीज़र के मित्र थे वे उत्सव मनाने लगे ।

जिस दिन सीज़र का विजय-उत्सव था उसी दिन 'लूपर्कस' नामी त्यौहार भी था । यह त्यौहार पुराने रोमन लोग अपने देवता लूपर्कस की पूजा के लिए १५ फ़रवरी को मनाते थे । देव लूपर्कस हिन्दुओं की अन्नपूर्णा देवी के समान है । जिस दिन यह उत्सव होता था उस दिन बड़े बड़े सज्जन महात्मा लोग नगर की परिक्रमा करते थे और बड़े बड़े उच्च कुलों की देवियाँ (स्त्रियाँ) इन पुरुषों के मार्ग में हाथ बढ़ा कर खड़ी हो जाया करती थीं । सुना जाता है कि यदि कोई बाँझ स्त्री इन परिक्रमा करनेवालों से छू जाती थी तो उसका बाँझपन दूर हो जाता था ।

जिस समय मरुलस और फ्लैवियस इधर उधर भीड़ कम करने का उद्योग कर रहे थे उसके थोड़ी देर पीछे सीज़र की सवारी निकली। उसके साथ एण्टनी (जो परिक्रमा देने वालों में से मुख्य था), सीज़र की स्त्री कालपूर्णिया, ब्रूटस, उसकी स्त्री पोर्शिया, केसियस, कास्का, सिसरो और डेसियस, पुजारी और बहुत सी भीड़भाड़ थी।

सीज़र सन्तानरहित था। इसलिए उसने अपनी स्त्री को पुकार कर कहा, "कालपूर्णिया, देखो जब एण्टनी परिक्रमा देते हुए आवें तब तुम उनके सामने खड़ी हो जाना और उनको स्पर्श कर लेना।"

(फिर एण्टनी से) "देखो याद रखना, कालपूर्णिया को अवश्य स्पर्श करना। हमने पूर्वजों से सुना है कि परिक्रमा देने वालों को छूने से बाँझपन जाता रहता है।"

कालपूर्णि०—अच्छा स्वामिन्!

एण्टनी—श्रीमन्! आपकी आज्ञा सिर-माथे।

सीज़र—अच्छा अब परिक्रमा शुरू करो।

इतने में एक पुजारी ने आवाज़ दी।

सीज़र—अरे कौन पुकारता है?

कास्का—शोर मत करो। देखो कोई पुकारता है?

सीज़र—अरे मुझे इस भीड़ में कौन पुकारता है?

पुजारी—सीज़र मार्च की १५ वीं तारीख़ याद रखना!

सीज़र—अरे तू कौन है?

ब्रूटस—पुजारी कहता है कि मार्च की १५ वीं तारीख़ याद रखना।

सीज़र—मेरे सामने आ।

कास्का—ओ आदमी आगे आ। सीज़र तुझे देखना चाहते हैं।

सीज़र (पुजारी से)—अरे क्या कहता है ?

पुजारी—मार्च की १५ वीं तारीख़ याद रखना !

सीज़र—बकता है । चल ! हट ! मुझे किसका भय है ?

अब सब लोग तो परिक्रमा देखने चले गये । परन्तु ब्रूटस और केसियस रह गये । केसियस बड़ा चतुर था । उसमें एक विलक्षण गुण यह था कि जिससे थोड़ी देर बात करता उसको अपनी ओर कर लेता था । इसके आत्मा में जूलियस सीज़र की उन्नति देख कर वैर-भाव की अग्नि जल उठी थी और इसका प्रयोजन यह था कि थोड़े से भद्र पुरुषों को अपनी ओर करके सीज़र के नाश का उपाय सोचना चाहिए । इसीलिए वह भीड़ के साथ नहीं गया, किन्तु ब्रूटस को देख कर खड़ा हो गया ।

ब्रूटस बड़ा सज्जन और धर्मात्मा पुरुष था । उसमें छल कपट नाम को भी न था । देश और धर्म का वह इतना हितैषी था कि इनके लिए प्राण देने में भी उसे कुछ संकोच न होता था । परन्तु उसमें वह चातुर्य्य न था जो सांसारिक वैभव की प्राप्ति के लिए ज़रूरी है । पाठकगण उसके गुणों को उसके कामों से समझ लेंगे । वह जैसा स्वयं सच्चा था वैसा दूसरों को भी जानता था । इसीलिए केसियस ने ऐसे पुरुष को अपने कार्य्य की सिद्धि के लिए छाँट लिया और आकर ब्रूटस से कहने लगा:—

केसि०—क्या आप तमाशा देखने नहीं जायँगे ?

ब्रूटस—नहीं !

केसि०—क्यों ?

ब्रूटस—मुझमें वह लड़कपन नहीं है जो एण्टनी में है । आप जाइए ।

केसि०—ब्रूटस ! थोड़े दिनों से मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि आप मुझसे कम स्नेह करते हैं।

ब्रूटस—ऐसा कदापि नहीं है। हां, मुझे कुछ चिन्ता रहती है जिसका वर्णन मैं अपने मित्रों से करना नहीं चाहता क्योंकि उनको व्यर्थ दुःख होगा। इससे यह नहीं समझना चाहिए कि मैं अपने मित्रों से कम स्नेह करता हूँ।

केसि०—तो यह मेरी भूल है कि मैं अपने मित्र के सच्चे भाव को भूल गया। मित्रवर ! इसी विचार से मैंने बहुत सी आवश्यक बातें आप से नहीं कहीं। मित्र, यह तो बताओ, क्या तुम अपना मुँह देख सकते हो ?

ब्रूटस—नहीं केसियस, आंख अपने को नहीं देख सकती जब तक दर्पण न हो।

केसि०—यह ठीक है। परन्तु बड़े खेद की बात है कि तुम्हारे पास कोई ऐसा दर्पण नहीं जिसमें तुम अपना मुँह देख सको। अर्थात् तुम अपने गुणों को जान सको। रोम भर आप के गुणों की प्रशंसा करता है। सब कहते हैं कि "क्या अच्छा होता अगर ब्रूटस के आंखें होतीं और वह अपनी योग्यता को जान सकता।"

ब्रूटस—केसियस, मुझे क्यों कांटों में घसीटते हो ?

केसि०—सुनो, सुनो, मैं तुम्हारा दर्पण बनता हूँ। तुम मेरे द्वारा अपने गुणों को जानो। देखो तो सही कि तुम कितने योग्य पुरुष हो।

इतने में एक बड़ा शोर सुनाई दिया और ब्रूटस ने कहा:—

"यह क्या ! यह क्या ! मुझे शङ्का होती है कि सीज़र को राजा की उपाधि दे दी गई।"

केसि०—तुमको शङ्का होती है! यदि शङ्का होती तो तुम ऐसा करने न देते।

ब्रूटस—करने तो न देता। परन्तु मुझे सीज़र से प्रेम है। कहो तुम मुझसे क्या कहना चाहते हो। यदि कोई देश के हित का काम हो तो मैं तन-मन-धन से तैयार रहूँ।

केसि०—मैं जानता हूँ कि तुममें यह गुण है। मैं देश के हित की ही बात कहना चाहता हूँ। मैं नहीं जानता कि तुम्हारे या अन्य पुरुषों के क्या विचार हैं। परन्तु मैं सीज़र के अधीन रहने से तो न जीना ही अच्छा समझता हूँ। हम तुम दोनों उसी स्वतंत्र-भूमि के पुत्र हैं जिनका कि सीज़र है। हम तुम दोनों उतनाही शीतोष्ण का सहन कर सकते हैं जितना कि सीज़र। देखो एक दिन बहुत आँधी चल रही थी और टाइबर नदी में तूफ़ान आ रहा था। सीज़र ने मुझसे कहा, "केसियस! क्या तुम इस समय तैर सकते हो?" मैं कूद पड़ा और मेरे पीछे सीज़र भी। तूफ़ान बढ़ गया और हम दोनों तैरने लगे। परन्तु नियत स्थान पर पहुँचने से पहले सीज़र ने चिल्लाकर कहा, "केसियस, बचाओ नहीं तो डूबा।" मैं झट उसे खींच लाया। वही सीज़र आज देव हो गया और केसियस उसका सेवक है। अभी थोड़े दिन हुए सीज़र को जूड़ी आ गई और वह थर थर काँपने लगा। मैं सच कहता हूँ कि इस देव के होश जाते रहे। होठों पर स्याही आ गई और लड़कियों की तरह कहने लगा, "टिटीनस! पानी पिला दे।" परन्तु हे ईश्वर! ऐसा निर्बल आदमी आज सर्वोपरि बना बैठा है!

इतने में फिर शोर हुआ और ब्रूटस ने कहा:—

"मुझे मालूम होता है कि लोग सीज़र को कोई नई उपाधि दे रहे हैं"। केसियस ने उत्तर दिया:—

"हां, हां, आज कल उसीके नाम की धूम है। वह हम लोगों का अनादर करता है। ब्रूटस! हमारे भाग्य का कुछ दोष नहीं। दोष केवल हमारा ही है जो हाथ पैर हिलाना नहीं चाहते। ब्रूटस और सीज़र! भला सीज़र इतना प्रसिद्ध क्यों है जितने तुम नहीं! दोनों शब्दों को कागज़ पर लिखो तो तुम्हारा नाम सुन्दर मालूम होगा। उच्चारण करो तो भी तुम्हारा नाम बुरा नहीं है। फिर बताओ कि सीज़र ऐसी कौन सी चीज़ खाता है कि वह इतना बड़ा हो गया। रोम! आज तेरे शरीर में पूर्वजों का लोहू नहीं है। भला कभी ऐसा समय हुआ था कि रोम में एक ही आदमी सब कुछ हो सके? क्या रोम में आज से पहले कोई कह सकता था कि यहां सबसे बड़ा एक पुरुष है? क्या पहले हम सब बराबर नहीं थे? हम सुनते हैं कि पहले समय में एक ब्रूटस था जिसने राजा के विरुद्ध प्रजा का राज्य स्थापित किया था।"

ब्रूटस—"मुझे ख़ुशी है कि तुम मेरे मित्र हो। मैंने इन बातों पर कई बार विचार किया है। इस समय इतना ही काफ़ी है। फिर इस विषय पर बात-चीत करेंगे। मैं ऐसी दशा में रोमन होने से गँवार होना पसन्द करता हूँ।"

जब यहां ये बातें हो रही थीं सीज़र और सब लोग परिक्रमा से लौट कर आते हुए दिखाई दिये और इन लोगों ने इरादा किया कि कास्का से सब हाल सुनना चाहिए।

इतने में सीज़र आगया और उसने चुपके से कहाः—"एण्टनी"

एण्टनी—"श्रीमहाराज।"

सीज़र—"मैं अपने पास मोटे आदमियों को पसन्द करता हूँ। क्योंकि ऐसे आदमी रात भर आराम से सोते हैं। केसियस जैसे दुबले पतले मनुष्य मुझे प्रिय नहीं हैं। क्योंकि इनका मन किसी न किसी विचार में ही लगा रहता है। ऐसे पुरुषों से डरना चाहिए।"

एण्टनी—केसियस अच्छा आदमी है। इससे क्यों डरना!

सीज़र—अगर यह मोटा होता तो अच्छी बात होती। अगर डरता तो सबसे पहले मुझे केसियस से डरना चाहिए था। यह बहुत पढ़ता है, बहुत सोचता है, खेल-कूद नहीं चाहता, न राग सुनता है, न कभी मुसकराता है। ऐसे पुरुष अपने से बड़े पुरुषों को देखकर कभी ख़ुश नहीं होते। और इसीलिए इनसे डरना चाहिए। मैं सीज़र हूँ। मैं कभी नहीं डरता, परन्तु मैं यह कहता हूँ कि ऐसे पुरुषों से डरते रहना चाहिए।"

अब सीज़र और उसके साथी तो चले गये, कास्का को ब्रूटस ने रोक लिया और कास्का ने सब हाल उनसे कह सुनाया कि कई बार शोर होने का कारण यह था कि लोगों ने सीज़र को राजमुकुट भेंट किया। परन्तु सीज़र ने तीन बार उसे अँगुली से हटा दिया। जब जब वह इनकार करता था, लोग शोर करते थे। कास्का ने यह भी कहा कि वस्तुतः सीज़र की इच्छा राजा बनने की थी और एण्टनी ने इसीलिए अपने हाथ से मुकुट पेश किया था परन्तु केवल दिखलाने के लिए उसने उस समय मुकुट स्वीकार करने से इनकार किया।

इसके पश्चात् यह निश्चित हुआ कि ब्रूटस, और कास्का दोनों अगले दिन सायंकाल को केसियस के घर पर एकत्रित हों और वहाँ सीज़र के दबाने और राज्य को स्वतंत्र रखने के लिए उपाय किया जाय।

इनमें सबसे मुख्य पुरुष केसियस ही था। उसे एक मिनट भी सीज़र को देखकर कल न पड़ती थी। वह यही चाहता था कि जिस प्रकार हो सके लोगों को उत्तेजित करके सीज़र का नाश करना चाहिए।

रोम की राज-सभा ने यह निश्चय किया कि १५ वीं मार्च को सीज़र को इटली देश छोड़कर अन्य सब देशों का राजा बनाना चाहिए । उसी तारीख़ को एक मुकुट दिया जाने को था । इस बात से रोम के बड़े बड़े भद्र पुरुष और भी नाराज़ हो गये । वह यह नहीं चाहते थे कि जिन राजाओं के अत्याचार से तङ्ग आकर उनके पूर्वजों ने ७०० वर्ष पहले अपने को स्वतंत्र कर लिया था वही राजा फिर रोम पर राज्य करने लगें । जब केसियस कुछ लोगों को स्वतंत्रता के लिए उत्तेजित कर रहा था, बहुत से लोग सीज़र की राजा बनने की इच्छा को जानकर शीघ्र ही केसियस से मिल गये ।

१४ वीं मार्च की रात को बहुत बड़ी आँधी आई, बादल गरजने लगा और पानी बड़े ज़ोर से बरसने लगा । कहा जाता है कि उस रात को रोम की गलियों में बड़ी विचित्र और भयानक चीज़ें दिखाई दीं । लोगों ने देखा कि एक आदमी का हाथ बहुत बड़ी मशाल के समान जल रहा था और उसे कुछ कष्ट नहीं हुआ । बाज़ार में शेर इधर उधर फिरने लगे । बहुत सी औरतों ने देखा कि जलते हुए आदमी गलियों में चल रहे हैं । उल्लू जो रात को बोलता है दोपहर के समय बोलता हुआ सुनाई पड़ा ।

केसियस, कास्का, सिना आदि सीज़र के विरोधियों ने यह समझा कि स्वर्ग के देवता सीज़र की राजगद्दी से दुःखी होकर अपनी अप्रसन्नता दिखा रहे हैं और जिस प्रकार हो सके इनको सन्तुष्ट करना चाहिए ।

ब्रूटस पहले ही से प्रजापालित राज्य और स्वतन्त्रता का मित्र था । परन्तु सीज़र की मित्रता के कारण वह उसके विरो-

थियों में सम्मिलित होना नहीं चाहता था। जिस रात का ऊपर वर्णन किया जा चुका है उस रात को केसियस ने किसी मनुष्य के हाथ एक पर्चा ब्रूटस की खिड़की में रखवा दिया। जब ब्रूटस रात को उठा तब उसने उस परचे को पढ़ा। उसमें लिखा हुआ था:—

"ब्रूटस! तू सो रहा है। उठ और देख;
क्या रोम इसी प्रकार ... ... ब्रूटस!
तू सो रहा है, उठ!"

ब्रूटस ने कई बार पर्चे को पढ़ा और विचार किया। वह अपने मन में कहने लगा:—

"रोम का उद्धार जूलियस सीज़र की मृत्यु से होगा। मुझे तो सीज़र से कोई वैर नहीं है। हां, देश के लिए ऐसा करना चाहिए। कल उसे राजमुकुट मिलेगा। फिर देखें उसका स्वभाव किस प्रकार का हो जाय। इस समय यद्यपि सीज़र अच्छा है परन्तु वह बहुत हानि पहुँचा भी तो नहीं सकता। सम्भव है कि कल राजा होकर अत्याचार करने लगे। लोग नम्रता से ही उन्नति करते हैं और जब उन्नति हो जाती है तब उसी नम्रता को, जिसके द्वारा वे इतना बढ़े, भूल जाते हैं! इनकी दशा ठीक ठीक एक ज़ीने के समान है। जिस जिस सीढ़ी पर हम चढ़ते जाते हैं उसी उसी की ओर पीठ करते जाते हैं। इसी प्रकार जिन शुभ गुणों की सहायता से मनुष्य उन्नति करता है उन्हीं को फिर भूल जाता है। संभव है कि यही हाल सीज़र का भी हो। इसलिए क्यों न अभी रोक दें। यद्यपि इस समय सीज़र में कोई दोष नहीं है परन्तु हम तो यह दिखलावेंगे कि यदि सीज़र जीवित रहा तो ये

दोष उसमें उत्पन्न होजायँगे। सीज़र को साँप के उस अण्डे के समान समझना चाहिए जो यदि सेया जाय तो बड़ा हानिकारक होगा। इसलिए अण्डा फोड़ डालना ही उचित है।"

यह सब विचार करके उसने निश्चय कर लिया कि देशहित के लिए स्वार्थ न करना चाहिए और यदि रोम सीज़र की मृत्यु से ही बच सकता है तो सीज़र के मारे जाने से कोई हानि नहीं है।

इसके पश्चात् ढाई बजे प्रातःकाल मुँह अँधेरे लोग पौम्पे के थियेटर में (यह एक मकान का नाम है) एकत्रित हुए। इनमें केसियस, कास्का, डीसियस, सिना आदि सभी थे। जब सब विचार हो चुका तब वे सब ब्रूटस के घर पर आये और सबने दृढ़ व्रत किया कि सीज़र का नाश अवश्य करना चाहिए।

डीसियस बोला—"क्या सीज़र के सिवा कोई और भी मारा जायगा?"

केसियस०—डीसियस! तुमने ख़ूब कहा। मेरी राय में एण्टनी को भी लेना चाहिए। एण्टनी सीज़र का मित्र है और अगर वह बाक़ी रहेगा तो हमारे सबके लिए बड़ी बुराई होगी। एण्टनी और सीज़र दोनों ही मरने चाहिए।

ब्रूटस—नहीं नहीं, ऐसा नहीं होना चाहिए। नहीं तो नगर के लोग हमको हत्यारा कहेंगे। सीज़र का अपराध यह है कि वह राजा बनना चाहता है। परन्तु एण्टनी का क्या अपराध है? वह तो सीज़र का एक अङ्ग है। जब आत्मा शरीर से निकल गया तो अङ्ग किस काम का

केसिय०—मुझे तो उसका भय है। उसकी सीज़र से बड़ी मित्रता है।

ब्रूटस—यह मित्रता उसी के लिए दुःखदायी होगी। हमारे लिए क्या। अधिक से अधिक यह कि वह सीज़र का स्मरण करके मर जायगा।

इस प्रकार यही निश्चय हुआ कि सीज़र के सिवा और किसी पर आक्रमण न किया जाय। परन्तु यहाँ एक प्रश्न और उठा। अर्थात् सम्भव है कि इस भयानक रात का सोच विचार करके कल सीज़र सभा में न आवे। क्योंकि वह सगुन* और असगुन† का बहुत विचार करता था। पर डीसियस ने इस शङ्का को दूर कर दिया और कहा कि मैं किसी न किसी प्रकार उसे अवश्य राजसभा में ले आऊँगा क्योंकि वह ख़ुशामद बहुत चाहता है।

ऐसा विचार कर और दृढ़ रहने की शपथ खाकर वे सब अपने अपने घर चले गये।

उसी रात को सीज़र की स्त्री कालपूर्णिया ने यह स्वप्न देखा कि सीज़र के सिर से रुधिर की धारें बह रही हैं और रोमन लोग उससे अपना हाथ धो रहे हैं। इसलिए प्रातःकाल उसने उठकर प्रार्थना की कि "नाथ! आज आप घर से बाहर न निकलें।"

सीज़र—मैं अवश्य जाऊँगा। भय सीज़र को केवल पीछे से ही धमकाता है। मुँह के सामने नहीं आता। मेरा मुँह देखते ही भय भाग जाता है।

---

* शुभ-लग्न। † अशुभ-लग्न।

कालपू०—सीज़र! मैंने कभी हठ नहीं किया। पर आज मुझे डर लगता है। कल की रात बड़ी भयानक थी। चौकीदार कहते हैं कि गलियों में शेर गर्जता था, मुर्दे क़बरों से उठ उठ कर नगर में फिरते थे, बादलों पर युद्ध होता दिखाई पड़ा। सीज़र, यह सब भयानक बातें हैं। हे नाथ, आज तुम सभा में मत जाओ।

सीज़र—जो ईश्वर करेगा वह होगा। उसे कौन रोक सकता है। सीज़र तो अवश्य जायगा। ये बातें तो सबके लिए ही एक सी हैं। मुझ पर क्या विशेषता है।

कालपू०—जब साधारण मनुष्य मरते हैं तब तारे नहीं टूटते। पर बड़े लोगों की मृत्यु पर आकाश में कुछ न कुछ चिह्न दिखाई देते हैं।

सीज़र—भीरु लोग अपनी मौत से पहले कई बार मर चुकते हैं। वीर पुरुष मृत्यु का स्वाद एक बार से अधिक नहीं चखते। मुझे आश्चर्य है कि लोग मृत्यु से क्यों डरते हैं। वह तो एक न एक दिन अवश्य आती ही है। जब मरना होगा तभी मरेंगे।

सीज़र ने देवता को बलि देने के लिए पुजारी को आज्ञा दी। पुजारी ने कहला भेजा कि पशु को जब बलि देने के लिए मारा तब उसका दिल नहीं निकला। यह सगुन अच्छा नहीं है। आप आज बाहर न जायें।

सीज़र ने कहाः—

"देवता हमको भीरु बनाते हैं। यदि मैं आज सभा में न जाऊँगा तो मुझे भी बेदिल का पशु कहना चाहिए। सीज़र घर में न रहेगा। भय स्वयं जानता है कि सीज़र भय से भी

भयानक है। मैं और भय दोनों सहोदर भाई हैं। उनमें मैं बड़ा हूँ।"

काल पू०—"नाथ, आप नहीं डरते—यह सच है। पर आज आप मेरे डर के कारण न जाइए। हाथ जोड़ती हूँ। स्वामिन्, एण्टनी जाकर सभासदों से कह देंगे कि आपका चित्त अच्छा नहीं है।

सीज़र मान गया, परन्तु इतने में डीसियस आगया और उसने उससे कहा कि "महाराज सभा को चलिए।" सीज़र ने जाने से इनकार किया। कारण पूछने पर सीज़र ने कह दिया कि "काल-पूर्णिया डरती है। रात उसने बड़ा भयानक स्वप्न देखा है।" डीसियस ने हँस कर कहाः—

"महाराज! यह स्वप्न अच्छा है। इसका अर्थ यह है कि आप ऐसे महापुरुष हुए जिनके द्वारा रोम पुनर्जीवित होगा। रुधिर शक्ति देता है। रोमन लोग आपसे ही रुधिर अर्थात् शक्ति प्राप्त करेंगे।

सीज़र—यह तो ख़ूब कहा।

डीसि०—भगवन्! मैं तो साफ़ कहता हूँ। सभा ने आज आपको राजमुकुट देना स्वीकार किया है। सभासद कहेंगे कि सीज़र डर गया। उठी पैंठ आठवें दिन लगती है। लोग हँसेंगे और कहेंगे, "भाई, इस मुकुट को उठा रक्खो जब सीज़र की स्त्री कोई अच्छा स्वप्न देखेगी तब राज्याभिषेक होगा।"

उसी समय ब्रूटस, केसियस, कास्का आदि सब आगये और सीज़र उनके साथ राजसभा को चला गया।

जब सभा में सब लोग अपने अपने स्थानों पर बैठ गये तब एक मनुष्य मैटीलस सिम्बर नामी ने, जिसके भाई को

किसी अपराध में देश निकाला हुआ था, सीज़र से प्रार्थना की कि उसे क्षमा कर दिया जाय।

ब्रूटस, केसियस, कास्का, इत्यादि सबने बड़ी सिफ़ारिश की, परन्तु सीज़र ने एक न सुनी और कहा, "मेरा निश्चय ध्रुव तारे के समान दृढ़ और अचल है। मैं अपने शब्दों को बदल नहीं सकता। अब तो सिम्बर को देशनिकाला हो चुका।"

सीज़र के कोप को सुनकर कास्का आगे बढ़ा और 'सहायता करो' यह शब्द कह कर एक तलवार सीज़र के मारी। उस पर अन्य लोगों ने भी अपनी अपनी तलवारें मारीं। जब सीज़र ने देखा कि उसका मित्र ब्रूटस भी मार रहा है तब यह कहकर गिर पड़ा—"अरे ब्रूटस तूभी? अच्छा सीज़र! फिर मर जाओ।"

अब सब सभासदों ने भागना शुरू किया। एण्टनी भाग गया। ब्रूटस आदि सब घातक 'स्वतन्त्रता की जय' बोलने लगे। उन सबने सीज़र के रुधिर में हाथ धोये और इरादा किया कि बाज़ार में चल कर सब लोगों को बतलाना चाहिए कि हमने सीज़र के क्यों प्राण लिये। जब वे वहाँ खड़े हुए थे तब एण्टनी का नौकर आया और कहने लगा, "मेरे स्वामी का यह कथन है कि ब्रूटस भद्र पुरुष, बुद्धिमान्, वीर और धर्मात्मा है। सीज़र निडर, वीर, तेजवान् और प्रिय था। मैं ब्रूटस को प्यार और आदर करता हूँ। मैं सीज़र का डर मानता था और उसको प्यार और आदर करता था। अगर ब्रूटस प्रतिज्ञा करे कि मुझे कोई न मारेगा और मुझे यह समझा दिया जायगा कि सीज़र इसी दण्ड के योग्य था तो मैं सीज़र का स्नेह छोड़ दूँगा और आज से ब्रूटस का अनुयायी हो जाऊँगा।"

ब्रूटस—"अपने स्वामी से कह दो कि वे यहाँ आवें। हम उनको सब बातों का निश्चय करा देंगे। अपने धर्म की क़सम, कोई उनको हानि न पहुँचावेगा।"

एण्टनी घर से आया और राज-सभा में सीज़र का शव देखकर चिल्ला उठा "हे वीर सीज़र! तू आज नीचे पड़ा है! क्या तेरी विजय, तेरी शक्ति, तेरा तेज, सब धूल में मिल गया! (ब्रूटस आदि से) सज्जनो! मैं नहीं जानता कि तुम्हारा क्या अभिप्राय है। न जाने अभी किसके किसके प्राण जायँगे? कौन बुरा है? अगर मैं भी हूँ तो मेरी मृत्यु के लिए सीज़र की मृत्यु से उत्तम कोई समय न होगा। अगर इच्छा है, तो रुधिर भरे हाथों से मुझे भी समाप्त कर दो। आप हज़ार वर्ष जीते रहें। मुझे तो सीज़र के साथ मरना ही अच्छा लगता है।"

ब्रूटस—"एण्टनी, हमारे हाथों से क्यों मरते हो। देखने में तो हम घातक मालूम होते हैं। पर तुमने केवल हमारे हाथ ही देखे हैं हृदय नहीं देखा। हमने रोम पर तरस खा कर यह हत्या की है। तुम्हारे लिए हमारी तलवारें कुन्द हैं। तुम हमारे भाई हो।"

केसियस—एण्टनी, तुमको भी नये राजप्रबन्ध में भाग मिलेगा।

ब्रूटस—सन्तोष करो। हम साधारण लोगों को शान्त कर लें फिर तुमको भी समझा देंगे।

एण्टनी ने इस पर सब लोगों से हाथ मिलाये और प्रेम से बात-चीत करना आरम्भ किया। परन्तु ज्यों ही उसने सीज़र के शव की ओर आँख उठाई उसकी त्यौरी बदल गई और वह कहने लगा।

"हाय सीज़र मैं तेरा मित्र था। यदि आज तेरा आत्मा आकाश से देखता हो तो तुझे मौत से भी अधिक यह देख कर कष्ट होगा कि तेरा मित्र एण्टनी तेरे घातकों से हाथ मिला रहा है। अगर मेरे इतनी आँखें होतीं जितने तेरे शरीर पर घाव हैं और यदि उन आँखों से इस प्रकार आँसू निकलते जैसे तेरे घावों से रुधिर निकल रहा है, तो यह बात तेरे घातकों से हाथ मिलाने की अपेक्षा अधिक उपयुक्त थी। सीज़र! क्षमा कर। तू यहाँ खड़ा था। तेरे घातक यहाँ खड़े थे। तू यहाँ गिर पड़ा। संसार, तू इस हरिण के लिए जङ्गल था। लोगों ने तेरा शिकार कर लिया।"

केसिय०—हैं! एण्टनी यह क्या?

एण्टनी—क्षमा करो। सीज़र के शत्रु भी यही कहेंगे। मैं तो मित्र था।

केसि०—मैं तुम्हें दोष नहीं देता। पर यह तो बताओ। क्या तुम हमारा साथ दोगे?

एण्टनी—"मैंने हाथ तो तुमसे इसीलिए मिलाया था। सीज़र की लाश देख कर मैं बदल गया। अगर तुम मुझे सन्तुष्ट कर दो कि तुमने धर्म के लिए ऐसा काम किया तो मैं तुम्हारा मित्र हूँ।"

ब्रूटस—अवश्य! अवश्य!

एण्टनी—"और एक प्रार्थना यह है कि मैं बाज़ार में सीज़र के शव को लोगों को दिखाऊँ और मृतक-संस्कार सम्बन्धी एक व्याख्यान दूँ।"

केसियस ने इसका विरोध किया परन्तु ब्रूटस ने यह कह कर आज्ञा दे दी कि पहला व्याख्यान मेरा हो और तुम मेरे विरुद्ध कुछ न कहो।

एराटनी सीज़र के शरीर को बाज़ार में ले आया। पहला व्याख्यान ब्रूटस का हुआ। वह यह था।

"प्यारे स्वदेश भाइयो! प्यारे रोमन मित्रो! थोड़ी देर मेरी बात सुनो! चुप रहो, जिससे सुन सको। मेरा विश्वास करो। अगर आपमें से कोई सीज़र का मित्र है तो आज मैं उसे बताता हूँ कि ब्रूटस सीज़र का कम मित्र नहीं है। फिर अगर तुम पूछो कि मैंने सीज़र को क्यों मारा तो मेरा उत्तर यह है। "मैं सीज़र से कम स्नेह नहीं करता किन्तु रोम से अधिक प्रेम रखता हूँ।" क्या तुम यह चाहते हो कि सीज़र जीवित रहे और नगरवासी परतंत्र? अथवा यह अच्छा है कि सीज़र मर गया और सब स्वाधीन हो गए। सीज़र मुझे प्यार करता था। इसलिए मैं उसके लिए आँसू बहाता हूँ। सीज़र भाग्य-वान था इसका मुझे हर्ष है। सीज़र वीर था इसलिए मैं उसका आदर करता हूँ। परन्तु सीज़र राज पदवी चाहता था इसलिए मैंने उसे मार डाला। स्नेह के लिए आँसू हैं! भाग्य के लिए हर्ष; वीरता के लिए आदर और राज-इच्छा के लिए मृत्यु। कौन ऐसा नीच है जो परतंत्र रहना चाहे? अगर कोई हो तो कहे। मैंने उसके विरुद्ध काम किया है। कौन ऐसा है जो सच्चा रोमन होना नहीं चाहता? अगर कोई हो तो कहे! मैंने उसके विरुद्ध काम किया है। कौन ऐसा है जिसे देश से हित नहीं। अगर हो तो कहे। मैंने उसे अप्रसन्न किया है। बताओ! मैं ठहरता हूँ।"

सब लोग बोल उठे—"कोई नहीं!"

ब्रूटस—तो मैंने किसीको अप्रसन्न नहीं किया! मैंने सीज़र के साथ वही किया जो तुम ब्रूटस के साथ करोगे। हम उसके यश की प्रशंसा करते हैं और उसका संस्कार विधि और

सन्मानपूर्वक होगा। यहाँ एएटनी लाश को लिए आ रहा है। बस मुझे यही कहना था। मैंने अपने देश के हित के लिए, अपने सब से प्यारे का वध किया और वही तलवार अपने लिए भी तैय्यार है जब कभी मेरी मृत्यु मेरे देश के लिए आवश्यक हो।"

सबलोग—"आयुष्मान् हो। ब्रूटस! आयुष्मान् हो! ब्रूटस बड़ा सज्जन है। ब्रूटस को ही सीज़र बनादो।"

अब एएटनी खड़ा हुआ और कहने लगा! "मित्र और स्वदेश भाइयो! मेरी बात सुनो। मैं सीज़र को दफ़न करने आया हूँ। उसकी प्रशंसा करने नहीं आया। लोगों की बुराई रह जाती है, भलाई उनके साथ चली जाती है। यही हाल सीज़र का है। योग्य ब्रूटस ने कहा है कि सीज़र राज का इच्छुक था अगर यह बात ठीक है तो यह बड़ा भारी अपराध था और उसको बड़ाभारी दण्ड मिला। ब्रूटस बड़ा सज्जन है और वे सब सज्जन हैं जो उसके साथ हैं। आज ब्रूटस और उसके साथियों की आज्ञा पाकर मैं सीज़र की मृत्यु पर व्याख्यान देने आया हूँ। सीज़र मेरा मित्र था और मेरे साथ न्याय करता था; परन्तु ब्रूटस कहता है कि सीज़र दम्भी था, ब्रूटस सज्जन आदमी है। सीज़र ने कई लड़ाइयाँ जीतीं और सैंकड़ों शत्रु क़ैद किये जिनके उद्धार मूल्य (वह धन जो किसी क़ैदी को छुड़ाने के लिए दिया जाता है) से राज का कोश भरा पड़ा है। क्या यही सीज़र की दुराकांक्षा थी? जब ग़रीबों को कष्ट होता था सीज़र रोता था! दुराकांक्षा ऐसी नहीं होती! पर ब्रूटस कहता है कि सीज़र दुराकांक्षी था, और ब्रूटस सज्जन है। तुम सबने देखा होगा कि लूपर्कल त्यौहार के दिन मैंने तीन बार राजमुकुट उसको भेंट किया

और उसने तीन बार इसको ग्रहण करने से इनकार किया। क्या यही दुराकांक्षा थी ? पर ब्रूटस कहता है कि सीज़र दुराकांक्षी था और ब्रूटस सज्जन है। मैं यहाँ ब्रूटस के कथन का खण्डन करना नहीं चाहता। मैं जो जानता हूँ सो कहता हूँ। पहिले तुम सब सीज़र से प्रेम करते थे—क्या यह सब प्रेम बिना कारण के था ? फिर अब कौन सा कारण हो गया कि तुम इसकी मृत्यु पर शोक नहीं करते। हे न्याय ! तू पशुओं में चला गया और मनुष्य जाति अन्यायी हो गई ! (आँसू भरकर और गिड़गिड़ाकर) क्षमा करो। मेरा जी सीज़र की लाश में पड़ा हुआ है और जब तक मैं सम्हल न जाऊँ आगे नहीं बोल सकता।"

एक रोमन श्रोता—यह तो बड़ी समझ की बात कहता है।

दूसरा श्रोता—सच पूछो तो सीज़र के साथ बड़ा अन्याय हुआ।

तीसरा श्रोता—कहता तो ठीक है।

चौथा श्रोता—तुमने सुना भी ?—उसने राज मुकुट अस्वीकार किया। फिर तो सिद्ध है कि वह दुराकांक्षी नहीं था।

पहिला श्रो०—घातकों को दण्ड मिलना चाहिये।

दूसरा श्रो०—बिचारे की आँखे रोते रोते लाल पड़ गई हैं।

तीसरा श्रो०—रोम भर में एण्टनी से अच्छा कोई आदमी नहीं है।

चौथा श्रो०—सुनो सुनो, वह कहने लगा।

एण्टनी—कल तक सीज़र का शब्द संसार भर के लिए प्रमाणिक था। आज वह यहाँ पड़ा है और कोई मनुष्य ऐसा नीच नहीं है जो इसका आदर करे। भाईयो ! यदि मैं ग़दर मचाने के लिए तुम्हारे मनों को उत्तेजित करदूँ तो

मैं ब्रूटस के साथ अन्याय करूँगा, केसियस के साथ अन्याय करूँगा—क्योंकि तुम सब जानते हो कि यह सब लोग सज्जन हैं। मैं इनके साथ अन्याय न करूँगा चाहे मृत पुरुष के साथ अन्याय करूँ। अपने साथ अन्याय करूँ, पर इन सज्जनों के साथ अन्याय न करूँगा। लेकिन यह मेरे पास सीज़र की वसीयत है जो मुझे उस के बक्स में मिली थी। इस पर सीज़र की मुहर है। क्षमा कीजिए मैं इसको पढ़ना नहीं चाहता। क्योंकि यदि मैंने इसे पढ़ा तो तुम सब लोग सीज़र की लाश से गले मिलोगे। उसके पवित्र रुधिर में रूमाल भिगोओगे और उसे सीज़र के स्मारक चिन्ह की तरह रक्खोगे। नहीं नहीं। मरते समय उसे अपने पुत्रों को देजाओगे कि यह एक बड़े महात्मा का स्मारक चिन्ह है।"

श्रोतागण—नहीं! नहीं! वसीअत पढ़ो। सीज़र की वसीअत पढ़ो। हम सब सुनेंगे।

एण्टनी—भद्रपुरुषो! सन्तोष करो। मुझे वसीअत पढ़नी न चाहिए। यही अच्छा है कि तुमको यह मालूम न हो कि सीज़र तुम्हें कितना चाहता था। तुम लकड़ी-पत्थर आदि जड़ पदार्थ तो हो ही नहीं। तुम तो जीते-जागते मनुष्य हो। सीज़र की वसीअत सुनते ही तुम उत्तेजित हो जाओगे। तुम बावले हो जाओगे। यही अच्छा है कि तुम यह न जानो कि सीज़र ने तुम्हारे साथ क्या किया, नहीं तो न जाने तुम सब क्या कर डालो।"

श्रोतागण—वसीअत पढ़ो। हम सुनेंगे। सीज़र की वसीअत।

एण्टनी—सन्तोष कीजिए। ठहरिए। मैंने भूल की जो आपसे यह सब बातें कह दीं। मुझे खेद है कि इससे उन सज्जनों को हानि पहुँचेगी जिनकी तलवारों ने सीज़र के प्राण लिये।

चौथाश्रोता—घातक हैं घातक! सज्जन नहीं।

सब लोग—वसीअत सुनाओ।

एण्टनी—"तो क्या तुम पढ़ने को मुझे मज़बूर करते हो। अच्छा, सीजर की लाश के चारों ओर खड़े हो जाओ-पहिले मैं तुमको उस मनुष्य को दिखाना चाहता हूँ जिसने वसीअत की है। क्या मुझे आज्ञा है?"

सब लोग—हाँ आज्ञा है!

एण्टनी—"जो तुम्हारी आँखों में आँसू हों तो उनको बहाने के लिए तैयार रहो। (सीज़र का कोट दिखाकर) देखो तुम सब इस कोट को पहिचानते हो? यह सीज़र ने पहले पहल उस दिन पहिना था जब उसने नरवाई लोगों को पराजित किया था। देखो केसियस की तलवार यहाँ लगी। द्वेषी कास्का ने यहाँ मारा। मित्र ब्रूटस की तलवार यहाँ पर पड़ी। और जब उसने अपनी तलवार घाव में से निकाली तो सीज़र का रुधिर उसके साथ साथ चला! तुम सब जानते हो कि ब्रूटस सीज़र का प्रेमपात्र था। हे ईश्वर:! तू साक्षी है कि सीज़र को ब्रूटस से कितना प्रेम था। यह घाव सबसे कठिन था! जब महात्मा सीज़र ने ब्रूटस को मारते देखा तो कृतघ्नता ने अस्त्रशस्त्र से भी जल्दी उसको परास्त कर दिया। सीज़र का हृदय विदीर्ण हो गया और अपने कोट से अपना मुँह छिपाकर वह पौम्पे की मूर्ति के नीचे गिर पड़ा।

हाय! उस समय मैं तुम और सब देशहितैषी गिर पड़े। हाय! अब तुम रोते हो। मैं देखता हूँ कि तरस के मारे तुम्हारा जी भर आया है। दयालु पुरुषो! क्या तुम घायल सीज़र को देखकर रो रहे हो? (कोट उठाकर) देखो घातकों ने किस प्रकार इसको घायल किया है।"

पहिला श्रो०—हाय! हाय! कैसा शोकमय दृश्य है।

दूसरा श्रो०—महात्मा सीज़र!

तीसरा श्रो०—हाय! कुघड़ी।

चौथा श्रो०—घातक! घातक।

पहिला श्रो०—बड़ा मर्मभेदी दृश्य है।

दूसरा श्रो०—हम इसका बदला लेंगे।

सब लोग—दौड़ो! मारो। आग लगा दो। किसी घातक को जीता न छोड़ो।

एण्टनी—देश भाइयो! ठहरो ठहरो।

पह० श्रो०— देखो एण्टनी बोलता है!

एण्टनी—मित्रो! बलवा करने के लिए मैंने तुमसे यह सब बातें नहीं कहीं। जिन्होंने यह हत्या की वे सब सज्जन हैं। न जाने किस निज-सम्बन्धी कारण से उन्होंने सीज़र के प्राण लिये। वे सज्जन और बुद्धिमान् हैं। अवश्य कोई न कोई कारण होगा। मित्रो मैं तुमको उत्तेजित करने नहीं आया। मुझमें ब्रूटस की भाँति वाक्पटुता नहीं है। तुम सब जानते हो कि मैं एक सीधासाधा आदमी हूँ। मुझे अपने मित्रों से प्रेम है। वे सब लोग जिन्होंने मुझे यहाँ कुछ कहने की आज्ञा दी है यह बात भली प्रकार जानते हैं कि मुझमें मनुष्यों को उत्तेजित करने की योग्यता नहीं है। मैं तो सीधी बात कहता

हूँ और जो मैं कहता हूँ वह तुम पहले ही से जानते हो । मैं तो तुम को सीज़र के घाव दिखाता हूँ—यह बिचारे गूँगे घाव तुम पर क्या प्रभाव डाल सकते हैं । पर जो मैं ब्रूटस होता और ब्रूटस एण्टनी होता तो एण्टनी अवश्य तुम्हारे हृदयों में खलबली डाल देता और सीज़र के हर एक घाव में ऐसी शक्ति उत्पन्न कर देता कि आज रोम को ईंट ईंट ग़दर मचा देती ।

सब श्रोतागण—"हम सब ग़दर मचावेंगे !"

पहला श्रोता—"हम ब्रूटस का घर जला देंगे ।"

तीसरा श्रो०—चलो घातकों को पकड़ लें ।

एण्टनी—भाइयो ! सुनो सुनो ।

श्रोतागण—सुनो, एण्टनी बोलता है ।

एण्टनी—मित्रो तुम नहीं जानते कि तुम क्या कर रहे हो । सीज़र तुमको क्यों प्यारा था—यह बात भी तो जान लो । तुम वसीअत को भूल गये ।

सब लोग—ठीक ठीक, वसीअत सुनाओ ।

एण्टनी—सीज़र की वसीयत यह है—देखो उसकी मुहर लगी हुई है । वह हर एक रोमन को अपनी सम्पत्ति में से ७५ रुपये देता है ।

दूसरा श्रो०—महात्मा सीज़र ! हम तेरी मौत का बदला लेंगे ।

एण्टनी—सुनो, वह अपने सब बाग़ और फुलवाड़ियाँ जो टाइबर नदी के उस पार हैं तुम्हारे लिए छोड़ गया है । वह हमेशा के लिए यह चीज़ें तुम्हें और तुम्हारी सन्तान को

दे गया है कि तुम हवा खाओ या जी बहलाया करो। सीज़र ऐसा था। हाय! अब ऐसा महापुरुष उत्पन्न न होगा?

पहला श्रोता—कभी नहीं, कभी नहीं। चलो चलो, सीज़र के शव को ले चलो। पवित्र भूमि में इसका दाह करें और चिता की लकड़ियों से घातकों के घर जला दें।

दूसरा श्रो०—जाओ, अग्नि लाओ।

तीसरा श्रो०—तिपाइयाँ तोड़ डालो।

चौथा श्रो०—खिड़कियाँ, किवाड़े, बेंचें जो मिलें तोड़ डालो और नगर में आग लगा दो।

यह कह कर नगरवासी एरटनी को अकेला छोड़ कर इधर उधर घातकों की तलाश में चल दिये। सारे नगर में बलवा हो गया। ब्रूटस आदि इस ख़बर को पाकर भाग गए। थोड़ी दूर जा कर इस भीड़ को महाकवि सिना मिल गया। यह सिना वह सिना नहीं था जिसने सीज़र को मारा। यह दूसरा सिना अर्थात् कविवर सिना था जिसको सीज़र की मृत्यु से कुछ भी सम्बन्ध नहीं था परन्तु उस समय रोम में अन्धाधुन्धी हो रही थी।

भीड़ में से एक आदमी ने पूछा:—"तुम्हारा क्या नाम है?"

दूसरा आदमी—तुम कहाँ जाते हो?

तीस० आद०—तुम कहाँ रहते हो?

चौथा आद०—क्वाँरे हो या ब्याहे?

दूसरा आद०—हर एक के प्रश्न का उत्तर दो।

तीस० आद०—जल्दी से।

चौथा आद०—और ठीक ठीक।

सिना—इन सब प्रश्नों का यही जवाब है कि मैं क्वाँरा हूँ।

दूसरा आदमी—तो क्या वे लोग मूर्ख हैं जो विवाह करते हैं? तुम कहाँ जाते हो?

सिना॰—सीज़र के मृतक संस्कार में।

पहि॰ आद॰—मित्र हो या शत्रु!

सिना॰—मित्र!

चौथा आदमी—कहाँ रहते हो!

सिना॰—क़िले के पास।

तीसरा आद॰—तुम्हारा नाम?

सिना॰—मेरा नाम सिना है!

पहिला आद॰—यह घातक है। यह घातक है। इसे चीर डालो।

सिना॰—मैं कवि सिना हूँ। मैं कवि सिना हूँ।

चौथा आद॰—चीर डालो। चीर डालो। इसने बुरी कविता की है।

सिना॰—मैं घातक सिना नहीं हूँ।

चौथा आदमी—अरे नाम तो वही है। चीर डालो। चीर डालो। लकड़ियाँ ले चलो, ब्रूटस, केसियस, कास्का, डीसियस, लिगारियस सबको जला दो!

यह कह कर लोगों ने बिचारे निर्दोष कवि को मार डाला और जलती लड़कियाँ लेकर घातकों को मारने चल दिये।

जब एक बार देश में विद्रोह फैल जाता है तो उसका मिटाना दुस्तर हो जाता है। सीज़र की मृत्यु के पश्चात् कोई राज प्रबन्ध न होसका। जिन लोगों ने प्रजापालित राज्य की स्थिति के लिए जूलियस सीज़र के प्राण लिए थे वह तो नगर का उधम देखते ही बाहर भाग गए-क्योंकि यहाँ उनको प्राणों का भय था। एण्टनी, सीज़र का भांजा औक्टेवियस और

लिपिडस तीनों ने मिल कर राज का भार अपने शिर पर लिया। ब्रूटस और केसियस ने सार्डिस में पहुँच कर बहुत सी सेना इकट्ठी की। यहाँ ओक्टेवियस और एण्टनी दोनों ने उनका सामना करने की तैय्यारियाँ की।

जब ब्रूटस और केसियस सार्डिस में पड़े हुए थे उन दोनों में वैमनस्य हो गया। कारण इस वैमनस्य का यह था कि केसियस ने स्वतंत्र होने के लिए बहुत सा धन एकत्रित कर लिया था। ब्रूटस के पास धन नहीं रहा और उसने अपने बहनोई केसियस से रुपया माँगा। केसियस ने देना अस्वीकार किया। फिर थोड़े दिन पीछे केसियस के नौकर उसकी आज्ञा से सार्डिस में घूस लेने लगे। ब्रूटस ने इनको रोका और केसियस को बुलाया। केसियस ने ब्रूटस से कहा कि ऐसी छोटी छोटी बातों पर ध्यान नहीं करना चाहिए। ब्रूटस ने उत्तर दिया। "केसियस ! तुम मार्च की १५वीं तारीख भूल गए। केवल न्याय के लिए ही मैंने सीज़र जैसे महापुरुष के प्राण लिये ! क्या हमतुम जिन्होंने अत्याचारी सीज़र को केवल उसके अत्याचार के कारण दण्ड दिया स्वयं अत्याचारी हो जाँय और घूस लेकर अपने धर्म और ईमान को बेच दें। बड़े शर्म की बात है। ऐसे रोमन होने से तो कुत्ता होना अच्छा है।"

केसियस—इतना क्रोध मत करो। मैं तुम्हारा क्रोध न सहूँगा। मैं तुमसे बड़ा और योग्य सेनापति हूँ।

ब्रूटस—जाओ। जाओ। तुम नहीं हो!

केसि०—मैं हूँ।

ब्रूटस—मैं कहता हूँ कि नहीं हो। यहाँ से दूर हो।

केसि०—हाय ! हाय ! क्या मैं यह भी सहूँगा !

ब्रूटस—केसियस ! मुझे तुम्हारा कुछ भी भय नहीं है। मैं धर्म की चट्टान पर खड़ा हूँ। मैंने तुमसे कुछ रुपया माँगा और तुमने इनकार कर दिया ! बात यह है कि मैं घूस लेकर अपना आत्मा अपवित्र नहीं कर सकता। मैं बिचारे किसानों को सता कर रुपया लेना पाप समझता हूँ। तुमने रुपया न दिया। क्या केसियस के योग्य यही काम था ? क्या मैंने केसियस को ऐसा उत्तर दिया ?

केसियस—मैंने तो इन्कार नहीं किया।

ब्रूटस—तुमने किया।

केसियस—उस आदमी ने झूठ बोला होगा। ब्रूटस ने मेरा हृदय विदीर्ण कर दिया। मित्र को मित्र के अवगुण छिपाने चाहिए। ब्रूटस इनको प्रकाशित करता है।

ब्रूटस—मैं प्रकाशित नहीं करता-तुम्हीं स्वयं करते हो।

केसियस—तुम मुझसे प्रेम नहीं करते।

ब्रूटस—मैं तुम्हारे अवगुणों से प्रेम नहीं करता।

केसियस—मित्र अवगुणों को नहीं देखते।

ब्रूटस—खुशामदी नहीं देखते। इस पर केसियस नम्र हो गया और आपस में सन्धि हो गई। तत्पश्चात् इन दोनों ने युद्ध की तैय्यारियाँ कीं-क्योंकि एण्टनी और ऑक्टेवियस अपनी सेना लिए हुए इन दोनों से लड़ने को आ रहे थे।

अन्त में यह दोनों सेनादल फ़िलिपी के रणक्षेत्र में इकट्ठे हुए। वही केसियस का जन्म-दिन था। अब तक केसियस को ईश्वरोपासना तथा परलोक का कुछ भी विचार नहीं था। वह केवल 'यावज्जीवेत्सुखंजीवेत्' के आधार पर अपना जीवन व्यतीत करता था। परन्तु आज उसके मन में परि-

चर्सन होगया । आज उसको कई असगुन हुए और उसका माथा ठनकने लगा । उसने ब्रूटस से कहा "भाई । आज शुभचिन्ह दिखाई नहीं देते । अगर दुर्भाग्यवश हार हुई तो कैसी होगी ?"

ब्रूटस—कैटो* ने तो ऐसी अवस्था में आत्महत्या करना लिखा है । और उसने स्वयं भी ऐसा ही किया । परन्तु मुझे तो यह भीरुपन मालूम होता है कि आनेवाले दुःखों से बचने के लिए हम प्राण त्याग कर दें ।

केसियस—तो क्या तुम यह चाहते हो कि पराजित होने पर बन्दी हो जाओ और जीतनेवाले के रथ के पहियों से बाँधे जाओ ?

ब्रूटस—नहीं केसियस । ब्रूटस इतना नीच नहीं है । अगर पराजय हुई तो यही करना उचित है ।

उस दिन घोर युद्ध हुआ और ब्रूटस ने एण्टनी और ओक्टेवियस पर ऐसा आक्रमण किया कि उनकी सेना तितर बितर हो गई । केसियस ने भी दूसरी ओर से छापा मारा । केसियस और एण्टनी का बड़ा भारी युद्ध हुआ परन्तु केसियस की हार हुई और वह रणक्षेत्र से भाग कर चला गया ।

फिर केसियस ने यह देखने के लिए कि ब्रूटस की हार हुई या जीत, इसके पास एक नौकर भेजा । बहुत देर हो गई परन्तु वह आदमी न लौटा । इसपर केसियस ने स्वयं एक ऊँचे टीले पर जाकर देखा लेकिन कुछ दिखाई नहीं दिया । इसके उपरान्त उसने अपने दास पिण्डेरियस को भेजा कि पहाड़ की ऊँची चोटी पर जाकर देखे कि रणक्षेत्र का क्या हाल है । पिण्डेरियस पहाड़ पर चढ़ गया । यह पिण्डेरियस

---

* यह बड़ा विद्वान् फिलासफ़र और नीतिज्ञ था ।

बहुत दिनों से केसियस के दासत्व में था। उसने कई बार यह प्रयत्न किया था कि मैं किसी प्रकार मुक्त हो जाऊँ परन्तु न हो सका। आज उसे अच्छा अवसर मिल गया और उसने महा विश्वासघात करके कुछ का कुछ कह दिया।

केसियस कहने लगा।

"आज के दिन मेरा जन्म हुआ था और आज के दिन ही मेरा जीवन समाप्त होगा। पिएडेरियस! क्या हाल है?"

पिएडेरियस—हाय! हाय! आप क्या पूछते हैं? आपके आदमी को शत्रुओं ने घेर कर क़ैद कर लिया। आपके डेरे-तंबू सब जला दिए। ब्रूटस की सेना छिन्न भिन्न होगई। आज सब बातें उलटी हो गईं।

केसियस—अब क्या? केसियस ने यही घोर आपत्ति देखने को जन्म लिया था। हमारे आदमी हमारे ही सामने मारे जायँ। हाय! हाय! पिएडेरियस नीचे उतर आ और जो मैं कहूँ सो कर अब तक तूने मेरी आज्ञा पालन की है। आज अन्तिम बार मेरी सेवा कर और मैं सदा के लिए तुझे मुक्त कर दूँगा! देख। यह वह तलवार है जिसने सीज़र के प्राण लिए। इसी तलवार से मेरे पेट को चीर दे। देख, जब मैं इस प्रकार मुँह ढक लूँ तब ऐसा करना।"

विश्वासघाती नौकर ने यही किया और जब केसियस शोकातुर हो रहा था तलवार को उसके हृदय में कूँच दिया।

केसियस यह कहता हुआ परलोक सिधार गया। "हाय सीज़र तेरी मृत्यु का बदला उसी तलवार से हो गया जिसने तुझे मारा था।"

वास्तव में युद्ध का यह हाल नहीं था जो पिएडेरियस ने बताया था। जिस प्रकार एएटनी ने केसियस की सेना

परास्त की थी इसी प्रकार ब्रूटस ने ऑक्टेवियस की सेना को हरा दिया और जिस नौकर को केसियस ने रण का हाल देखने के लिए भेजा था वह इस शुभ समाचार के साथ जब केसियस के पास लौटा तो देखा कि केसियस का प्राण पखेरू इस नश्वर शरीर से उड़ गया और उसके देह से रुधिर बह रहा था।

जब ब्रूटस ने इस ख़बर को सुना तो उसे बड़ा ही शोक हुआ। सच पूछो तो उसका सब परिश्रम निष्फल होगया। केसियस के मरने से उसकी बाँह टूटगई। फिर लड़ाई शुरू हुई। अबकी वार ब्रूटस का जी टूट गया था। उसका प्यारा दोस्त केसियस तो मरही गया था परन्तु उसकी प्राण-प्यारी पोर्शिया भी अपने पति की चिन्ता में घुल घुल कर मरगई। लड़ाई बड़ी हुई। परन्तु एण्टेनी और ऑक्टेवियस को जीत हुई और ब्रूटस के आदमी एक एक करके मारे गए। बहुत से दुश्मन के हाथ लगगए।

अब ब्रूटस ने अपने मनमें विचारा "हाय ! मेरा सब काम बिगड़ गया। मैंने रोम को स्वाधीन करने की चेष्टा की। उसका परिणाम यह हुआ कि एण्टनी ऑक्टेवियस और लिपटस तीनों रोम पर राज कर रहे हैं। जो काम मैंने प्रजा के हित के लिए विचारे थे वे सब गड़बड़ होगए। अब मैं कर ही क्या सकता हूँ ? फिर व्यर्थ संसार में रहने से क्या लाभ ? अगर जीवित रहूँगा तो वैरी मेरी तलाश में इधर उधर मेरा पीछा करते रहेंगे। इस प्रकार भीरु आदमियों की नाईं भागते फिरने से तो मरजाना ही अच्छा है। ऐसा घृणित जीवन किस काम का ? अब सीज़र के मारनेवाले सब मरगये। केवल मैं ही बचा हूँ।"

इसके पश्चात् ब्रूटस ने अपने एक चाकर को आज्ञा दी कि वह तलवार से उसका जीवन समाप्त करदे, परन्तु उसने कहा—"स्वामिन्! मुझसे यह कार्य्य नहीं होने का।"

फिर एक दूसरे से कहा, उसने भी यही उत्तर दिया—"हाय! प्रभू, मैं ऐसा नहीं कर सकता।"

इस प्रकार कई नौकरों से ब्रूटस कहता था कि "मेरा जीवन दुःखमय है। तुम मुझको इससे मुक्त करदो।" परन्तु कोई उसकी बात न मानता था।

इतने में उसने देखा कि शत्रु की सेना पीछा करती करती उसके निकट आगई। अब दोही बातें हो सकती थीं। या तो ब्रूटस आत्मघात करे या शत्रु के हाथ क़ैद होजाय। पहले तो ब्रूटस ने सब साथियों को भगा दिया फिर स्ट्रैटो नामी एक साथी से तलवार सीधी कराके उसके ऊपर गिर पड़ा और यह कहता हुआ मर गया।

"सीज़र अब शान्त हो। मैंने तुझे इतनी इच्छा से नहीं मारा था जितनी से आज मैं मरता हूँ" थोड़ी देर पीछे एण्टनी और औक्टेवियस दोनों वहाँ आ पहुँचे और एण्टनी ने ब्रूटस की लाश को देखकर कहा—

"ब्रूटस सब रोमन लोगों में श्रेष्ठ पुरुष था। सीज़र के अन्यान्य घातक स्वार्थी और दम्भी थे। परन्तु ब्रूटस ने सीज़र को रोम के हित का विचार करके मारा था। उसका जीवन पवित्र था और उसका स्वभाव कोमल था। वह ऐसा था जिसे संसार कह सके कि "यह वस्तुतः मनुष्य था।"

इसके पश्चात् सब लोग ब्रूटस का मृतक संस्कार करके ख़ुशी ख़ुशी रोम को लौट गये।

तूफ़ान ।

(THE TEMPEST)

किसी समुद्र के बीच एक टापू में केवल दो मनुष्य रहते थे। एक बुड्ढा आदमी, जिसका नाम प्रौस्पैरो था, दूसरा उसकी रूपवती और शीलवती कन्या मिराण्डा। इस टापू में आते समय यह मिराण्डा इतनी छोटी थी कि इस विचारी ने अपने बाप के सिवाय किसी अन्य मनुष्य का मुँह तक न देखा था।

यह पिता-पुत्री एक चट्टान की गुफा में रहते थे जिसके उन्होंने कई भाग कर लिये थे। एक का नाम अध्ययनशाला था जहाँ प्रौस्पैरो की इन्द्रजाल सम्बन्धी पुस्तकें रक्खी रहती थीं। कहा जाता है कि प्राचीन समय में सब बड़े बड़े विद्वान् इन्द्रजाल का अध्ययन करते थे और प्रौस्पैरो को इस विद्या का बहुत ही शौक़ था।

इस टापू में आ कर प्रौस्पैरो को इस विद्या से विशेष लाभ हुआ। क्योंकि जब वह यहाँ आया तब उसने देखा कि बहुत से अच्छे आत्मा* वृक्षों की शाखाओं में क़ैद हुए चिल्ला रहे हैं। इन आत्माओं को एक जादूगरनी साईकोरैक्स क़ैद कर के मर गई थी। क्योंकि यह आत्मा उसकी दुष्ट आज्ञाओं का पालन नहीं करते थे। प्रौस्पैरो ने आते ही अपनी विद्या

---

* यहाँ 'आत्मा' उस जाति विशेष के लिए आया है जो स्थूल शरीर धारण नहीं करती और जिसको कोई आँख से नहीं देख सकता। यह केवल एक कल्पित जाति है।

के प्रताप से इन आत्माओं को मुक्त किया और वे सब इस अनुग्रह के बदले हमेशा के लिए प्रौस्पैरो के अधीन हो गये। इनमें सबसे बड़ा आत्मा एरियल था।

छोटा भद्र आत्मा एरियल स्वभाव का बड़ा कोमल था और किसीको कुछ कष्ट नहीं देता था। परन्तु एक मनुष्य से उसे बड़ी शत्रुता थी। यह मनुष्य एरियल की महाशत्रु साईकोरैक्स का पुत्र था जिसकी शकल बड़ी ही भयानक थी और जो बिल्कुल बन्दर सा मालूम होता था।

प्रौस्पैरो ने साईकोरैक्स के इस लड़के को, जिसका नाम कैलीबन था, जङ्गल में पाया था। वहाँ से वह उसको अपनी गुफा में ले आया और पढ़ाना आरम्भ किया। परन्तु कैलीबन ऐसा बुरा और मलिन-बुद्धि था कि उसे कोई अच्छा काम न आता था। इसलिए प्रौस्पैरो उससे नीच काम लिया करता था।

हम कह चुके हैं कि कैलीबन से एरियल को वैर था। क्योंकि उसकी माँ ने इसे वृक्षों में क़ैद कर दिया था। कैलीबन प्रौस्पैरो के नीच काम किया करता था अर्थात् लकड़ी लाना, पानी भरना इत्यादि। पर इन कामों को भी वह ख़ुशी से न करता था इसलिए एरियल उसको भिन्न २ प्रकार से डराता और कष्ट देता था। जब कभी कैलीबन अपने काम में सुस्ती करता तब एरियल बिना किसीको दिखाई दिये पीछे से आता और चुटके से पीठ में नोच लेता। कभी बन्दर का रूप धारण कर के उसके सामने आता और उसको चिढ़ाता, कभी साही का रूप रख के उसके सामने पड़ जाता था। कैलीबन साही के काँटों से डर कर चिल्लाता था।

ऐसे महान् और बलिष्ठ आत्माओं पर प्रभुत्व पाकर प्रौस्पैरो की शक्ति बहुत ही बढ़ गई। वह अपनी आज्ञा से

आँधी-मेह को रोक सकता और समुद्र की लहरों को चला सकता था।

एक समय इन आत्माओं ने प्रौस्पैरो की आज्ञा से समुद्र में एक तूफ़ान उठाया। आँधी बड़े ज़ोर से चलने लगी और बादल गरजने लगा। समुद्र की लहरें कोसों ऊँची उठने लगीं। उस समय प्रौस्पैरो ने एक आदमियों से भरा हुआ जहाज़ अपनी लड़की को दिखाया और कहा कि इसमें तुझ जैसे मनुष्य भरे हैं।

मिराण्डा ने जहाज़ डगमगाता देखकर अपने पिता से कहा, "प्यारे पिता जी! अगर आपने अपनी विद्या के बल से तूफ़ान उठाया है तो इन मनुष्यों पर दया कीजिए। देखो जहाज़ डूब रहा है, बिचारे आदमी मर रहे हैं। अगर मुझ में शक्ति होती तो इस समुद्र को ज़मीन के नीचे दबा देती और इन जानों को बचा लेती।"

प्रौस्पैरो—"प्यारी बेटी, शोक मत करो। किसीको हानि नहीं पहुँची। मैंने ऐसा प्रबन्ध किया है कि जहाज़ के एक आदमी को भी कष्ट न होगा। मैंने जो कुछ किया है तुम्हारे ही लिए किया है। तुम नहीं जानती कि तुम कौन हो, कहाँ से आई हो और मैं कौन हूँ। तुम केवल इतना जानती हो कि मैं तुम्हारा बाप हूँ और इस गुफा में रहता हूँ। क्या तुमको याद है कि तुम यहाँ कब आई थी? मैं समझता हूँ कि तुम नहीं जानती। क्योंकि जिस समय तुम यहाँ आई तुम्हारी अवस्था तीन वर्ष की भी नहीं थी।"

मिराण्डा—"हाँ, मुझे याद है।"

प्रौस्पैरो—"क्या याद है? मकान की याद है अथवा आदमी की? प्यारी बेटी, बताओ तुमको क्या याद है?"

मिराण्डा—यह सब स्वप्नवत् प्रतीत होता है। क्या पहले मेरे पास तीन चार स्त्रियाँ नहीं रहती थीं ?

प्रौस्पै०—थीं तो। पर तुम्हें अब तक यह कैसे याद बनी है ? क्या तुमको याद है कि यहाँ किस प्रकार आई ?"

मिराण्डा—नहीं ! मुझे इससे अधिक कुछ भी याद नहीं है।

प्रौस्पै०—"बेटी मिराण्डा, १२ वर्ष हुए मैं मिलान देश का राजा था और तुम मेरी इकलौती पुत्री थी। मेरा एक छोटा भाई अण्टोनियो था जिस पर मुझको बड़ा विश्वास था। जो कि मुझको पुस्तकावलोकन और पठनपाठन का बड़ा शौक था इसलिए राजकाज सब तुम्हारे चचा और अपने कपटी (क्योंकि उसने कपट किया) भाई अण्टोनियो के सिर पर छोड़ दिया। मैंने सब सांसारिक झगड़े छोड़ पुस्तकें देखने और मानसिक अवस्था की उन्नति करने में अपना समय व्यतीत किया। मेरे भाई अण्टोनियो को राजकाज करते करते राज्य लेने की इच्छा हो गई और उसने चाहा कि मुझे किसी प्रकार राजगद्दी से उतार कर स्वयं राजा हो जाय। ऐसा करने के लिए उसने मेरे वैरी नैपिल्स देश के राजा से सहायता चाही।"

मिराण्डा—"उन्होंने हमें उस समय मार क्यों न डाला ?"

प्रौस्पै०—"प्रजा मुझसे इतना प्रेम रखती थी कि वे मुझको मार न सके। अण्टोनियो पहले तो हमको एक जहाज़ पर बिठा कर समुद्र में ले गया। जब थोड़ी दूर निकल गये तब बलात्कार से मुझे और तुझे दोनों को एक ऐसी किश्ती में बिठा कर समुद्र में छोड़ गये जिसमें न तो रस्सियाँ थीं न पतवार ! ऐसा करने से उनका तात्पर्य यह

था कि हमारा नाश हो जाय। परन्तु मेरा एक मित्र गांज़ालो था जिसने छिपा कर किश्ती में खाना-पानी और कुछ इन्द्रजाल की पुस्तकें रखदीं क्योंकि मैं इनको अपने जीवन से भी अधिक प्यार करता था।"

मिरा०—"पिताजी, मैंने उस समय आपको बड़ा कष्ट दिया होगा।"

प्रौस्पै०—"नहीं नहीं! तुम्हारे द्वारा तो मेरी जान ही बची। तुम न होती तो मैं मर जाता। तुम उस समय एक नन्हीं सी लड़की थी। तुम्हारे मुसकराते मुँह को देख देख कर ही मुझे हर्ष होता था। ऐसे दुःख की अवस्था में इस हर्ष ने ही मुझे जीवित रक्खा। हमारा खाना इस टापू में आकर चुक गया। उस समय से मैं तुमको पढ़ा रहा हूँ और मुझे .खुशी है कि तुमने बहुत कुछ शिक्षा पाई है।"

मिरा०—"ईश्वर आपका भला करे। पर पिता जी, यह तो बताओ तुमने यह तूफ़ान क्यों उठाया है?"

प्रौस्पै०—"अच्छा सुनो? मेरा दुष्ट भाई और मेरा शत्रु नेपिल्स का राजा इस तूफ़ान के द्वारा मेरे इस टापू के किनारे आ लगे हैं"।

इतने में एरियल आगया और प्रौस्पैरो को तूफ़ान का कुछ हाल सुनाने लगा। प्रौस्पैरो ने यह देखकर कि यदि मेरी लड़की मुझे हवा से बातें करते देखेगी तो डर जायगी अपनी इन्द्रजाल की लकड़ी मिराण्डा के सिर पर घुमा दी और मिराण्डा जादू के ज़ोर से झट सोगई।

अब प्रौस्पैरो ने कहा—"प्यारे एरियल! क्या तुमने अपना काम किया?"

एरियल—"जी हाँ। मैंने आपकी आज्ञा का पालन किया है। मैं राजा के जहाज़ पर चढ़ गया और उसको कई स्थानों में जला दिया। लोग इधर उधर घबराते फिरते थे।"

प्रौस्पै०—"भला कोई ऐसा भी था जो इस विपत्ति के समय में घबरा न गया हो ?"

एरियल—"नहीं, कोई नहीं! जब मैं जहाज़ पर चढ़ा हुआ उसको जला रहा था और मस्तूलों से लपटें निकल रही थीं तब सब लोग सिवाय मल्लाहों के उठती हुई लहरों में कूद पड़े। राजा का पुत्र फ़र्डीनैण्ड सबसे पहले यह कह कर समुद्र में कूद पड़ा "हाय! नरक ख़ाली हो गया और वहाँ के सब दुरात्मा यहाँ आ गये।"

प्रौस्पै०—"क्या तट के पास ?"

एरि०—"जी हाँ! तट के निकट!"

प्रौस्पै०—"एरियल! क्या वे सब अच्छी तरह हैं ?"

एरियल—"उनका बाल तक नहीं बिगड़ा। उनके कपड़े तक नहीं बिगड़े किन्तु समुद्र के पानी में भीग कर और चमकीले हो गये हैं। आपकी आज्ञा के अनुसार मैंने उनको थोड़े थोड़े समूहों में टापू भर में फैला दिया है! राजकुमार तट पर बैठा हुआ आँधी और जाड़े से पीड़ित हो कर रो रहा है।"

प्रौस्पै०—"राजा के जहाज़ और मल्लाहों का क्या हुआ ?"

एरियल—"राजा का सम्पूर्ण जहाज़ बन्दर में खड़ा है। मल्लाह जादू के ज़ोर से सो रहे हैं। बाक़ी लोग जिन्होंने राजा को समुद्र में डूबते देखा था शोक के मारे नेपिल्स को लौटे जा रहे हैं।"

प्रौस्पै०—"एरियल, तूने ठीक ठीक काम किया। परन्तु अभी और काम है। क्या बजा होगा ?"

एरियल—दोपहर बीत चुका ?

प्रौस्पै०—हाँ दो बजे होंगे। अच्छा अबसे छः बजे तक बहुत काम करना है।

एरियल—क्या अभी और काम है ? स्वामिन्, मैं आपको याद दिलाता हूँ कि आपने एक दिन मुझसे कुछ प्रतिज्ञा की थी।

प्रौस्पैरो—अरे ! क्या चाहता है ?

एरियल—स्वतन्त्रता।

प्रौस्पै०—समय से पहले ?

एरियल—नाथ ! मैंने आपकी मन से सेवा की है। कभी झूँठ नहीं बोला है। कभी कोई ग़लती नहीं की है। बिना किसी संकोच के आपकी सेवा की है।

प्रौस्पै०—अरे तुझे याद नहीं कि मैंने तुझे किस कष्ट से मुक्त किया ?

एरि०—याद है।

प्रौस्पै०—नहीं, तू भूल गया। तू समझता है कि थोड़ी देर समुद्र पर चलना, आँधी का उठाना या कुछ और मेरा काम करना बहुत बड़ी सेवा है।

एरिय०—नहीं, मैं नहीं समझता।

प्रौस्पै०—झूठा ! क्या तू साईकोरैक्स को भूल गया ? बता तो वह कहाँ उत्पन्न हुई थी ?

एरिय०—अल्जियर्स में।

प्रौस्पैरो—हाँ मैं अब हर महीने एक बार तुझे बताया करूँगा कि उस दुष्ट जादूगरनी ने तुझे कितना कष्ट दिया था। साईकोरक्स की बुराइयों के कारण मल्लाह लोग उसे पकड़ कर

यहाँ इस टापू पर छोड़ गये। तू जो अब मेरा नौकर है पहले उसका गुलाम था। तुझसे उसके बुरे बुरे काम नहीं होते थे इसलिए उसने तुझे युलून के वृक्ष में क़ैद कर दिया। वहाँ तू १२ वर्ष पड़ा रहा। वह मर गई और तू वहीं चिल्लाता रहा। यह मैं ही था जिसने तुझे ऐसी क़ैद से छुड़ाया।"

एरियल०—आपकी बड़ी कृपा है।

प्रौस्पै०—देख, अगर तू फिर चैं मैं करेगा तो मैं एक वृक्ष को चीर कर तुझे उसके बीच में क़ैद कर दूँगा।

एरिय०—क्षमा कीजिए। क्षमा कीजिए। अब मैं आपकी पूरी सेवा करूँगा।

प्रौस्पै०—हाँ, कर और मैं दो दिन पीछे तुझे छोड़ दूँगा।

अब प्रौस्पैरो ने एरियल को कई काम करने की आज्ञा दी और वह वहाँ से चल दिया। पहले वह फ़र्डीनण्ड के पास पहुँचा और उसे शोकातुर देखकर कहने लगा—

"राजकुमार, अब तू यहाँ से चलेगा? मैं तुझे अपनी कुमारी मिराण्डा के पास ले चलूँगा। वह तेरे स्वरूप को देखकर प्रसन्न होगी। तेरा बाप समुद्र की लहरों में डूब गया। उसकी हड्डियों के मूंगे बनगये। उसकी आँखें मोतियों के रूपमें परिवर्तित होगईं। अर्थात् सब अङ्गों का सामुद्रिक रूप होगया है और कोई चीज़ नष्ट नहीं हुई।"

अपने बाप के मरने की ख़बर सुनकर राजकुमार उठा और आवाज़ के पीछे पीछे हो लिया।

मिराण्डा राजकुमार की ओर देखने लगी। प्रौस्पैरो ने उससे पूछा, "मिराण्डा, तू क्या देख रही है?"

मिरा०—"पिता जी, यह तो कोई आत्मा है। देखो यह कैसा लगता है। आहा! यह तो बड़ा ख़ूबसूरत है। क्या यह सचमुच आत्मा है?"

प्रौस्पै०—"नहीं नहीं। लड़की, यह तो खाना पीता और सोता भी है। यह कुमार, जिसको तुम यहाँ देखती हो, जहाज़ में था। अब यह शोक के मारे मुरझा गया है। नहीं तो यह बहुत ही रूपवान् था। इसके साथी बिछुड़ गये हैं और यह इनको ढूँढ़ता फिरता है।

मिराण्डा पहले यह समझती थी कि सब आदमियों के मेरे बाप के समान सफ़ेद डाढ़ियाँ होती होंगी इसलिए जब इसने रूपवान् राजकुमार को देखा तब बड़ी ख़ुश हुई।

फ़र्डीनण्ड ने हवा में विचित्र आवाज़ों को सुन और इस लड़की को देखकर यह समझा कि मैं किसी जादू के टापू में आगया हूँ और यह लड़की इस टापू की देवी है। वह कहने लगा, "हे देवि, यह एक विचित्र स्थान है। मेरी प्रार्थना स्वीकार करो और यह बताओ कि क्या तुम कोई देवी हो या कुमारी!"

मिरा०—नहीं नहीं, कोई आश्चर्य नहीं, मैं एक कुमारी हूँ।

फ़र्डी०—ओहो! यह तो मेरी भाषा बोलती है!

प्रौस्पैरो ने देखा कि वे दोनों एक दूसरे को चाहने लगे। परन्तु उनके प्रेम की दृढ़ता देखने के लिए उसने कहा, अरे! तू कोई दूत है जो मुझसे इस टापू के लेने के लिए आया है?"

मिराण्डा—पिता जी, आप इसपर क्रोध क्यों करते हैं। यह बड़ा रूपवान् है। मैंने आपके सिवाय कभी कोई पुरुष नहीं देखा था। यह तीसरा पुरुष है जिसे मैं देख रही हूँ। मुझे

यह बहुत अच्छा लगता है। ऐसे सुन्दर शरीर में दुरात्मा नहीं रह सकते।

प्रौस्पै०—(फ़र्डीनण्ड से) चल मेरे पीछे पीछे आ। मैं तेरे हाथ-पाँव बाँध के डाल दूँगा। तुझे खाने को भूँसी और पीने को खारी पानी मिलेगा। (लड़की से) इसकी सिफ़ारिश मत करो। यह एक दुष्ट आदमी है।

फर्डी०—नहीं नहीं, मैं ऐसी चीज़ें न खाऊँगा जब तक मैं यह न समझ लूँ कि मेरा वैरी मुझसे बलवान् है।

फ़र्डीनंड ने यह कह कर तलवार उठा ली। परन्तु प्रौस्पैरो ने अपनी इन्द्रजाल की लकड़ी को हिलाया और फ़र्डीनंड बेबस जैसे का तैसा ही रह गया।

मिरा०—पिता जी, ऐसा कष्ट न दीजिए। यह एक कोमलहृदय मनुष्य है। यह कोई दूत नहीं है। मैं इसका ज़िम्मा लेती हूँ कि यह एक अच्छा आदमी है।

प्रौस्पै०—हैं! बस बस चुप रह नहीं तो मैं तुझे भी दंड दूँगा। ऐसे बुरे आदमी की सिफ़ारिश करती है। तू समझती है कि इससे अच्छा कोई नहीं। अरी बावली, अभी तूने केवल कैलीबन ही देखा है। अभी ऐसे ऐसे अच्छे आदमी पृथ्वी पर मौजूद हैं जिनके सामने यह मनुष्य कैलीबन जैसा प्रतीत होगा।

मिरा०—मेरी इच्छायें परिमित हैं। मैं इससे अच्छा आदमी नहीं चाहती।

प्रौस्पै०—(फ़र्डीनंड से) चल चल, अभी तू बच्चा है। तुझमें बल नहीं है।

फर्डी०—ठीक है। लेकिन अगर मुझे दिन में एक बार भी इस कुमारी के दर्शन मिल जाया करें तो मुझे बाप और

साथियों का शोक या क़ैद का कठिन काम या और कष्ट कुछ भी मालूम न पड़ेंगे। इस समय मेरी सब शक्ति जाती रही है और मैं स्वप्न जैसी अवस्था में खड़ा हूँ।

प्रौस्पैरो—फर्डीनण्ड को एक स्थान पर ले गया और आज्ञा दी कि लकड़ी के बड़े बड़े लट्ठों को उठा कर एक जगह इकट्ठे करो।

जिस समय फ़र्डीनण्ड लट्ठे इकट्ठे करने लगा प्रौस्पैरो अपने कमरे में किताब पढ़ रहा था परन्तु उसका मुख्य प्रयोजन यही था कि चुपके से यह बात देखे कि मिराण्डा और फ़र्डीनण्ड में क्या बात चीत होती है।

राजकुमार स्वभाव से ही कोमल होते हैं। वे लट्ठे नहीं उठा सकते। जब मिराण्डा ने देखा कि राजकुमार थक गया है तब पास आकर कहने लगी, तुम इतना सख़्त काम मत करो। मेरा पिता इस समय अध्ययनशाला में पढ़ रहा है। वह तीन घण्टे तक यहाँ नहीं आवेगा। इस लिए तुम तब तक आराम कर लो।

फर्डी०—नहीं नहीं कुमारी! मुझे अपना काम समाप्त करना है।

मिरा०—अगर तुम बैठ जाओ तो मैं तुम्हारे बदले का थोड़ा सा काम कर डालूँ।

फर्डी०—नहीं नहीं। चाहे मेरे हाड़ टूट जाँय मैं ऐसी कोमल सुन्दरी से ऐसे काम लेकर उसका अनादर न करूँगा।

मिरा०—तुम थक गये हो।

फर्डी०—सुमुखी! जब तक तुम मेरे पास खड़ी हो मैं थका नहीं हूँ। तुम जो आधी रात को भी मेरे पास खड़ी हो

जाओ तो मुझे सवेरा मालूम होगा। कृपा करके बताओ, तुम्हारा नाम क्या है ?

मिरा०—मिराण्डा। पर मैंने अपना नाम बता कर अपने पिता की आज्ञा के विरुद्ध आचरण किया।

फ़र्डी०—"प्यारी मिराण्डा, मैंने बहुत सी स्त्रियाँ देखी हैं और उनकी मधुर बातें मुझे बहुत प्यारी लगी हैं। मुझे कई स्त्रियाँ भिन्न भिन्न गुणों के लिए पसन्द आईं परन्तु जैसी सब गुणआगरी तुम हो मैंने कोई नहीं देखी।

मिरा०—मैंने किसी स्त्री को नहीं देखा। सिवाय दर्पण में अपना ही मुख देखने के और किसी स्त्री का मुख मैं नहीं पहचानती। मैं नहीं जानती कि लोग कैसे होते हैं परन्तु मैं सिवाय तुम्हारे और किसी को अपना साथी बनाना नहीं चाहती।

फर्डी०—मैं नेपिल्स का राजकुमार हूँ। शायद राजा भी हो जाऊँ। मैंने तुम्हें देखते ही यह कहा था कि मैं इस कुमारी का दास हूँ।

मिराण्डा—क्या तुम मुझे प्यार करते हो ?

फर्डी०—हे सूर्य्यदेव! हमारे साक्षी हो। मैं तुमको सब से अधिक प्यार करता हूँ।

मिरा०—मुझे ख़ुश होना चाहिए पर यह मेरी मूर्खता है कि मैं रोती हूँ।

फर्डी०—क्यों रोती हो ?

मिरा०—अपनी अयोग्यता पर। प्यारे, यदि आप मुझसे विवाह करना स्वीकार करें तो मैं आपकी स्त्री बनने को तैय्यार हूँ। अगर आप विवाह न करें तो मैं दासी रह कर आपकी सेवा करूँगी।

फ़र्डी०—नहीं नहीं। तुम मेरी प्राणप्यारी हो।

प्रौस्पैरो—(अपने कमरे में, चुपके से)। ईश्वर इस जोड़े को चिरायु करे!

मिराण्डा—तो आप मेरे प्राण-पति हैं।

फ़र्डीनेण्ड—बड़ी ख़ुशी से। लो मैं तुम्हें अपना हाथ देता हूँ।

मिराण्डा—लो मेरा हाथ आपके हाथ में है। मेरी लज्जा आपके हाथ। प्राणप्यारे जी! अभी मिराण्डा अपना कथन समाप्त न करने पाई थी कि प्रौस्पैरो झट अपने कमरे से निकल कर इन दोनों के पास आ खड़ा हुआ। उसके देखते ही दोनों लज्जित हो गये और सिर नीचा कर लिया। प्रौस्पैरो तो स्वयं ही यह चाहता था कि किसी प्रकार नैपिल्स के राजकुमार से मिराण्डा का सम्बन्ध हो जाय और मिराण्डा नेपिल्स की महारानी हो सके, इसी प्रयोजन से उसने इस तूफ़ान को उठाया था और इसी इच्छा से उसने फ़र्डीनण्ड को यहाँ बुलाया था।

मिराण्डा और फ़र्डीनण्ड के परस्पर प्रेम को देख कर उसका मन प्रफुल्लित हो गया और कहने लगा। 'फ़र्डीनण्ड! अगर मैंने तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया तो मैं अब तुमको इसका बदला दूँगा। लो मेरी कन्या से विवाह करो। जो कुछ कठोरता मैंने तुम्हारे साथ की है वह केवल तुम्हारे प्रेम को जाँचने के लिए की थी। तुम अपने प्रेम पर दृढ़ निकले। अब मैं ईश्वर को साक्षी देकर इस अमूल्य रत्न को तुम्हारी भेंट करता हूँ। ('अमूल्य' शब्द पर फ़र्डीनण्ड को हँसता देखकर) हँसो मत! शायद तुम यह कहते हो कि मैं अपनी पुत्री की प्रशंसा करता हूँ। नहीं

नहीं, मेरे कथन में कुछ भी अत्युक्ति नहीं है। मैं सत्य कहता हूँ कि यह मेरी पुत्री बड़ी प्रशंसनीया है। जब तुम अन्य स्त्रियों को देखोगे तब मेरे कथन की सचाई तुम पर प्रकट होगी।"

जब यहाँ फ़र्डीनण्ड और मिराण्डा प्रेमालाप में मग्न हो रहे थे उस समय एरियल प्रौस्पैरो की आज्ञा पाकर उस जगह जा पहुँचा जहाँ नेपिल्स का राजा और अण्टोनियो अपने साथियों समेत टापू के सुन्सान स्थानों में भटकते फिर रहे थे। इन बिचारों को कुछ पता नहीं था कि हम कहाँ हैं और क्या कर रहे हैं। टापू की झाड़ियों में चलते चलते जब वे थक गये तब एक जगह बैठ गये। भूख के मारे उनका दम निकला जाता था और प्यास से उनका तालू सूख रहा था। प्रौस्पैरो ने टापू भर में ऐसा जादू कर दिया था कि वहाँ कुछ खाना पानी न मिल सकता था। उस समय एरियल ने आकर कुछ खाने दिखलाये। और उन सबके सामने षट्रस पदार्थों की थालियाँ स्वयं आकाश से उतरने लगीं। वे तो भूखे थे ही। भोजन को देख कर प्रसन्न हो गये। यद्यपि उनको यह आश्चर्य होता था कि भोजन की थालियाँ किस प्रकार स्वयं ऊपर से उतर रही हैं। कभी कभी उनको विचित्र रूपवाले जीव भी दिखाई पड़ते थे जिसके कारण उन्हें डर लगता था। परन्तु भूख के सामने और कोई भाव उत्पन्न नहीं हो सकता इसलिए उन्होंने भोजन करने के लिए थालियों की ओर हाथ बढ़ाया। अभी ग्रास उठाने भी न पाये थे कि वह सब खाना जिस प्रकार आया था उसी प्रकार आकाश को उठा चला गया और वे देखते के देखते ही रह गये। अब तो उनको बड़ा कष्ट हुआ और वह बहुत ही व्याकुल हो गये। परन्तु उन्होंने यह कुछ न समझा कि किस कुटिलता क

उनको यह दण्ड दिया जा रहा है। इस बात को जतलाने के लिए एरियल बड़ा भयानक रूप धारण करके उनके सामने आ गया और कहने लगा—

तुम लोग पापी हो। दैव ने तुमको तुम्हारे किये का फल दिया है। तुम मनुष्यों में रहने के योग्य नहीं हो। इसलिए इस जनरहित जङ्गल में तुम डाले गये हो। मैंने तुमको पागल कर दिया है। तुम जैसे आदमियों की यही गति होती है।"

नेपिल्स के राजा ने उसे मारने के लिए तलवार खींच ली। इस पर एरियल कहने लगा—

"अरे मूर्खो! तुम नहीं जानते कि हम भाग्य के चाकर हैं। तुम्हारी तलवारें हमारे ऊपर ऐसा ही असर डाल सकती हैं जैसा हवा या मेंह पर। मेरे साथी मुझसे भी बलिष्ठ हैं। अगर तुम अपनी तलवारों से कुछ हानि भी पहुँचा सकते तो भी अब कुछ नहीं हो सकता क्योंकि तुममें अब तलवार उठाने की शक्ति नहीं रही। याद रक्खो! मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि तुम्हारा क्या दोष है। तुमने मिल कर प्रोस्पैरो को उसके राज्य अर्थात् मिलान देश से निकाल दिया और समुद्र में छोड़ गये। इसीलिए ईश्वर ने तुम्हारे दण्ड देने के लिए इस आँधी मेंह को उठाया है। तुम समझते होगे कि ईश्वर तुम्हारी दुष्टताओं को भूल गया। नहीं नहीं, कर्म का फल अवश्य मिलता है चाहे जल्दी मिले चाहे देर में। नेपिल्स-नरेश, देख! तेरी दुष्टता के कारण ईश्वर ने तुझसे तेरा प्रिय पुत्र छीन लिया और अभी तेरे ऊपर बड़ी से बड़ी विपत्ति आनेवाली है। परन्तु हाँ, एक बात है। अगर तुम आज से ही अपने किये पर लज्जा करो और पापों के लिए प्रायश्चित्त

करो तो सम्भव है कि तुम्हारी जान बच जाय और तुम्हारे पाप छूट जायँ।"

यह बात सुन कर उन सबकी आँखें खुलीं और अपने अपराधों पर पश्चात्ताप करने और ईश्वर से क्षमा माँगने लगे। उनके बिलख बिलख कर रोने पर एरियल को तरस आया और वह प्रौस्पैरो के पास आकर उनका हाल सुनाने लगा। प्रौस्पैरो बोला—

"अच्छा एरियल, अगर तुझको इन पर तरस आता है तो मैं क्यों न तरस खाऊँ; क्योंकि यह सब तो हमारे ही भाई बन्धु हैं। अब तुम जाओ और सब को साथ ले आओ।"

अपने स्वामी की आज्ञा पाकर एरियल गया और उन सब को ले आया। इनमें वह गांजालो भी था जिसने कृपाकर के चुपके से प्रौस्पैरो के साथ भोजन, वस्त्र, पुस्तक आदि सामान रख दिया था।

शोक और भय के मारे उन सबका चित्त इतना विक्षिप्त हो रहा था कि जब वे पास आये तब प्रौस्पैरो को भी न पहचान सके।

गांजालो कहने लगा—"यहाँ सिवा कष्ट के और क्या है? न जाने ईश्वर कब हमको अपने देश में पहुँचावेगा।"

प्रौस्पैरो—देखो, मैं मिलान देश का राजा प्रौस्पैरो हूँ। घबराओ मत! मुझे गले लगाओ। मैं आप सबका स्वागत करता हूँ।

नेपिल्स-नरेश—"मैं नहीं कह सकता कि तुम वही हो या कोई और हो। हम थोड़ी देर से यहाँ पर बड़ी विचित्र विचित्र चीज़ें देख रहे हैं। तुम्हारी नाड़ी तो आदमियों की

सी बोलती है । मुझे शोक है कि मैं ने आप के साथ ऐसा अन्याय किया । मैं आप से क्षमा का प्रार्थी हूँ । आपका राज्य आपको मिलेगा । परन्तु यह तो बताइए, आप यहां किस प्रकार आये ?

प्रौस्पैरो—पहले यहां रूखा सूखा भोजन कीजिए तब अपना सब हाल कहूँगा। (अण्टोनियो से) "भाई, आकर गले लगो।"

अन्टोनियो—मालूम होता है कि कोई भूत बोल रहा है।

प्रौस्पैरो—नहीं नहीं भूत नहीं है । अरे दुष्ट भाई, तू अपने किये पर पछता। तूने मेरे साथ अन्याय किया, परन्तु आज मैं तुझे क्षमा करता हूँ।

नेपिल्स-नरेश—अगर आप वास्तव में प्रौस्पैरो ही हैं तो कृपा करके बतलाइए कि आप यहां पर किस प्रकार आये ? पहर भर हुआ कि हम अचानक तूफ़ान के मारे इस टापू पर आ लगे थे। हाय हाय ! हमारा एक लड़का यहां हमसे छीन लिया गया।

प्रौस्पैरो—मुझे भी इसी प्रकार की हानि पहुँची है। मेरी लड़की मेरे हाथ से जाती रही।

नेपिल्स-नरेश—लड़की ! हाय हाय ! अगर वे आज जीते रहते तो नेपिल्स के राजा और रानी होते।

इतने में प्रौस्पैरो ने अपने कमरे का पर्दा खोला और लोगों ने देखा कि फ़र्डीनण्ड और मिराण्डा बैठे चौसर खेल रहे हैं।

मिराण्डा ने इन सबको देखकर कहा—

"ओहो ! कैसे अच्छे लोग हैं। वह दुनियां कैसी अच्छी होगी जहां ऐसे जीव रहते हैं।"

नेपिल्स का राजा मिराण्डा के सौन्दर्य्य को देख कर चकित हो गया। उसने भी अपने पुत्र के समान यही समझा कि यह कोई देवी है। उसने अपने लड़के से पूछा :—

"बेटा, यह कौन है ? यह तो इस टापू की देवी है जिसने हमें एक दूसरे से अलग कर दिया और जिसने कृपा कर के हम तुमको फिर मिला दिया है।"

फ़र्डीनण्ड ने मुसकरा कर उत्तर दिया :—

"नहीं नहीं, पिता जी ! यह कोई देवी नहीं है। यह तो एक कुमारी है जो ईश्वर की कृपा से अब मेरी स्त्री हो जायगी। पिता जी, मैंने समझा था कि आप समुद्र में डूब गये। अतएव मैं आपकी आज्ञा नहीं ले सका। क्षमा कीजिए। यह उसी प्रौस्पैरो की बेटी है जिसकी प्रशंसा हम आज तक सुनते आये हैं। प्रौस्पैरो ने हमको नया जीवन दिया और इस स्त्री को दे कर उसने मुझसे नया सम्बन्ध किया है।"

नेपिल्स-नरेश—"आहा ! तो मैं इसका ससुर हूँ। मुझे क्षमा माँगनी चाहिए।

प्रौस्पैरो—अब हमको अपनी पुरानी बातें भूल जानी चाहिएँ क्योंकि उन सबका परिणाम अच्छा हुआ।

अण्टोनियो अपने भाई की बातें सुन कर इतना पछताया और लज्जित हुआ कि उसकी आँखों से आँसू निकलने लगे। अब प्रौस्पैरो ने उन सबसे कहा कि आपका जहाज़ बन्दरगाह में खड़ा है। उसका कुछ भी नहीं बिगड़ा। आप यहीं भोजन कीजिए।

अब कैलीबन बुलाया गया। उसने खाना पकाया और सब को खिलाया। प्रौस्पैरो ने लोगों की प्रसन्नता के लिए सायं-

काल को अपना जीवन-वृत्तान्त आद्योपान्त सुनाया जिसको सुन कर सब लोग ख़ुश हुए ।

प्रौस्पैरो ने घर चलते समय एरियल को स्वतन्त्र कर दिया । क्योंकि इसकी हमेशा यही इच्छा रहा करती थी कि पक्षियों की भाँति स्वतन्त्र विचरा करें । एरियल इस बन्धन से मुक्त हो कर बड़ा प्रसन्न हुआ और आनन्दपूर्वक गान करने लगा ।

प्रौस्पैरो ने अपनी इन्द्रजाल की पुस्तकें ज़मीन में गाड़ दीं और निश्चय कर लिया कि अब कभी इनको प्रयोग में न लावेगा ।

अब वह अपने घर को लौट गया और अपना प्राचीन राज्य पाकर सुख से जीवन व्यतीत करने लगा । घर पहुँच कर फ़र्डीनण्ड और मिराण्डा का विवाह बड़े समारोह के साथ हुआ और नेपिल्स-नरेश की मृत्यु पर फ़र्डीनण्ड राजा और मिराण्डा रानी हुई ।

॥ इति ॥